



सत्यमेव जयते

एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम Advance Diploma Course in Hindi

किट-1 : हिंदी भाषा, संरचना
एवं
हिंदी काव्य
(प्रथम प्रश्न पत्र)



पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066

DEPARTMENT OF CORRESPONDENCE COURSES

Central Hindi Directorate

(Ministry of Education, Govt. of India)

West Block-7, Ramakrishnapuram, New Delhi-110066

© केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार

परिवर्धित संस्करण - 2024

एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम

© Central Hindi Directorate

Govt. of India

Revised Edition - 2024

Advance Diploma Course in Hindi

प्रकाशक

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

पश्चिमी खंड-7

रामकृष्णपुरम

नई दिल्ली - 110066

Published by

Department of Correspondence Courses

Central Hindi Directorate

West Block-7

Ramakrishnapuram

New Delhi - 110066

Website: chdpublication.mhrd.gov.in

संपादन मंडल

प्रधान संपादक

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
निदेशक

संपादक

अनिल बी. नायर

उपनिदेशक

अनिता अलघ

सहायक निदेशक

भाषा विशेषज्ञ

प्रो. रामजन्म शर्मा

डॉ. हीरालाल बाछोटिया

डॉ. एच.बालसुब्रह्मण्यम

डॉ. भगवती प्रसाद निदारिया

मुद्रण व्यवस्था

बाबूलाल मीना

उपनिदेशक

नत्थू लाल

सहायक निदेशक

भूमिका

प्रिय छात्र/छात्रा,

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग के एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में हम आपका स्वागत करते हैं। इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य आपको हिंदी भाषा, साहित्य तथा भारतीय संस्कृति के साथ-साथ कार्यालयी हिंदी से परिचित करवाना है। हमें पूर्ण आशा और विश्वास है कि इस पाठ्यक्रम द्वारा आप हिंदी भाषा और साहित्य के बारे में पर्याप्त ज्ञान अर्जित कर सकेंगे और हिंदी में कार्य करने में भी पूर्ण सक्षम हो जाएँगे।

एडवांस हिंदी डिप्लोमा के इस पाठ्यक्रम में कुल 20 पाठ और उनसे संबंधित 20 उत्तर पत्र हैं। पाठों का सम्यक अध्ययन करने के पश्चात आप उससे संबंधित उत्तर पत्र को पूरा करके यथाशीघ्र निदेशालय में मूल्यांकन के लिए भेजें। आपके उत्तर पत्रों के द्वारा ही हम आपके सम्मुख आने वाली कठिनाइयों को समझ सकेंगे और उनको दूर करने के लिए समय-समय पर आपको आवश्यक सहायक सामग्री तथा उचित मार्गदर्शन भी देते रहेंगे।

हिंदी ज्ञानार्जन में आपको सफलता प्राप्त हो, इसी शुभकामना के साथ।

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

निदेशक

आपके लिए...

प्रिय विद्यार्थी

हिंदी भाषा के आधारभूत स्वरूप से परिचित होने के पश्चात् एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में आपको हिंदी साहित्य के साथ साथ भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषताओं से भी परिचित होने का अवसर मिलेगा। इस पाठ्यक्रम को इस तरह से तैयार किया गया है कि आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी भाषा एवं उसके साहित्य के क्रमबद्ध विकास को आप आसानी से समझ पाएंगे। हमारा प्रयास यही है कि सरल एवं रोचक तरीके से हिंदी भाषा के व्याकरण, शब्दों के सही उच्चारण, वाक्य विन्यास एवं अन्य व्याकरणिक बिंदुओं का ज्ञान प्राप्त करने के साथ साथ आप हिंदी साहित्य और हिंदी जगत के प्रसिद्ध साहित्यकारों से भी अवगत हो सकें।

इस पाठ्यक्रम में कुल 20 पाठ और उससे संबंधित 20 उत्तर पत्र हैं जिन्हें 2 भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग हिंदी भाषा, उसकी संरचना तथा हिंदी काव्य पर आधारित है। दूसरे भाग में हिंदी गद्य साहित्य, उसकी विधाओं तथा भारतीय संस्कृति की विशेषताओं के साथ साथ प्रयोजनमूलक हिंदी एवं कार्यालयी हिंदी के बारे में जानकारी प्रदान की गई है। यह सारी पाठ्य सामग्री उत्तर पत्रों के साथ आपको भिजवा दी जाएगी।

एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में कुल दो प्रश्नपत्र हैं। प्रत्येक वर्ष मई महीने में विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर वार्षिक परीक्षा आयोजित की जाती है। हमारा आग्रह यही है कि पाठों का अध्ययन करने के पश्चात् उनके उत्तर पत्रों को भी नियमित रूप से भरकर निदेशालय में भिजवा दें। आपके इन्हीं उत्तर पत्रों के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन भी किया जाएगा और इसके अंक भी वार्षिक परीक्षा के अंकों में जोड़े जाएंगे। अतः उत्तर पत्रों की महत्ता को समझते हुए इन्हें भरकर भेजना जरूरी है। यह भी ध्यान रखिएगा कि उत्तर पत्र 31 मार्च से पहले निदेशालय में प्राप्त हो जाने चाहिए।

आशा है यह पाठ्यक्रम आपके लिए उपयोगी साबित होगा।

आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए...

उपनिदेशक (पत्राचार)

विषय सूची

किट-1 : हिंदी भाषा, संरचना एवं हिंदी काव्य

पाठ-1	हिंदी भाषा : प्रकृति, संरचना तथा संज्ञा पदबंध: भाषा : अर्थ, भाषा : प्रकृति, भाषा का प्रयोजन, हिंदी भाषा; संज्ञा पदबंध, शब्द, पद, पदबंध, संज्ञा के एकवचन और बहुवचन रूप, एकवचन से बहुवचन रूपों का निर्माण, कारक, संज्ञाओं के तिर्यक् रूप, द्विरूक्त शब्द, संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले शब्द, विशेषण : परिभाषा और प्रकार्य, विशेषण : तिर्यक् रूप, विशेषणों के प्रयोग, विशेषणों की संरचना, विशेषण-विशेष्य अन्विति, सर्वनाम, सर्वनामों के तिर्यक् रूप, निजवाचक सर्वनाम 'अपना'। कहानी – प्राणियों की सेवा भी ईश्वर भक्ति है, शब्दार्थ	7-31
पाठ-2	क्रिया पदबंध : क्रिया के प्रकार, क्रिया : रूप रचना, संयुक्त क्रिया, रंजक क्रिया, संयुक्त क्रियाओं का निर्माण, नाम धातु, प्रेरणार्थक क्रिया, 'लगना' क्रिया के विभिन्न रूप, वाच्य, काल, अर्थ / वृत्ति, आज्ञार्थक, संभावनार्थक। कहानी – भगवान बुद्ध और अंगुलिमाल, शब्दावली	32-48
पाठ-3	क्रिया विशेषण, पदबंध तथा अन्विति व्यवस्था : क्रिया विशेषण : परिभाषा तथा विशेषता, क्रिया विशेषण के प्रकार, कालवाचक क्रिया विशेषण, स्थानवाचक क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, परिमाणवाचक क्रिया विशेषण, क्रिया विशेषणों के रूप, अन्विति, कर्ता और क्रिया की अन्विति, कर्म और क्रिया की अन्विति, विशेषण और विशेष्य की अन्विति, सह-संबंध वाचक, समुच्चयबोधक अव्यय, हिंदी की कुछ विशिष्ट संरचनाएँ, 'कर्ता + को' संरचना, 'कर्ता + ने' संरचना। नाटक – परीक्षा, शब्दावली	49-65
पाठ-4	शब्द रचना : शब्द रचना से अभिप्राय, शब्द रचना प्रक्रिया, उपसर्ग द्वारा शब्द निर्माण, प्रत्यय द्वारा शब्द निर्माण, संधि द्वारा शब्द निर्माण, समास द्वारा शब्द निर्माण, शब्द-संपदा, सहायक सामग्री – कहावतें / लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द, अनेकार्थी शब्द, विलोम शब्द	66-90
पाठ-5	लिपि तथा उच्चारण : देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विकास, लिपि की वैज्ञानिकता के मापदंड, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, हिंदी वर्तनी में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ, देवनागरी वर्णों में रूपों की विविधता, हिंदी के शब्दों की उच्चारण संबंधी विशेषताएँ, हिंदी वाक्यों में शब्द क्रम	91-104

पाठ-6	हिंदी साहित्य का परिचय एवं वीरगाथा काल : हिंदी साहित्य का परिचय, हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन एवं नामकरण, वीरगाथा काल, भक्ति काल (निर्गुण भक्ति धारा, सगुण भक्ति धारा, रामभक्ति शाखा, कृष्णभक्ति शाखा), रीति काल, आधुनिक काल (भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा, छायावादोत्तर युग), प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, वीरगाथा काल के प्रमुख कवि (चंदबरदाई, दलपत विजय, नरपति नाल्ह, अमीर खुसरो, विद्यापति)	105-118
पाठ-7	भक्ति काल और रीति काल : भक्ति काल, भक्ति काल की पृष्ठभूमि, राजनीतिक परिस्थितियाँ, सामाजिक परिस्थितियाँ, धार्मिक परिस्थितियाँ, भक्तिकालीन काव्य धाराएँ, ज्ञानमार्गी शाखा (कबीर), प्रेममार्गी शाखा (मलिक मुहम्मद जायसी), रामभक्ति शाखा (गोस्वामी तुलसीदास), कृष्णभक्ति शाखा (सूरदास), रीति काल, राजनीतिक परिस्थितियाँ, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ, रीति काव्यधाराएँ, रीतिबद्ध धारा (केशव दास, पद्माकर, बिहारीलाल), रीतिमुक्त धारा (घनानंद, आलम)	119-135
पाठ-8	आधुनिक काल : भारतेंदु युग और द्विवेदी युगीन काव्यधारा : भारतेंदु युग, प्रमुख कवि (भारतेंदु हरिश्चंद्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास), द्विवेदी युग, प्रमुख कवि (श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी)	136-141
पाठ-9	छायावाद और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा : छायावाद युग, छायावाद के प्रतिनिधि कवि (जयशंकर 'प्रसाद', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा), राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा, राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि (माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सोहनलाल द्विवेदी)	142-154
पाठ-10	छायावादोत्तर युग : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ (अज्ञेय, नागार्जुन, गजानन माधव मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, त्रिलोचन, भवानी प्रसाद मिश्र, केदारनाथ अग्रवाल)	155-168
पाठ-11	काव्य सौंदर्य के तत्व : काव्य सौंदर्य के तत्व, अलंकार (अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा), रस (शृंगार रस, वीर रस, हास्य रस), छंद (दोहा, सोरठा, चौपाई), शब्द शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)	169-180

पाठ-1 : हिंदी भाषा : प्रकृति, संरचना तथा संज्ञा पदबंध

1.0	हिंदी भाषा : प्रकृति और संरचना	8
1.1	भाषा : अर्थ	8
1.2	भाषा : प्रकृति	8
1.3	भाषा का प्रयोजन	8
1.4	हिंदी भाषा	8
2.0	संज्ञा पदबंध	8
2.1	शब्द, पद, पदबंध	8
2.2	संज्ञा के एकवचन और बहुवचन रूप	9
	2.2.1 एकवचन से बहुवचन रूपों का निर्माण	9
2.3	हिंदी में लिंग व्यवस्था	12
2.4	कारक	16
2.5	संज्ञाओं के तिर्यक् रूप	19
2.6	द्विरुक्त शब्द	20
2.7	संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले शब्द	21
2.8	विशेषण : परिभाषा और प्रकार्य	21
	2.8.1 विशेषण : तिर्यक् रूप	22
2.9	विशेषणों के प्रयोग	24
	2.9.1 संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण	24
2.10	विशेषणों की संरचना	25
2.11	विशेषण-विशेष्य अन्विति	25
2.12	सर्वनाम	26
2.13	सर्वनामों के तिर्यक् रूप	27
2.14	निजवाचक सर्वनाम 'अपना'	29
3.0	कहानी : प्राणियों की सेवा भी ईश्वर भक्ति है	30
	शब्दार्थ	31

1.0 हिंदी भाषा : प्रकृति और संरचना

1.1 भाषा : अर्थ

भाषा वह है जिसे हम बोलते हैं। यह उच्चारण अवयवों से उच्चरित ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है। इसके द्वारा उस भाषा-भाषी समुदाय के लोग परस्पर विचारों का आदान-प्रदान एवं सहयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में भाषा यादृच्छिक (arbitrary) मौखिक प्रतीकों (symbols) की व्यवस्था है।

1.2 भाषा : प्रकृति

हम कोई बात बोलने या लिखने से पहले उसके बारे में विचार करते हैं। विचार आंतरिक भाषण (internal speech) है। मन में विचार चलता है जो भाषा द्वारा प्रकट होता है। विचार शब्द का बाना (dress) पहनकर सामने आते हैं। इसलिए विचार और शब्द में गहरा संबंध रहता है। हमें शब्दों का अर्थ समझकर सही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

1.3 भाषा का प्रयोजन

भाषा का प्रयोजन उसका संप्रेषण (communication) है। हम एक-दूसरे से बातचीत करते समय विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इसी को संप्रेषण कहते हैं। संप्रेषण केवल वाचिक शब्दों द्वारा ही नहीं होता, अपितु इशारों और संकेतों से भी हो सकता है। जैसे हाथ का इशारा, चेहरे का हाव-भाव इत्यादि।

1.4 हिंदी भाषा

भारत बहुभाषिक (multilingual) देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। यहाँ हिंदी, पंजाबी, गुजराती, बंगला, असमिया, मराठी आदि अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ आदि भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से हिंदी भाषा भारत के अधिकांश क्षेत्रों में सर्वाधिक जनता द्वारा समझी और बोली जाती है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिंदी का स्थान विश्व की पहली तीन भाषाओं में से एक है। भारत में ग्यारह हिंदी भाषी राज्य हैं।

हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इस लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। हिंदी का साहित्य विशाल और समृद्ध है। हिंदी में पिछले एक हजार वर्षों से साहित्य-रचना हो रही है। मध्यकाल में कबीर, सूर, तुलसीदास, मीराबाई जैसे कवियों ने हिंदी को समृद्ध बनाया। आधुनिक काल के कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं। हिंदी भाषा इस समय विश्व के विभिन्न देशों में लगभग डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

2.0 संज्ञा पदबंध

2.1 शब्द, पद, पदबंध

वाक्य ही भाषा की इकाई (unit) है। भाषा विशेष के व्याकरणिक नियमों के अनुसार शब्दों को अभिक्रमित (sequenced) करने से वाक्य बनते हैं। किसी भाषा के शब्द (word) उस भाषा के कोश (dictionary) में संग्रहीत (compiled) होते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द ही 'पद' कहलाते हैं।

पदबंध में एक से अधिक पदों का होना आवश्यक है, जैसे—‘रामनाथ का पुत्र’ तथा ‘रामनाथ का पुत्र अशोक’ दोनों ही पदबंध हैं। ये दोनों संज्ञा पदबंध हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य को देखें :—

छोटी लड़की हँस रही है।

इसमें—

छोटी लड़की
हँस रही है

संज्ञा पदबंध
क्रिया पदबंध है

2.2 संज्ञा के एकवचन और बहुवचन रूप

‘संज्ञा’ शब्द का अर्थ है ‘नाम’। उस नाम से किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति या भाव का बोध होता है।

संज्ञा शब्दों में लिंग, वचन, कारक (gender, number and case) के कारण विकार (inflection, change) आते हैं। लिंग का अर्थ है ‘चिह्न’ या ‘प्रतीक’ (symbol)। जीवधारियों का लिंग निर्धारण प्राकृतिक आधार पर होता है। हिंदी में निर्जीव वस्तुएँ भी पुल्लिंग या स्त्रीलिंग कोटि में आती हैं। इस दिशा में कुछ सामान्य नियम बने हुए हैं पर अपवाद (exception) भी हैं। हिंदी में वचन भी दो हैं — एकवचन (singular) और बहुवचन (plural)। इसके साथ ही कारक चिह्नों के कारण संज्ञा रूप परिवर्तित होते रहते हैं।

2.2.1 एकवचन से बहुवचन रूपों का निर्माण

व्यावहारिक दृष्टि से वचन का आधार है संज्ञा। (व्यक्ति, वस्तु इत्यादि) का एक या एक से अधिक होना। इस दृष्टिकोण (point of view) से हिंदी में दो वचन हैं — एकवचन और बहुवचन (singular and plural)।

हिंदी में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए लिंग (gender) भेद के अनुसार प्रत्यय (suffix) जोड़े जाते हैं। यथा :

शब्द (लिंग)	एकवचन	बहुवचन
घर (पुल्लिंग)	घर	घर (अकारांत शब्द)
रात (स्त्रीलिंग)	रात	रातें (अकारांत शब्द)
लड़का (पुल्लिंग)	लड़का	लड़के (आकारांत)
लता (स्त्रीलिंग)	लता (creeper)	लताएँ (आकारांत)
कवि (पुल्लिंग)	कवि	कवि (इकारांत)
रीति (स्त्रीलिंग)	रीति	रीतियाँ (इकारांत)
साथी (पुल्लिंग)	साथी	साथी (ईकारांत)
देवी (स्त्रीलिंग)	देवी	देवियाँ (ईकारांत)
साधु (पुल्लिंग)	साधु	साधु (उकारांत)
वस्तु (स्त्रीलिंग)	वस्तु	वस्तुएँ (उकारांत)
डाकू (पुल्लिंग)	डाकू	डाकू (ऊकारांत)
वधू (स्त्रीलिंग)	वधू	वधुएँ (ऊकारांत)

बहुवचन रूप प्रायः जातिवाचक और गणनीय संज्ञाओं (common noun and countable noun) के संदर्भ में बनाए जाते हैं।

पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों के बहुवचन रूपों को देखने पर यह पता चलता है कि—

i) पुल्लिङ्ग आकारांत शब्दों में ही कुछ विकार (change) होते हैं।

आकारांत एकवचन शब्द बहुवचन में एकारांत हो जाता है।

अन्य सभी पुल्लिङ्ग संज्ञाएँ बहुवचन में भी नहीं बदलती हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
मकान	मकान
पति	पति
आदमी	आदमी
गुरु	गुरु
नीबू	नीबू

ii) कुछ पदनाम (designations, posts), कुछ संबंधों (relations) के नाम, कुछ संस्कृत के तत्सम आकारांत शब्द भी बहुवचन में नहीं बदलते।

एकवचन	बहुवचन
राजा (king)	राजा
नेता (leader)	नेता
योद्धा (warrior)	योद्धा
चाचा (uncle)	चाचा
दादा (grand father)	दादा
बाबू (clerk)	बाबू

जैसे—

- सरदार पटेल द्वारा आयोजित सभा में देश के सभी राजा उपस्थित थे।
- अस्पताल के उद्घाटन समारोह में कई नेता आए थे।
- इस कार्यालय के दो बाबू (clerks) छुट्टी पर हैं।

जैसा पहले संकेत दिया गया है कि बहुवचन रूप गणनीय संज्ञाओं के बनते हैं। भाववाचक संज्ञाओं (abstract noun) के भी बहुवचन रूप बनाए जाते हैं।

शब्दांत	एकवचन	बहुवचन
आकारांत	आवश्यकता	आवश्यकताएँ (necessities)
	प्रथा	प्रथाएँ (customs)
इकारांत	रीति	रीतियाँ (manners)
	नीति	नीतियाँ (policies)
ईकारांत	चढ़ाई	चढ़ाइयाँ (i) invasions, (ii) ups

स्त्रीलिंग (feminine) संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूपों में परिवर्तन निम्नलिखित तालिका से देखे जा सकते हैं :-

शब्दांत	एकवचन	बहुवचन
अकारांत	रात	रातें
	जड़	जड़ें
	किताब	किताबें
आकारांत	माला	मालाएँ
	सभा	सभाएँ
	प्रथा	प्रथाएँ
इकारांत	जाति	जातियाँ
	रुचि	रुचियाँ
ईकारांत	चिट्ठी	चिट्ठियाँ
	बुराई	बुराइयाँ
	मिठाई	मिठाइयाँ
ऊकारांत	वधू / बहू	वधुएँ / बहुएँ
याकारांत	चिड़िया, बुढ़िया	चिड़ियाँ, बुढ़ियाँ

ऊपर दिए गए उदाहरणों से हमें पता चलता है कि -

- अकारांत शब्द बहुवचन में एकारांत हो जाते हैं। 'एँ' अनुस्वारयुक्त है-
रात-रातें, बात-बातें
- आकारांत शब्द के बहुवचन रूप अंत में 'एँ' जोड़कर बनाए जाते हैं-
प्रथा-प्रथाएँ, दुआ-दुआएँ
- इकारांत और ईकारांत शब्द के बहुवचन रूप बनाने के लिए अंत में 'याँ' जोड़ा जाता है।
ईकारांत शब्द की अंतिम 'ई' ध्वनि 'इ' में परिवर्तित हो जाती है।
नदी-नदियाँ
- ऊकारांत शब्द के अंत में 'एँ' का आगम होता है और दीर्घ (long) 'ऊ' को ह्रस्व (short) 'उ' में परिवर्तित किया जाता है।
वधू-वधुएँ
- कुछ संज्ञा शब्द जिनके अंत में 'या' होता है वह या 'याँ' में परिवर्तित हो जाता है।
चिड़िया-चिड़ियाँ

बहुवचन बनाने के लिए 'लोग' (person, people) का प्रयोग-

कुछ स्थितियों में जहाँ शब्दों में एकवचन तथा बहुवचन के रूपों में समानता होती है, वहाँ बहुवचन का बोध कराने के लिए 'लोग' शब्द संज्ञा, विशेषण तथा सर्वनाम शब्दों के बाद में लगाया जाता है। यह मानव जाति के लिए ही प्रयुक्त होता है यथा-

- 1) राजा लोग दरबार में बैठकर लोगों की शिकायतें सुना करते थे।

- 4) વિદેશી લોગ તાજમહલ દેખને ગયે છે।

इन वाक्यों में यदि हम ‘…… लोग’ पदबंधों का कारक चिह्नों के साथ प्रयोग करें तो इन बहुवचन चिह्नक ‘लोग’ का रूप अन्य अकारांत संज्ञाओं की तरह (लोगों+कारक चिह्न) होता है।

- 3) विदेशी लोगों के ठहरने का प्रबंध ताज होटल और अशोक होटल में किया गया है।

2.3 हिंदी में लिंग व्यवस्था

हिंदी में केवल स्त्रीलिंग और पुल्लिंग ही है, नपुंसकलिंग नहीं है। हिंदी में निर्जीव वस्तुएँ इन्हीं दो कोटियों में आती हैं।

निर्जीव वस्तुओं के लिंग निर्धारण के सामान्य नियम आगे बताए गए हैं, परंतु सामान्यतः

- बात करते समय बोले गए वाक्यों से किसी शब्द के लिंग की जानकारी होती है। यथा—
नदी काफी बड़ी है।

‘नदी’ का विशेषण शब्द ‘बड़ी’ ईकारांत है। इससे यह पता चलता है कि नदी स्त्रीलिंग है।

यह पहाड़ काफी ऊँचा है।

‘पहाड़’ का विशेषण शब्द ‘ऊँचा’ आकारांत है। अतः पहाड़ पुल्लिङ्ग है। अर्थात् विशेषण से संज्ञा के लिंग की सूचना मिल जाती है।

क्रिया की प्रायः कर्ता से अन्विति (agreement) होती है इसलिए क्रिया से कर्ता के लिंग का अंदाजा लगाया जा सकता है।

मेरी किताब गिर गई / फट गई।

इसमें मेरी किताब गिर गई / फट गई से भी यही ज्ञात होता है कि इनका कर्ता किताब स्त्रीलिंग है।

पुराना मकान बेच दिया गया।

इस वाक्य में भी विशेषण विशेष्य

पराना मकान

पुल्लिंग पुल्लिंग

मकान बेचा गया

कर्ता क्रिया

पुल्लिंग पुल्लिंग



निर्जीव संज्ञा शब्दों के लिंग निर्धारण के सामान्य नियम

पुल्लिंग शब्द

- i) देशों (countries), पर्वतों (mountains), समुद्रों (seas / oceans) के नाम—
भारत, अमेरिका, चीन, हिमालय, आल्प्स, विंध्याचल, हिंद महासागर, काला सागर
इत्यादि।
- ii) ग्रहों (planets) के नाम—
सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र इत्यादि।
अपवाद (exceptions) : पृथ्वी (earth) – स्त्रीलिंग।
- iii) रत्नों (gems / jewels) के नाम—
हीरा (diamond), मोती (pearl), नीलम (sapphire) इत्यादि।
- iv) धातुओं (metals) के नाम—
सोना (gold), पीतल (brass), काँसा (bronze) इत्यादि।
अपवाद : चाँदी (silver) – स्त्रीलिंग।
- v) वृक्षों / पेड़ों (trees) के नाम—
आम, पीपल, कदंब इत्यादि।
अपवाद : नीम, इमली – स्त्रीलिंग
- vi) अनाजों (grains / cereals) के नाम—
गेहूँ (wheat), चावल (rice), चना (gram) इत्यादि।
अपवाद : अरहर, मसूर, मूँग – स्त्रीलिंग।
- vii) समय के संदर्भ में—
वर्ष, माह, दिन, सप्ताह, घंटा।
अपवाद : सांझ / संध्या (evening), रात – स्त्रीलिंग
- viii) द्रव पदार्थों (liquids) के नाम—
पानी, घी, तेल, दूध, दही (curd), मक्खन (butter)
अपवाद : छाछ (butter milk) – स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग शब्द

- i) नदियों और झीलों के नाम –
गंगा, यमुना, नर्मदा, सांभर झील
अपवाद : ब्रह्मपुत्र , सिंधु-पुल्लिंग।
- ii) नक्षत्रों के नाम–
अश्विनी, रोहिणी
- iii) तिथियों के नाम–
प्रतिपदा, द्वितीया, तीज
- iv) किराने (groceries) की वस्तुओं के नाम–
लौंग, इलायची, मिर्च, दालचीनी, सुपारी इत्यादि।
अपवाद : कपूर (camphor) – पुल्लिंग
- v) कुछ खाद्य पदार्थों के नाम–
पूरी, कचौरी, खीर, दाल, रोटी, बर्फी इत्यादि।
अपवाद : भात, रायता, लड्डू, पेड़ा – पुल्लिंग।
- vi) संस्कृत के तत्सम आकारांत और उकारांत शब्द–
दया, क्षमा, कृपा, माया, लज्जा, सुंदरता, नम्रता, मृत्यु, वस्तु, आयु।
- vii) हिंदी के अधिकांश ईकारांत / आई में अंत होने वाले शब्द–
धरती / पृथ्वी (earth), मिट्टी, चिट्ठी, बुराई, भलाई, गहराई।
अपवाद : पानी, मोती, घी, दही।
- viii) भाववाचक संज्ञाएँ जिनके अंत में ट, वट, हट हैं–
आहट, घबराहट, बनावट, सजावट

उर्दू फारसी से आगत शब्दों का लिंग–

पुल्लिंग शब्द

- i) जिस शब्द के अंत में 'आब' हो–
किताब, जवाब, नकाब
टिप्पणी – हिंदी में 'पुस्तक' स्त्रीलिंग शब्द है अतएव किताब स्त्रीलिंग की तरह प्रयुक्त होता है।
किताब (उर्दू) – पुस्तक (हिंदी) दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं।
- ii) उर्दू शब्द जिनके अंत में आर, आल, आन हो–

बाजार, इश्तहार (notice), सवाल, हाल, एहसान, सामान, इम्तहान।
अपवाद : दुकान (shop), सरकार (government), तकरार (quarrel)।

स्त्रीलिंग शब्द

- i) ईकारांत शब्द—
गरीबी, ईमानदारी, होशियारी, चालाकी, अमीरी, नवाबी।
- ii) ऐसे शब्द जिनके अंत में 'श' हो—
कोशिश, तलाश, मालिश, नालिश (filing petition or reporting to a court)
- iii) अधिकांश 'आ' में अंत होने वाले शब्द—
दवा, हवा, सजा
अपवाद : दगा (deceitful act), मजा (enjoyment)

अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों का लिंग—

- (क) आकारांत शब्दों को पुल्लिंग की तरह प्रयोग किया जाता है।
- (ख) ईकारांत शब्दों को स्त्रीलिंग की तरह प्रयोग किया जाता है।
आकारांत (पुल्लिंग)—कैमरा, ड्रामा, सिनेमा
अकारांत (पुल्लिंग)—आर्डर, कालेज, कैलेंडर, हॉल
स्त्रीलिंग—कमेटी, लायब्रेरी, केतली, डायरी, कंपनी, एसेंबली।
- (ग) कुछ अंग्रेजी / विदेशी शब्द उनके हिंदी पर्याय के लिंग का अनुसरण करते हैं यथा—
नंबर — अंक (पुल्लिंग)
बूट — जूता (पुल्लिंग)
कमेटी — समिति (स्त्रीलिंग)
मीटिंग — सभा (स्त्रीलिंग)
ट्रेन — गाड़ी (स्त्रीलिंग)
फोटो — तस्वीर (स्त्रीलिंग)
नोटिस — सूचना (स्त्रीलिंग)

मनुष्येतर जीवधारियों (other than human beings) में कुछेक हमेशा पुल्लिंग में आते हैं।
वे हैं—पक्षी (bird), कौआ (crow), उल्लू (owl), चीता (leopard), कछुआ (tortoise), खटमल (bed bug)।

कुछ जो स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं—चींटी (ant), मछली (fish), तितली (butterfly), मक्खी (house fly)।

कुछ शब्दों में जब पुल्लिंग के बदले स्त्रीलिंग दर्शाना होता है तो शब्द के पहले 'मादा' लगाया जाता है—मादा उल्लू (she owl), मादा चीता (she leopard, leopardess)।

उभयलिंगी शब्द (common gender)

- i) कुछ ऐसे शब्द हैं जो स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे—अफसर (officer), मंत्री (minister), प्रधानमंत्री (prime minister), सचिव (secretary), डॉक्टर (doctor) ।
- ii) कुछ विदेशी शब्द ऐसे हैं जिन्हें कुछ हिंदी क्षेत्रों में पुल्लिंग और कुछ क्षेत्रों में स्त्रीलिंग मानते हैं –

‘किताब’ उर्दू का शब्द है। उर्दू में इसे पुल्लिंग के रूप में प्रयोग करते हैं। चूंकि हिंदी में इसका पर्याय पुस्तक है जो हिंदी में स्त्रीलिंग है अतः इसे स्त्रीलिंग मानते हैं। उसी तरह ‘आत्मा’ संस्कृत में पुल्लिंग है, हिंदी में स्त्रीलिंग मानकर इसका प्रयोग किया जाता है।

अन्य उभयलिंगी शब्द हैं – गड़बड़, चलन।

‘चर्चा’ उर्दू में पुल्लिंग है परंतु हिंदी में स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है।

2.4 कारक (case)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप के द्वारा उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों, विशेषकर क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे ‘कारक’ कहते हैं।

यह संबंध सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो चिह्न या प्रत्यय जोड़े जाते हैं, उन्हें विभक्ति (case marker) कहते हैं।

हिंदी में निम्नलिखित आठ कारक हैं—

कारक	विभक्ति	स्पष्टीकरण + उदाहरण
1. कर्ता (nominative)	0, ने	वाक्य में क्रिया का कर्ता। उद्देश्य कर्ता कारक में होता है। इसकी दो विभक्तियाँ दर्शाई गई हैं—0 और ‘ने’। राजेश्वर (कर्ता) सो रहा है। 0 चिह्न राजेश्वर ने पत्र पढ़ा। ‘ने’
2. कर्म (accusative)	0, को - 0, to	वाक्य में जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का फल पड़ता है वह कर्म कारक में होता है। राजेश पत्र लिख रहा था। राजेश पुराने पत्र को जला रहा था।
3. करण (instrumental)	से - with	जिस साधन से कोई कार्य संपन्न होता है उस साधन को करण कारक में प्रयोग किया जाता है। नौकर चाकू से सब्जी काट रहा है।
4. संप्रदान (dative)	को, के लिए - for	जिस व्यक्ति या वस्तु के लिए कार्य संपादित होता है, वह संप्रदान कारक में प्रयुक्त होता है। सेठ ने भिखारी को खाना दिया। राजेश के लिए खाना लाओ।

कारक	विभक्ति	स्पष्टीकरण + उदाहरण
5. अपादान (ablative)	से - from	यह 'से' विभक्ति करण कारक की विभक्ति से भिन्न है। करण कारक की विभक्ति कार्य का साधन दर्शाती है। अपादान की विभक्ति क्रिया और व्यक्ति और / या किसी वस्तु से अलगाव (अलग होना, दूर जाना) दर्शाती है। नौकर <u>चाकू से</u> फल काटता है। 'चाकू' करण कारक में है। <u>चाकू मेज से</u> गिरा। यहाँ 'मेज' अपादान कारक है।
6. संबंध (possessive / genitive)	का / के / की - of	संज्ञा के जिस रूप से उसका किसी अन्य शब्द से संबंध सूचित हो तो 'का' से पूर्व दर्शाया शब्द संबंध कारक होता है। <u>राधा का</u> पुत्र इसी स्कूल में पढ़ता है। <u>राधा की</u> लड़की इसी स्कूल में पढ़ती है। <u>राधा के</u> बच्चे इसी स्कूल में पढ़ते हैं। 'का' के बाद वाला संज्ञा शब्द पुल्लिंग एकवचन होगा। 'की' के बाद वाला शब्द स्त्रीलिंग एकवचन या बहुवचन हो सकता है। 'के' का प्रयोग तब होता है जब इसके बाद में आने वाला संज्ञा शब्द पुल्लिंग बहुवचन में हो या आदर सूचक शब्द हो, जैसे— <u>राधा के पिता जी</u> बाहर गए हैं।
7. अधिकरण (locative)	में, पर - in, on, resp.	व्यक्ति या वस्तु की अवस्थिति का आधार दर्शाना या सूचित करना अधिकरण का प्रकार्य है। राजेश <u>घर में</u> है। राजेश <u>छत पर</u> था।
8. संबोधन (vocative)	हे, अरे, अजी - O, Oh	किसी को पुकारने / बुलाने के लिए प्रयुक्त शब्द संबोधन कारक का द्योतक है। <u>हे ईश्वर</u> , उन्हें क्षमा कर। <u>अरे लड़कों</u> , बाहर जाकर खेलो। <u>अजी</u> जरा सुनिए।

(1) कर्ता कारक विभक्ति 'ने' का प्रयोग –

कर्ता कारक के साथ 'ने' विभक्ति लगाई जाती है जब—

क्रिया सकर्मक हो तथा उसका प्रयोग भूतकालिक रूप के साथ हो। जैसे—
खाया, देखा, पढ़ा, लिखा।

नरेश ने देखा।	Naresh saw.
नरेश ने देखा है।	Naresh has seen.
नरेश ने देखा था।	Naresh had seen.
नरेश ने देखा होगा।	Naresh may have seen.

जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है तब क्रिया-लिंग, वचन कारक में कर्म के साथ अन्वित (agreement) होती है अर्थात् बदल जाती है।

कर्ता + ने	कर्म		क्रिया
रजनी ने	एक मकान तीन कमरे एक अलमारी चार चूड़ियाँ	(पुल्लिंग, एकवचन) (पुल्लिंग, बहुवचन) (स्त्रीलिंग, एकवचन) (स्त्रीलिंग, बहुवचन)	खरीदा बनवाए खरीदी बनवाई
		अन्विति	

(2) कर्म कारक 'को' का प्रयोग-

कर्म कारक विभक्ति 'को' का प्रयोग प्रायः तब किया जाता है, जब कर्म निश्चित या निर्धारित हो। यथा-

मीना ने	एक मकान खरीदा उस मकान को खरीदा अपने उस मकान को बेच दिया। राहुल को बुलाया।	uncertain certain / specific certain specific
---------	------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------

(3) करण कारक का विभक्ति प्रत्यय 'से' है।

मैं कलम से लिखता हूँ। (उपकरण - tool)

लीला बस से आई। (यात्रा का साधन - means of transport)

वह खिड़की से देख रहा है। (माध्यम - medium)

(4) संप्रदान कारक के प्रत्यय 'को' और 'के लिए' हैं।

माँ बच्चे को दूध देती है। (to the child)

यह शरबत पिता जी के लिए है। (for the father)

(5) अपादान कारक का प्रत्यय भी 'से' है।

पत्ता पेड़ से गिरा। (from the tree)

बच्चा कल से बीमार है। (since yesterday)

लीला शीला से बड़ी है। (than Sheela)

(6) संबंध कारक के प्रत्यय 'का / के / की' हैं।

राम की गाय। (Ram's cow)

सीता का भाई। (Sita's brother)

स्कूल के बच्चे। (school children)

(7) अधिकरण कारक के प्रत्यय 'में / पर' हैं।

रामलाल घर में है। (in the house)

मेज पर किताब है। (on the table)

2.5 संज्ञाओं के तिर्यक् रूप (changed forms of nouns)

कारक युक्त संज्ञा शब्दों के बहुवचन रूपों में जो विकार (change) होता है, वह निम्नलिखित चार्ट में दर्शाया गया है :-

संज्ञा शब्द पुल्लिंग	एकवचन		बहुवचन	
	बिना कारक चिह्न	कारक चिह्न सहित	बिना कारक चिह्न के	कारक चिह्न के साथ
मकान	मकान	मकान में	मकान	मकानों में
दरवाजा	दरवाजा	दरवाजे पर	दरवाजे	दरवाजों पर
मुनि	मुनि	मुनि ने	मुनि	मुनियों ने
भाई	भाई	भाई का	भाई	भाइयों का
साधु	साधु	साधु से	साधु	साधुओं से
डाकू	डाकू	डाकू के लिए	डाकू	डाकूओं के लिए

स्पष्ट है कि एकवचन संज्ञा शब्द में कारक चिह्न केवल आकारांत पुल्लिंग शब्द को प्रभावित करता है। अंतिम 'आ', 'ए' ध्वनि में परिवर्तित हो जाता है।

कारक चिह्न युक्त बहुवचन पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के अंत में 'ओ' ध्वनि आती है, यथा—

अंत में अ / आ वाले शब्द बहुवचन अंत में 'ओ' में परिवर्तित

अंत में इ / ई वाले शब्द बहुवचन रूप अंत में 'यो' का आगम

अंत में उ / ऊ वाले शब्द बहुवचन में अंत में 'ओ' का आगम

ईकारांत और ऊकारांत शब्दों में 'ई' और 'ऊ' क्रमशः ह्रस्व 'इ' और ह्रस्व 'उ' में परिवर्तित हो जाते हैं।

कारक चिह्न युक्त संज्ञा स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन रूप निम्नलिखित चार्ट से देखे जा सकते हैं :-

संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग	एकवचन		बहुवचन	
	बिना कारक चिह्न	कारक चिह्न सहित	बिना कारक चिह्न	कारक चिह्न के साथ
अकारांत	बहिन	बहिन को	बहिनें	बहिनों को
आकारांत	माता	माता ने	माताएँ	माताओं ने
इकारांत	तिथि	तिथि से	तिथियाँ	तिथियों से
ईकारांत	लड़की	लड़की को	लड़कियाँ	लड़कियों को
उकारांत	वस्तु	वस्तु को	वस्तुएँ	वस्तुओं को
ऊकारांत	वधू	वधू को	वधूएँ	वधूओं को

स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के कारक चिह्नयुक्त बहुवचन रूपों के अंत में 'ओ' ध्वनि आती है।

अकारांत	ओकारांत	बहिनों को
आकारांत	ओं का आगम	माताओं से
इकारांत	यों का आगम	रीतियों का
ईकारांत	यों का आगम	नदियों में
उकारांत	ओं का आगम	वस्तुओं को
ऊकारांत	ओं का आगम	वधूओं ने

ईकारांत तथा ऊकारांत शब्दों के अंत में दीर्घ 'ई' तथा दीर्घ 'ऊ' क्रमशः ह्रस्व 'इ' तथा ह्रस्व 'उ' में परिवर्तित हो जाते हैं।

2.6 द्विरुक्त शब्द

प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में द्विरुक्त शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनमें एक वर्ग है जिसमें प्रायः सार्थक समानार्थी शब्द रहते हैं, यथा—

धन-दौलत	रिश्ता-नाता	बाल-बच्चे
शक्ल-सूरत	गाली-गलौज	चाल-ढाल
दान-दक्षिणा	डील-डौल	थका-हारा
बाग-बगीचा	चलना-फिरना	चाल-चलन

एक वर्ग है जिसमें किसी रूप से संबद्ध शब्द आते हैं—

रुपया-पैसा	घर-द्वार	पूजा-पाठ
जप-ध्यान	भजन-कीर्तन	लात-घूँसा
पेड़-पौधे	दवा-दारु	

कुछ ऐसे सामासिक शब्द हैं जो प्रायः विलोम शब्दों / लिंग के योग से बनते हैं।

पाप-पुण्य	दिन-रात	सुबह-शाम	पति-पत्नी	माँ-बाप
भला-बुरा	आगा-पीछा	बड़े-छोटे	अमीर-गरीब	बच्चे-बूढ़े

द्वित्व शब्दों का एक वर्ग है जिसमें उसी शब्द की आवृत्ति होती है।

संज्ञा	घर-घर	पल-पल	मन-मन (मन ही मन)
विशेषण	अच्छे-अच्छे	मीठे-मीठे	छोटे-मोटे
	बड़े-बड़े	कम-कम	ज्यादा-ज्यादा
क्रिया	पढ़ते-पढ़ते	चलते-चलते	
क्रिया विशेषण	धीरे-धीरे	कभी-कभी	साथ-साथ

2.7 संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले शब्द

(क) कभी-कभी विशेषण संज्ञा की तरह प्रयुक्त होते हैं—

- बड़ों का आदर करो।
- मूर्खों से मैं बात नहीं करता।
- चारों को सजा मिलेगी।

(ख) क्रियार्थक संज्ञा 'ना' क्रिया संज्ञा की तरह प्रयुक्त होती है—

- तैरना अच्छा व्यायाम है।

(ग) संज्ञा + वाला, क्रिया + वाला

- दूधवाला कब आएगा ?
- सोनेवाले जाग गए।
- सब्जीवाली को दस रुपए दे दो।

2.8 विशेषण : परिभाषा और प्रकार्य

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। विशेषता के अंतर्गत गुण और दोष, अच्छाई और बुराई आदि समाहित हैं।

(1) सामान्य स्थिति में वाक्य में विशेषण शब्द, विशेष्य से पहले आता है। जैसे—

वह <u>समझदार</u> आदमी है।	(wise man)
यही <u>सीधा</u> रास्ता है।	(straight road)
मुझे <u>नई</u> किताब दो।	(new book)

विशेषण विशेष्य के बाद भी आ सकता है जैसे—

आपका पुत्र समझदार है।

यही रास्ता सीधा है।

रमणीकलाल धनी है।

- (2) संबंधसूचक सर्वनाम (possessive pronouns) मेरा, आपका, तुम्हारा, उनका विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं—

आपका घर कहाँ है ?

तुम्हारा लड़का कहाँ पढ़ता है ?

- (3) वर्तमानकालिक कृदंत (present participle) भूतकालिक कृदंत (past participle) विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं, यथा—

चलती गाड़ी से मत उतरों।

- (4) संज्ञा + वाला संरचना, ने + वाला संरचना विशेषण की तरह प्रयुक्त होती है।

अखबार वाला लड़का अभी तक नहीं आया।

नल ठीक करने वाला आदमी आज छुट्टी पर है।

यह सबसे अधिक		बिकने वाला समाचार-पत्र		
		बिकने वाली घड़ी		है।

- (5) संज्ञा + का संरचना भी विशेषण की तरह प्रयुक्त होती है।

राधा		का बेटा		कालेज में		पढ़ता है।
		की बेटी				पढ़ाती है।

- (6) 'अपना' भी विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है।

अपना काम करो। अपनी घड़ी मुझे दे दो।

आप सब अपने घरों में रहें, बाहर न जाएँ।

2.8.1 विशेषण : तिर्यक् रूप

विशेषण का अपना कोई लिंग या वचन नहीं होता। विशेषण जिस संज्ञा शब्द की विशेषता बताता है उसके लिंग और वचन के अनुसार अपना रूप बदलता है - यही रूप-परिवर्तन उसका तिर्यक् रूप कहा जाता है।

केवल आकारांत विशेषण ही 'आ', 'ए', 'ई' पैटर्न पर बदलते हैं। जैसे—

छोटा बच्चा (पुल्लिंग एकवचन)

छोटे बच्चे (पुल्लिंग बहुवचन)

छोटी लड़की (स्त्रीलिंग एकवचन)

छोटी लड़कियाँ (स्त्रीलिंग बहुवचन)

अन्य विशेषण उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं, चाहे वे एकवचन / बहुवचन / पुल्लिंग संज्ञा की विशेषता बताएँ।

आकारांत विशेषण के पुल्लिंग विशेष्य के बाद यदि कोई कारक विभक्ति आए तो एकवचन और बहुवचन दोनों स्थितियों में आकारांत विशेषण एकारांत हो जाते हैं ।

	पुल्लिंग विशेष्य कारक विभक्ति सहित	
विशेषण	एकवचन	बहुवचन
बड़ा नया पुराना	बड़े लड़के को नए मकान में पुराने कपड़े को	बड़े लड़कों को नए मकानों में पुराने कपड़ों को

आकारांत विशेषण के अतिरिक्त अन्य विशेषण अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं चाहे विशेष्य एकवचन में हो या बहुवचन में, स्त्रीलिंग हो या पुल्लिंग।

एक सुंदर मकान (पुल्लिंग, एकवचन) बनवाओ।

श्रीमती सुधा ने अपने तीनों लड़कों के लिए तीन सुंदर मकान (बहुवचन) बनवाए।

कानून दोषी व्यक्ति को सजा देगा।

कानून दोषी व्यक्तियों (बहुवचन) को सजा देगा।

समझदार स्त्री अपने परिवार का पूरा खयाल रखती है।

समझदार स्त्रियाँ ही अपने परिवार का खयाल रख सकती हैं।

विशेष्य के स्त्रीलिंग होने पर एकवचन और बहुवचन दोनों स्थितियों में केवल आकारांत विशेषण ईकारांत हो जाते हैं जैसे—

	स्त्रीलिंग विशेष्य	
विशेषण	एकवचन	बहुवचन
छोटा अच्छा ऊँचा (tall / high) नया	छोटी माला (स्त्रीलिंग) अच्छी किताब (स्त्रीलिंग) ऊँची मीनार (स्त्रीलिंग) नई कुर्सी (स्त्रीलिंग)	छोटी मालाएँ अच्छी किताबें ऊँची मीनारें नई कुर्सियाँ

पुल्लिंग, बहुवचन विशेष्य के पूर्व आकारांत विशेषण एकारांत हो जाते हैं—

अच्छे लड़के, छोटे पौधे, पुराने दरवाजे, मीठे केले

जानकारी के लिए कुछ विशेषणों की सूची

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अमीर / धनी (rich)	गरीब (poor)	छोटा (small)	बड़ा (big)
नया (new)	पुराना (old)	एक (one)	अनेक (many)
कम (less)	ज्यादा (more)	अच्छा / भला (good)	बुरा (bad)

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
कम (less)	अधिक (more)	प्रथम (first)	आखिरी (last)
सस्ता (cheap)	महँगा (costly)	पहला (first)	अंतिम (last)
सुखी (happy)	दुखी (sad)	प्यार (love)	नफरत / घृणा (hatred)
स्वस्थ (healthy)	अस्वस्थ (unhealthy)	ईमानदार (honest)	बेईमान (dishonest)
ऊँचा (high)	नीचा (low)	समझदार (wise)	नासमझ (unwise)
सुंदर (beautiful)	कुरूप, भद्दा (ugly)	बुद्धिमान (wise)	मूर्ख (fool)
निश्चित (definite)	अनिश्चित (indefinite)	पूरा (complete)	अधूरा (incomplete)
भारी (heavy)	हल्का (light)	सफल (successful)	असफल (unsuccessful)
बढ़िया (superior)	घटिया (inferior)	ताजा (fresh)	बासी (stale)

2.9 विशेषणों के प्रयोग

2.9.1 संज्ञा की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण

कभी-कभी विशेषण शब्द संज्ञा की तरह प्रयोग किए जाते हैं यथा—

बड़ों का आदर करना चाहिए।

गरीबों की सहायता करो।

कुछ विशेषण शब्द जो आकारांत / ईकारांत होते हुए भी किसी स्थिति में अपना रूप नहीं बदलते—

बढ़िया (superior), ताजा (fresh), उम्दा (of a good quality),

बासी (stale, not fresh)

यह मकान बढ़िया है। (मकान - पुल्लिंग एकवचन)

दोनों मकान बढ़िया हैं। (मकान - पुल्लिंग बहुवचन)

यह इमारत बढ़िया है। (इमारत - स्त्रीलिंग एकवचन)

ये सभी इमारतें बढ़िया हैं। (इमारतें - स्त्रीलिंग बहुवचन)

ताजा खाना खाओ। (खाना - पुल्लिंग)

बासी सब्जी मत खरीदो (सब्जी - स्त्रीलिंग)

2.10 विशेषणों की संरचना

(1) विशेषण संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के साथ प्रत्यय लगाकर भी बनाए जाते हैं।

संज्ञा से	गुण	गुणी	(virtuous)
	आलस	आलसी	(lazy)
	किताब	किताबी	(bookish)
	अमेरिका	अमेरिकी	(pertaining to America)
	हिंद	हिंदी	(pertaining to India)
	दया	दयालु	(kind hearted)
सर्वनाम से	आप	अपना	(one's own)
क्रिया से	चलना	चलता (हुआ), चालू	(prevalent, current)
	बीतना	बीता (हुआ) समय	(past, bygone)

(2) कुछ संज्ञाओं और क्रियाओं में 'वाला' जोड़कर विशेषण बनाए जाते हैं—

मिठाई	मिठाईवाला
सब्जी	सब्जीवाला
दौड़ना	दौड़नेवाला
लड़ना	लड़नेवाला

'वाला' लगे शब्द 'संज्ञा' और 'विशेषण' दोनों ही रूपों में प्रयुक्त हो सकते हैं।

2.11 विशेषण-विशेष्य अन्विति (adjective - noun agreement)

एक छोटा लड़का बाग में खेल रहा है। (पुल्लिंग - एकवचन)

एक छोटी लड़की बाग में खेल रही है। (स्त्रीलिंग - एकवचन)

छोटे बच्चे खेल रहे थे। (पुल्लिंग - बहुवचन)

छोटी लड़कियाँ खेल रही थीं। (स्त्रीलिंग - बहुवचन)

अन्विति छोटा → लड़का (masculine singular)

छोटी → लड़की (feminine singular)

छोटी → लड़कियाँ (feminine plural)

छोटे → लड़के (masculine plural)

विशेषण संज्ञा से पहले या संज्ञा के बाद आ सकते हैं।

समझदार लड़का अपनी पढ़ाई कर रहा है।

पढ़ाई करने वाला लड़का समझदार है।

जिस तरह अंग्रेजी में	good	better	best
	beautiful	more beautiful	most beautiful
	wise	wiser	wisest
	less	lesser	least

विशेषणों की तुलना comparative और superlative degree नाम से की जाती है उसी तरह हिंदी में भी तुलना की जाती है। हिंदी में दो की तुलना हेतु - विशेषण से पहले 'अधिक' जोड़ा जाता है। अन्य सभी से तुलना हेतु विशेषण से पूर्व 'सबसे' जोड़ा जाता है।

सुरेश अपने भाई से अधिक बुद्धिमान है। (more intelligent)

सुरेश अपने भाइयों में सबसे बुद्धिमान है। (the most intelligent)

'अधिक' और 'सबसे' यथास्थान सभी गुणवाचक विशेषणों के साथ जोड़े जाते हैं।

संस्कृत में 'तर' और 'तम' लगाने की प्रवृत्ति रही है। संस्कृत के तत्सम विशेषणों में 'तर', 'तम' जोड़े जाते हैं।

Adjective	Comparative	Superlative
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निकट	निकटतर	निकटतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम

2.12 सर्वनाम

पूर्व वाक्य या पूर्व संदर्भ में आए संज्ञा शब्द के बदले आने वाला शब्द 'सर्वनाम' कहलाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :-

- (1) शिवकुमार और पंकज जब रायपुर आए तो वे पहले पुस्तक मेला देखने के लिए गए।
- (2) होटल के मैनेजर ने श्यामलाल से पूछा, "आप यहाँ कितने दिन रहेंगे?"
- (3) श्यामलाल ने मैनेजर से कहा, "मैं रायपुर में तीन दिन रुकूँगा।"
- (4) दीपा आई तो थी पर वह कुछ नहीं बोली।
- (5) पिता जी ने गोपाल से कहा, "देखो, हम दोनों कल सुबह दिल्ली के लिए रवाना होंगे। तुम टिकट ले आओ।"
- (6) सुधीर को बधाई दे दो क्योंकि वह एम.ए. की परीक्षा में सर्वप्रथम आया है।

1		2	3
वाक्य संख्या	1. 2. 3. 4. 5. 6.	'वे' 'आप' 'मैं' 'वह' 'हम' 'तुम' 'वह'	संज्ञा शब्द शिवकुमार और पंकज के स्थान पर आया है। श्यामलाल के बदले आया है। श्यामलाल के बदले प्रयुक्त हुआ है। दीपा के बदले आया है। पिता जी और गोपाल के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। गोपाल के लिए प्रयुक्त हुआ है। सुधीर के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।

कॉलम 2 में दिखाए शब्द सर्वनाम शब्द हैं।

पुरुष (Person)	एकवचन (Singular)	बहुवचन (Plural)
उत्तम पुरुष - Ist Person	मैं - I	हम - We
मध्यम पुरुष - IInd Person	तू, तुम - You (familiar) आप - You (honorific)	आप - You
अन्य पुरुष - IIIrd Person	वह - he, वह - she, वह - it	वे - They

वे सर्वनाम शब्द 'पुरुष' या 'स्त्री' दोनों के लिए समान रूप से प्रयोग में आते हैं।

2.13 सर्वनामों के तिर्यक् रूप

कारक चिह्नों के कारण हुए रूप परिवर्तन (अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका देखिए)

तालिका में मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे पुरुषवाचक सर्वनाम हैं। इनके अतिरिक्त अन्य सर्वनाम इस प्रकार हैं—

(क) वह (that) वे (those)

यह (this) ये (these)

ये चारों निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

यह पेंसिल है। ये पेंसिलें हैं।

वह दुकानदार है। वे मैकेनिक हैं।

(ख) घर के बाहर कोई खड़ा है। someone

आइए कुछ खा लें something

'कोई' और 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

(ग) यह वही घड़ी है जो मुझे इनाम में मिली थी।

जो सोता है वह खोता है।

पुरुषवाचक सर्वनामों के तिर्यक् रूप

कारक चिह्नों के कारण हुए रूप परिवर्तन

पुरुषवाचक सर्वनाम Personal Pronouns		पुरुष वचन (Person Number)	सर्वनाम (Pro-noun)	परिवर्तित रूप (Change of form)	कर्ता - ने (Nominative)	कर्म - को (Accusative)	करण - से (Instrumental)	संप्रदाय - को, के लिए (Dative)	अपादान - से (Ablative)	संबंध - का, के, की (Possessive)	अधिकरण - में - in , पर - on (Locative)
संकेतवाचक Demonstrative	उत्तम पुरुष एकवचन	मैं	मैं	मुझ, मेरा	मैंने	मुझको / मुझे	मुझसे	मुझको, मेरे लिए	मुझसे	मेरा, मेरे, मेरी	मुझमें, मुझ पर
		हम	हम	-	हमने	हमको	हमसे	हमको / हमारे लिए	हमसे	हमारा, हमारे, हमारी	हममें, हम पर
	मध्यम पुरुष एकवचन	तू	तू	तुझ	तूने	तुझको / तुझे	तुझसे	तुझको / तेरे लिए तुमको, तुम्हारे लिए	तुझसे	तेरा, तेरे, तेरी, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी	तुझमें, तुझ पर, तुममें, तुम पर
		आप	आप	-	आपने	आपको	आपसे	आपको / आपके लिए	आपसे	आपका, आपके, आपकी	आप में, आप पर
	अन्य पुरुष एकवचन	वह	वह	उस	उसने	उसको	उससे	उसको / उसके लिए	उससे	उसका, उसके, उसकी	उस में, उस पर
		वे	वे	उन	उन्होंने	उनको	उनसे	उनको / उनके लिए	उनसे	उनका, उनके, उनकी	उनमें, उन पर
	एकवचन	यह	यह	इस	इसने	इसको	इससे	इसको / इसके लिए	इससे	इसका, इसके, इसकी	इसमें, इस पर
		ये	ये	इन	इन्होंने	इनको	इनसे	इनको / इनके लिए	इनसे	इनका, इनके, इनकी	इनमें, इन पर
	प्रश्नवाचक Interrogative	कौन	कौन	किस	किसने	किसको	किससे	किसको / किसके लिए	किससे	किसका, किसके, किसकी	किसमें, किस पर
		कौन	कौन	किन	किन्होंने	किनको	किनसे	किनको / किनके लिए	किनसे	किनका, किनके, किनकी	किनमें, किन पर
संबंधवाचक Relative	एकवचन	जो	जो	जिस	जिसने	जिसको	जिससे	जिसका / जिस के लिए	जिससे	जिसका, जिसके, जिसकी	जिसमें, जिस पर
		जो	जो	जिन	जिन्होंने	जिनको	जिनसे	जिनको / जिन के लिए	जिनसे	जिनका, जिनके, जिनकी	जिनमें, जिन पर

उपर्युक्त वाक्यों में 'जो' पहले वाक्य में 'घड़ी' की जगह में और दूसरे वाक्य में 'वह' 'व्यक्ति' के लिए आया है। 'जो' संबंधवाचक सर्वनाम है। 'जो' एकवचन और बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होता है।

(घ) घर में कौन है ? वहाँ क्या है ?

घर में पार्वती है। वहाँ एक कुआँ है।

कौन और क्या क्रमशः पार्वती और कुआँ के बदले प्रयुक्त हुए हैं—ये दोनों प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

(ङ) संख्याएँ भी विशेषण हैं यथा वहाँ तीन व्यक्ति बैठे हैं। ये संख्यावाचक विशेषण हैं।

2.14 निजवाचक सर्वनाम 'अपना'

'अपना' निजवाचक सर्वनाम है। निज का अंग्रेजी पर्याय हैं one's own. हिंदी में इसके पर्यायवाची शब्द हैं—स्वयं का, खुद का।

अपना / अपने / अपनी का प्रयोग हिंदी की अपनी विशेषता है।

'अपना' आकारांत विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है। इसलिए यह 'आ', 'ए' और 'ई' नियम के अनुसार विशेष्य के लिंग-वचन से अन्वित होता है।

नीचे लिखे वाक्यों में 'अपना' के प्रयोग को अंग्रेजी में अनूदित वाक्यों के संदर्भ में देखिए—

राजेश	अपना	काम	करता है।	Rajesh does	<u>his</u> work.
जूली			करती है।	Julie does	<u>her</u> work.
तुम			करो।	You do	<u>your</u> work.
मैं			करूँगा।	I shall do	<u>my</u> work.
आप			कीजिए।	You do	<u>your</u> work.
हम			कर रहे हैं।	We are doing	<u>our</u> work.
वे			कब करेंगे ?	When will they do	<u>their</u> work ?

हिंदी और अनूदित अंग्रेजी वाक्यों की तुलना से स्पष्ट होगा कि 'अपना' शब्द 'अंग्रेजी' में my, our, your, his, her, their सभी का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

कर्ता द्वारा स्वयं कार्य संपादन में 'स्वयं का' के पर्याय के रूप में 'अपना' प्रयुक्त होता है।

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ें

पहले तुम मुझे अपना परिचय दो, फिर मैं अपना परिचय दूँगा।

First you introduce yourself then I shall introduce myself.

इस दस्तावेज पर आप अपने हस्ताक्षर कीजिए फिर वे अपनी मुहर लगाएँगे।

You put your signature on this document then he will put his seal.

जब सभी यात्री अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए तब चालक अपनी सीट पर बैठा।

When all the passengers were seated on their respective seats, the driver occupied his seat.

‘निज’ के पर्याय के रूप में ‘आप’ का प्रयोग। जैसे—

मैं वहाँ आप (खुद) चला जाऊँगा।

I myself will go there.

3.0 कहानी

आइए अब एक कहानी पढ़ें।

प्राणियों की सेवा भी ईश्वर भक्ति है

(1) बहुत पहले की बात है। आबू नाम का एक नेकदिल इन्सान था। उसका अधिकांश समय दीन-दुखियों की मदद करने और बीमारों की सेवा-सुश्रूषा में गुजरता था। इसी से उसे अपार संतोष मिलता था।

(2) एक रात वह सो रहा था। अचानक उसकी नींद खुली तो देखता क्या है कि घर में धीमा प्रकाश फैला हुआ है। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक देवदूत सोने की जिल्दवाली किताब में कुछ लिख रहा है। आबू ने देवदूत को प्रणाम किया और कहा, “महाशय आपका स्वागत है। मेरा सौभाग्य है कि आप मेरे गरीबखाने में आए।”

(3) देवदूत ने आबू की ओर देखा तक नहीं। आबू ने पूछा, “महाशय आप क्या लिख रहे हैं?”

देवदूत ने कहा, “आपसे इसका कोई मतलब नहीं।”

आबू – “फिर भी जानूँ तो, कि आप क्या लिख रहे हैं ?”

देवदूत – “मैं उन लोगों के नाम लिख रहा हूँ जो ईश्वर के सच्चे भक्त हैं। क्या आपको ईश्वर से प्यार है ?”

आबू – “जी नहीं, मैं तो पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन नहीं करता। मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर कभी नहीं जाता। झूठ क्यों कहूँ कि मुझे ईश्वर से प्यार है।”

देवदूत – “तभी न कहा था कि आपका इस सूची से कोई लेना-देना नहीं है। इस सूची में उनका नाम है जिन्हें ईश्वर से प्यार है।”

आबू – “तो मेरा नाम उस सूची में लिख लेना जो प्राणिमात्र से प्यार करते हैं।”

बात अनसुनी करके देवदूत चला गया। देवदूत के जाने के बाद आबू फिर गहरी नींद में सो गया।

(4) दूसरी रात देवदूत फिर आबू के कमरे में आया। कमरे में पहले दिन से दुगुना प्रकाश था। देवदूत ने आबू से कहा, “प्रणाम आबू जी। आप धन्य हैं।”

आबू – “क्यों भला ?”

देवदूत – “भगवान ने दोनों सूचियाँ देखीं और उन्होंने ईश्वर-भक्तों में आपका नाम सबसे ऊपर लिख दिया।”

शब्दार्थ

पैरा 1	प्राणी (m)	living being	दीन-दुखी (adj)	afflicted
	सेवा (f)	service	मदद (f)	help सहायता
	ईश्वर (m)	God भगवान	बीमार (adj)	sick / ill
	भक्ति (f)	devotion	सेवा सुश्रूषा (f)	service / nursing
	नेकदिल (adj)	good hearted	समय (m)	time वक्त
	इंसान (m)	person / man व्यक्ति	गुजरना (v)	to pass
पैरा 2	अचानक (adv)	suddenly	स्वागत (m)	welcome
	धीमा (adj)	slow	सौभाग्य (f)	good fortune
	प्रकाश (m)	light	भक्त (m)	devotee
	देवदूत (m)	messenger from God	जिल्द (f)	cover of a book
पैरा 3	सूची (f)	list	अनसुनी करना लेना-देना (m)	not to pay any heed concern
पैरा 4	दुगना (adj)	twice / two fold	आप धन्य हैं	you are blessed

पाठ-2 : क्रिया पदबंध

1.0	क्रिया पदबंध	33
1.1	क्रिया के प्रकार	33
1.2	क्रिया : रूप रचना	35
1.2.1	संयुक्त क्रिया	35
1.2.2	रंजक क्रिया	36
1.2.3	संयुक्त क्रियाओं का निर्माण	37
1.2.4	नाम धातु	38
1.2.5	प्रेरणार्थक क्रिया	39
1.2.6	‘लगना’ क्रिया के विभिन्न रूप	40
2.0	वाच्य	40
3.0	काल	42
4.0	अर्थ / वृत्ति	43
	- आज्ञार्थक	43
	- संभावनार्थक	45
5.0	कहानी : भगवान बुद्ध और अंगुलिमाल	46
	शब्दावली	47

1.0 क्रिया पदबंध

जिससे किसी कार्य के करने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। जैसे— दौड़ना, पढ़ना, देखना, खेलना, आना, जाना, इत्यादि।

1.1 क्रिया के प्रकार

(1) जिस क्रिया का फल किसी व्यक्ति या वस्तु पर नहीं पड़ता, केवल कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—

बच्चे हँस रहे हैं।

चिड़िया उड़ रही है।

सरला अभी आई है।

एलेन सो रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाएँ - हँसना, उड़ना, आना, सोना अकर्मक क्रियाएँ हैं क्योंकि इन कार्यों का फल अन्य व्यक्ति या वस्तु पर नहीं पड़ता। अर्थात् अकर्मक क्रियाओं में कर्म नहीं आता।

(2) निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं को देखें :—

एलेन उपन्यास पढ़ रही है।

बच्चे टी.वी. में फिल्म देख रहे थे।

मनीषा हिंदी सीख रही है।

मजदूर मकान बना रहे हैं।

माता जी चिट्ठी लिख रही हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाओं के कर्ता के अतिरिक्त एक कर्म की आवश्यकता होती है। अर्थ जानने के लिए कर्म की जानकारी प्रायः 'क्या' प्रश्न के उत्तर में मिलती है।

एलेन क्या पढ़ रही थी ? उत्तर : 'उपन्यास' - यह कर्म है।

बच्चे क्या देख रहे थे ? उत्तर : 'फिल्म' - यह कर्म है।

मनीषा क्या सीख रही है ? उत्तर : 'हिंदी' - यह कर्म है।

इस तरह की क्रियाएँ **सकर्मक क्रियाएँ** (Transitive verb) कहलाती हैं।

(3) कुछ क्रियाओं का आशय एक से अधिक कर्म (प्रायः दो) से स्पष्ट होता है जैसे—

किराएदार मकान-मालिक को किराया देता है।

पिता ने अपने पुत्र को रुपए भेजे।

सुनीता अपनी लड़की को कहानी सुनाती है।

ऊपर के वाक्य में 'देता है' क्रिया का कर्म है 'किराया'। जिसका उत्तर "क्या देता है?" प्रश्न से मिलता है। एक अतिरिक्त कर्म है मकान-मालिक जिसका उत्तर किसे देता है - प्रश्न से मिलता है। 'क्या' प्रश्न का उत्तर मुख्य / प्रधान कर्म है। 'किसको' प्रश्न का उत्तर गौण कर्म कहलाता है। ये

क्रियाएँ **द्विकर्मक क्रियाएँ** (Double Transitive) कहलाती हैं।

(4) हिंदी में 'हो' प्रायः सहायक क्रिया (Auxiliary verb) की भूमिका निभाता है। 'होना' का अंग्रेजी पर्याय 'to be' है। जिस तरह 'to be' आवश्यकतानुकूल am, is, are, were रूप लेता है उसी तरह 'हो' क्रिया - है, हैं, था-थे-थी, एगा, एँगे, एगी, एँगी में बदलती है।

'है, हैं' - क्रमशः वर्तमान, एकवचन और वर्तमान बहुवचन में आते हैं।

राम पढ़ता है। रजनी पढ़ती है। (वर्तमान, एकवचन)

रामेश्वर और राजेश पढ़ते हैं। (वर्तमान, पुल्लिंग, बहुवचन)

मीरा और रजनी पढ़ती हैं। (वर्तमान, स्त्रीलिंग, बहुवचन)

'था' - भूतकाल को बताता है।

सुरेश पढ़ रहा था। (पुल्लिंग, एकवचन)

सुधा पढ़ रही थी। (स्त्रीलिंग, एकवचन)

मुकेश और माधव पढ़ रहे थे। (पुल्लिंग, बहुवचन)

सुधा, माधवी और मीरा पढ़ रही थीं। (स्त्रीलिंग, बहुवचन)

'गा' - भविष्यत काल को बताता है।

चौकीदार बाजार जाएगा। (पुल्लिंग, एकवचन)

दोनों चौकीदार सामान खरीदने जाएँगे। (पुल्लिंग, बहुवचन)

एलेन कॉलेज जाएगी। (स्त्रीलिंग, एकवचन)

शारदा और एलेन कालेज जाएँगी। (स्त्रीलिंग, बहुवचन)

सर्वनाम + सहायक क्रिया 'हो'

				वर्तमान	भूत	भविष्यत
उत्तम पुरुष	मैं	एकवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहा	हूँ	था	ऊँगा (सीखूँगा)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	हूँ	थी	ऊँगी (सीखूँगी)
	हम	बहुवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहे	हैं	थे	एँगे (सीखेंगे)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	हैं	थीं	एँगी (सीखेंगी)
मध्यम पुरुष	तू	एकवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहा	है	था	एगा (सीखेगा)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	है	थी	एगी (सीखेगी)

				वर्तमान	भूत	भविष्यत
मध्यम पुरुष	तुम	एकवचन/बहुवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहे	हो	थे	ओगे (सीखोगे)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही		थीं	ओगी (सीखोगी)
	आप	एकवचन				
		पुल्लिंग	हिंदी सीख रहे	हैं	थे	एँगे (सीखेंगे)
		स्त्रीलिंग	हिंदी सीख रही	हैं	थीं	एँगी (सीखेंगी)
अन्य पुरुष	वह	पु. एकवचन	सीख रहा	है	था	सीखेगा
		स्त्री. एकवचन	सीख रही	है	थी	सीखेगी
	वे	पु. एकवचन बहुवचन	सीख रहे	हैं	थे	सीखेंगे
		स्त्री. एकवचन बहुवचन	सीख रही	हैं	थीं	सीखेंगी

‘हो’ क्रिया मुख्य क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त होती है ।

आकाश	डॉक्टर	है ।
अणिमा	सुंदर	
तू		
तुम	समझदार	हो ।
आप	समझदार	हैं ।
वे		

1.2 क्रिया : रूप रचना

1.2.1 संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया का प्रयोग हिंदी की अपनी विशेषता है। संयुक्त क्रिया की रचना दो क्रियाओं के योग से होती है जिसमें प्रथम क्रिया मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त होती है जो मूल अर्थ का बोध कराती है जब कि दूसरी क्रिया सहायक होती है जो क्रिया के लिंग, वचन और काल को व्यक्त करती है।

उदाहरण—

सीता रो पड़ी।

मैंने किताब पढ़ ली।

इन वाक्यों में 'रो पड़ी' और 'पढ़ ली' संयुक्त क्रियाएँ हैं। पहले वाक्य में 'रो' और दूसरे वाक्य में 'पढ़' मुख्य क्रियाएँ तथा 'पड़ी' और 'ली' सहायक क्रियाएँ हैं।

1.2.2 रंजक क्रिया (helping verb)

संयुक्त क्रिया में प्रयुक्त होने वाली मुख्य क्रिया की सहायक क्रिया रंजक क्रिया (Intensifier) कहलाती है। संयुक्त क्रिया में प्रयुक्त होने वाली सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के भाव को अतिरंजित (exaggerate) करने के कारण रंजक क्रिया कहलाती है।

बच्चा गिर पड़ा।

मैंने गेंद फेंक दी।

इन वाक्यों में 'पड़ा' और 'दी' रंजक क्रियाएँ हैं।

रंजक क्रियाओं की सूची लंबी है। इनमें से एक, दो को छोड़कर सभी रंजक क्रियाएँ प्रायः स्वतंत्र क्रियाओं की तरह भी प्रयुक्त होती हैं।

ये क्रियाएँ हैं—

आना, जाना, उठना, बैठना, देना, लेना, डालना, रखना, लगना, रहना, पड़ना, सकना, चुकना, आदि। इनमें से 'सकना' और 'चुकना' ऐसी क्रियाएँ हैं जिनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

(i) 'डालना' रंजक क्रिया के रूप में किसी कार्य के अचानक या जल्दी में हो जाने, बिना विचारे कर डालने / देने को व्यक्त करती है।

सुधा ने गुस्से में चिट्ठी फाड़ डाली। - (tore away)

आपने यह क्या कर डाला ? - (done inadvertently)

मैंने यह उपन्यास कल रात ही पढ़ डाला था। - (finished reading)

(ii) 'उठना' तथा 'बैठना' रंजक क्रियाओं से किसी कार्य का अविवेक में या जल्दबाजी में करना या होना अभिव्यक्त होता है।

सामने डाकू को देखकर रूपा डर से चिल्ला उठी।

सुनील यह तुम क्या कर बैठे ?

निशा को होटल में देखकर मनोज बौखला उठा।

(iii) 'पड़ना' का प्रयोग रंजक क्रिया के रूप में (1) अचानक करने, (2) कार्य प्रारंभ करने के अर्थ में किया जाता है।

बच्चा 'आग-आग' चिल्ला पड़ा / उठा। - (cried out)

मेरे कहने पर वह तुरंत चल पड़ा। - (right then he made his way
Immediately set out)

गाड़ी चल पड़ी। - (started moving)

- (iv) 'सकना' सामर्थ्य या योग्यता का बोध कराता है।
 मंत्री जी सभा में नहीं आ सकेंगे । (will not be able to come)
 मिलखा सिंह लगातार 15 किलोमीटर दौड़ सकता है। (can run 15 kilometre at a stretch i.e. without stopping)
 मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ? (What can I do for you?)
- (v) 'लेना' और 'देना' दोनों रंजक क्रिया के रूप में 'कार्य संपन्नता' के द्योतक हैं।
 राधेश्याम जी ने मकान किराए पर दे दिया। (gave away, rented out)
 राधेश्याम जी ने मकान किराए पर ले लिया। (took the house on rent for self)
 'देना' सहायक क्रिया किन्हीं स्थितियों में 'अनुमति' का बोध भी कराती है।
 माली को जाने दो।
 बाहर बैठे व्यक्तियों को अंदर आने दो।
- (vi) 'चुकना' सहायक क्रिया कार्य पूरा होने का संकेत देती है।
 क्या बच्चे खाना खा चुके हैं ? (have children taken their meals)
 यदि आप कह चुके हों तो मैं कुछ कहूँ। (If you have finished speaking I shall put up my views)
 जब आप स्टेशन पहुँचे तो गाड़ी आ चुकी थी। (train had already arrived)
- (vii) 'आना' और 'जाना' दोनों रंजकता की दृष्टि से मुख्य क्रिया द्वारा वांछित कार्य के पूरा होने / करने का संकेत देती है।
 गाड़ी समय से पहले आ गई। (the train came before time)
 अखबार वाला अखबार दे गया।
 वह पेटू दोनों का खाना अकेले खा गया।
- (viii) 'लगना' रंजक क्रिया कार्य प्रारंभ होने का संकेत देती है। यह क्रिया के साथ 'ने' लगाकर प्रयुक्त होती है।
 डाकुओं को देखते ही लोग घरों में छिपने लगे। (started hiding themselves)
 मेरे आते ही आप क्यों जाने लगे ? (started going)

1.2.3 संयुक्त क्रियाओं का निर्माण

- (I) क्रिया का मूल रूप + रंजक क्रिया
- | | |
|------------|--------------------------------------------------------|
| कर + डालना | मैंने आपके सारे पत्र कल रात ही टाइप <u>कर डाले</u> थे। |
| दे + आना | नौकर उनका अखबार वापस <u>दे आया</u> । |
| सो + जाना | बच्चे अब तक <u>सो गए</u> होंगे। |

चल + सकना | बीमारी के कारण वह चल भी नहीं सकता।
खा + चुकना | जब मेहमान आए, हम खाना खा चुके थे।

(II) कृदंत रूप + रंजक क्रिया

(i) वर्तमानकालिक कृदंत रूप (Present participle) + रंजक क्रिया

चलते + जाना | थक जाने के बावजूद हम चलते गए।
सोते + रहना | आप देर तक क्यों सोते रहते हैं?
लेते + आना | वापस आते समय छतरी लेते आना।

(ii) भूतकालिक कृदंत + रंजक क्रिया

पड़ा + रह | वह दिन-रात घर में पड़ा रहता है।
लगा + रह | वह चौबीसों घंटे काम में लगा रहता है।

(iii) क्रिया + ना + रंजक क्रिया

जागना + पड़ना | परीक्षा के कारण हमें देर रात तक जागना पड़ता है।
आना + चाहिए | कर्मचारियों को ठीक समय पर दफ्तर आना चाहिए।

(iv) क्रिया + ने + रंजक क्रिया

रोने + लगना | बिल्ली को देखते ही बच्चा रोने लगा।
आने + देना | जिसके पास पहचान पत्र हो, उन्हें ही आने दो।

1.2.4 नाम धातु

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण से बनी क्रियाओं को नाम धातु कहते हैं।

(क)	संज्ञा शब्द	नाम धातु
	शर्म	शर्माना
	लाज	लजाना
	हाथ	हथियाना
	लालच	ललचाना
	बात	बतियाना
(ख)	विशेषण	नाम धातु
	साठ	सठियाना
	गरम	गरमाना
(ग)	सर्वनाम	नाम धातु
	अपना	अपनाना

1.2.5 प्रेरणार्थक क्रिया (causative verb)

सामान्यतः वाक्य में क्रिया का करनेवाला कर्ता subject होता है। कुछ स्थितियों में कर्ता की प्रेरणा से कोई अन्य व्यक्ति कार्य संपन्न करता है अर्थात् इसमें दो कर्ता होते हैं। इन स्थितियों में मूल क्रिया के रूप में कुछ परिवर्तन होता है। यही क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। नीचे लिखे वाक्यों से यह बात अधिक स्पष्ट हो सकेगी।

(क) मजदूर मकान बना रहे हैं।

(ख) ठेकेदार मजदूर से मकान बनवा रहा है।

वाक्य (क) में 'मजदूर', 'बनाना' क्रिया का कर्ता है। वाक्य (ख) में मकान बनाने की प्रेरणा मजदूरों को ठेकेदार देता है। (ख) दूसरे वाक्य में कार्य स्वयं न करके ठेकेदार मजदूर से करवा रहा है इसलिए 'बनवा' प्रेरणार्थक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
बजाना to ring	बजवाना to get rung (by someone else)
बनाना to make, to repair	बनवाना to get made / repaired
लिखना to write	लिखवाना to get written
उठाना to raise, to lift	उठवाना to get raised / lifted
बुलाना to call	बुलवाना to send for (through an agent)

कुछ सकर्मक क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप में दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके - वा जोड़ा जाता है।

फाड़ना to tear	फड़वाना to get torn
खींचना to pull, to draw	खिंचवाना to get pulled / drawn
भूनना to roast	भुनवाना to get roasted (Note : the initial long 'ई' and long 'ऊ' are shortened)

कुछ अनियमित रूप

बेचना to sell	बिकवाना to get sold
रोकना to prevent	रुकवाना to get prevented
देना to give	दिलवाना / दिलाना cause to be given
खिलाना to feed	खिलवाना cause to get fed

दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया वाले वाक्य—

1. यात्री कुली से ट्रेन में सामान रखवा रहे हैं।
2. ये सारी सजावट की वस्तुएँ हमने दिल्ली से मँगवाई थीं।

3. मेरे हाथ में दर्द था, इसलिए मैंने गिरीश से पत्र लिखवाया।

4. हम सब अपने कपड़े दर्जी से सिलवाते हैं।

1.2.6 'लगना' क्रिया के विभिन्न रूप

हिंदी में 'लग' ऐसी क्रिया है जो सहायक क्रिया और मुख्य क्रिया दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। इसका प्रयोग जटिल (complex) होते हुए भी रोचक (interesting) है। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :-

Sentence	Sense conveyed
मुझे प्यास लग रही है।	physical need
उसे चोट लगी।	physical harm
नाव किनारे लगी।	contact
राधा समझदार लगती है।	seems, appears to be
हमें फूल अच्छे लगते हैं।	liking
इस पौधे में छोटे फूल लगते हैं।	bearing
पौधा नहीं लगा।	taking root
इसे उठाने में ताकत लगती है।	requires force
रजनी मेरी भाभी लगती है।	relationship
मकान बनाने में बहुत पैसे लगते हैं।	investment / expenditure
चोर को पाँच कोड़े लगाओ।	punishment
गंदगी से बीमारी लगती है।	connection, infection
मेरा मकान रमेश के मकान से लगा है।	close by, nearest proximity
घर के चिराग से घर को आग लग गई।	catch
बीमार को इंजेक्शन लगा।	insertion, injecting
एक साल का बच्चा चलने लगता है।	commencement

2.0 वाच्य (voice)

वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह ज्ञात होता है कि उसका प्रभाव कर्ता पर पड़ता है या कर्म पर या किसी भाव पर। इसी आधार पर हिंदी में तीन वाच्य होते हैं। ये हैं –

कर्तृवाच्य (Active voice), कर्मवाच्य (passive voice), भाववाच्य (Impersonal voice)

(1) भाषा में कर्तृवाच्य की प्रधानता अधिक होती है यथा—

हम सब हिंदी सीख रहे हैं।

डॉक्टर रोगियों की जाँच कर रहे थे।

हमने नेता जी का भाषण सुना।

- (2) कर्मवाच्य (passive Voice) केवल सकर्मक क्रियाओं का हो सकता है। कर्मवाच्य में कर्म को प्रधानता दी जाती है और क्रिया भी लिंग, वचन और कर्म के अनुसार बदलती जाती है। प्रायः निम्नलिखित स्थितियों में कर्मवाच्य का प्रयोग होता है :-

- (i) जब क्रिया का कर्ता अज्ञात (not known) हो, या जब कर्ता के विषय में जानकारी देना जरूरी न हो जैसे—

सभी आतंकवादी पकड़े गए।

पंचायत में सभी गाँव वाले बुलाए जाएँगे।

बंगाल में चावल खाया जाता है।

- (ii) सरकारी कामकाज की भाषा में यथा—

इस पत्र के द्वारा आपको सूचना दी जाती है कि ……………।

डॉ. मनहर को आदेश दिया जाता है कि वे रायपुर के जिला अस्पताल में अपना पदभार (charge) ग्रहण कर लें।

इस रेल दुर्घटना की जाँच कराई जाए।

उपर्युक्त वाक्यों में कर्ता का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है। केवल कर्म का उल्लेख है जिसके बारे में जानकारी दी गई है।

नीचे दिए गए कर्तृवाच्य और उनके कर्मवाच्य से बने वाक्यों को देखें :-

कर्तृवाच्य - शर्मा जी ने यह लेख भेजा।

कर्मवाच्य - यह लेख शर्मा जी के द्वारा भेजा गया।

कर्तृवाच्य - स्वामी जी योगाभ्यास सिखाएँगे।

कर्मवाच्य - स्वामी जी द्वारा योगाभ्यास सिखाया जाएगा।

कर्तृवाच्य - 'अमर संदेश' ने यह खबर प्रकाशित की।

कर्मवाच्य - यह खबर 'अमर संदेश' द्वारा प्रकाशित की गई।

कर्तृवाच्य (Active voice) अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से बन सकते हैं। कर्मवाच्य (Passive voice) केवल सकर्मक क्रिया से बनता है क्योंकि इसमें कर्म की प्रधानता होती है और इसी से क्रिया की अन्विति होती है। कर्तृवाच्य वाले वाक्य का 'कर्म' (object) कर्मवाच्य वाले वाक्य में कर्ता बन जाता है।

कर्तृवाच्य - शोभा पत्र टाइप करती है।

(कर्ता) (कर्म)

कर्मवाच्य - पत्र शोभा द्वारा टाइप किया जाता है।

कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ 'के द्वारा' या 'से' लगाकर कर्मवाच्यीय वाक्य बनाया जाता है।

कर्मवाच्य वाले वाक्य में मुख्य क्रिया के भूतकाल रूप के साथ सहायक क्रिया 'जा' का प्रयोग होता है। वाक्य का काल सहायक क्रिया द्वारा सूचित होता है।

- (3) भाववाच्य (Impersonal Voice) वाले वाक्य में कर्ता का उद्देश्य (Subject) प्रायः कर्ता या कर्म नहीं होता, उसमें किसी भाव (idea, theme) को कर्ता के रूप में दिया जाता है। भाववाच्य वाले वाक्य प्रायः अकर्मक क्रिया से बनते हैं। साथ ही अधिकांश में अशक्यता दर्शाने का भाव होता है।

यहाँ बैठा नहीं जाएगा।

बीमार से चला नहीं जाता।

सकर्मक क्रिया से बने वाच्यवाले वाक्य –

मुझसे राधा का दुख देखा नहीं जाता।

माता जी से नौकरानी की दुखभरी कहानी सुनी नहीं गई।

3.0 काल (Tense)

वाक्य में कार्य के घटित होने का समय (time of accomplishment of any activity) क्रिया का काल (tense) कहलाता है। काल तीन होते हैं—

1. वर्तमान काल (Present tense)
2. भूतकाल (past tense)
3. भविष्यत काल (future tense)

वर्तमान – चलते हुए समय का, भूतकाल – बीते हुए समय का, और भविष्यतकाल – आगे आने वाले समय का द्योतक है।

रेलगाड़ी आ रही है। - वर्तमानकाल

रेलगाड़ी कल देर से आई थी। - भूतकाल

रेलगाड़ी देर से आएगी। - भविष्यतकाल

समय की सूक्ष्मता का बोध कराने के लिए इन तीनों कालों के भेद किए गए हैं। इन कालों को निम्नलिखित आरेख में दर्शाया गया है :—

काल tense	सामान्य simple	अपूर्ण continuous	पूर्ण perfect
वर्तमान Present	राजेश जाता है। Rajesh goes.	राजेश जा रहा है। Rajesh is going.	राजेश गया है। Rajesh has gone.
भूत Past	राजेश गया। Rajesh went.	राजेश जा रहा था। Rajesh was going.	राजेश गया था। Rajesh had gone.

भविष्यत Future	राजेश जाएगा। Rajesh will go.	राजेश जा रहा होगा Rajesh will be going.	राजेश जा चुका होगा। Rajesh would have gone.
-------------------	---------------------------------	-----------------------------------------------	---------------------------------------------------

4.0 अर्थ / वृत्ति (mood)

क्रिया के जिस रूप से कार्य के संपन्न होने की रीति या विधि का ज्ञान हो उसे 'अर्थ / वृत्ति' कहते हैं।

आज्ञार्थक (Imperative)

क्रिया के जिस रूप से आज्ञा / आदेश (order), प्रार्थना (request) या अनुदेश (instruction) आदि का बोध हो उसे आज्ञार्थक कहते हैं। इसमें कर्ता के रूप में मध्यम पुरुष सर्वनाम - तू, तुम, आप का प्रयोग होता है। इनके लिए क्रिया के निम्नलिखित रूपों का प्रयोग होता है :-

- (1) 'तू' के साथ क्रिया का धातु रूप रखा जाता है; यथा—
तू जा, तू पढ़, तू सो, तू पानी ला।
- (2) 'तुम' के साथ क्रिया के धातु रूप में 'ओ' जोड़ा जाता है; यथा—
तुम जाओ, तुम पढ़ो, तुम सोओ, तुम पानी लाओ।
- (3) 'आप' के साथ क्रिया के धातु रूप में 'इए' जोड़ा जाता है; जैसे— आप जाइए, आप पढ़िए, आप सोइए, आप पानी लाइए।

किसी को 'तू' संबोधन करना घनिष्ठता (intimacy) तथा अनौपचारिकता (informality) का द्योतक है।

'तू' का प्रयोग - अपने से प्रायः छोटे व्यक्ति तथा बहुत नजदीकी मित्र (very intimate friend) के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग प्रायः ईश्वर के लिए भी किया जाता है। यह अंग्रेजी के thou का पर्याय है। उदाहरण -

सुरेश, तू नाश्ता कर और अपना पाठ पढ़।
बेटी सरला, तू दवा खा, दूध पी और फिर सो।
पूनम, तू बाहर जा और बाग में खेल।

- (4) 'तू' के बिना भी वाक्य बनाए जाते हैं; यथा—
बाहर जा, यहाँ बैठ। 'तू' का प्रयोग बहुवचन में नहीं होता।
- (5) 'तुम' का प्रयोग सामान्यतः बराबरी (equality) निकटता (intimacy) का बोध कराता है। यह एकवचन और बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होता है। बहुवचन रूप में 'तुम' के साथ 'लोग' भी जोड़ा जा सकता है।

राकेश तुम यहीं बैठो।
राकेश और सलमा, तुम लोग यहीं रहो।
दिवाकर, मनोज, शिवानी तुम लोग बाजार जाओ और सामान लाओ।

- (6) 'आप' आदरसूचक शब्द है। अपने से बड़े, सामाजिक स्तर पर अपने से उच्च और अपरिचित व्यक्ति को संबोधित करने के लिए 'आप' का प्रयोग किया जाता है।

'आप' के साथ क्रिया का रूप 'क्रिया का मूल रूप + ए' होता है।

आप अंदर आइए। यहाँ बैठिए। सामाचारपत्र पढ़िए / लीजिए।

चाय पीजिए। जल्दी कीजिए। कप मुझे दीजिए।

इन वाक्यों में ले, पी, कर, दे क्रियाओं के रूप क्रमशः लीजिए, पीजिए, कीजिए और दीजिए हैं जब कि अन्य क्रियाएँ 'इए' लगाकर बनाई जाती हैं।

- (7) निषेधात्मक वाक्य बनाने के लिए प्रायः 'न' और 'मत' का प्रयोग किया जाता है। 'न' का प्रयोग 'आप' के साथ और 'मत' का प्रयोग 'तू' और 'तुम' के साथ किया जाता है। जैसे—

आप मीटिंग में न जाइए।

आप खाना न खाइए।

तुम उसे कुछ मत बताओ।

पूनम, तू शोर मत कर।

सुधा, तू अभी बाहर मत जा।

- (8) क्रिया + ना आज्ञार्थक के रूप में—

यह सामान्य सुझाव, मशविरा या अनुदेश दर्शाता है—यह प्रायः 'तू' और 'तुम' के साथ प्रयुक्त होता है। यथा—

तुम निदेशक (Director) महोदय से मिल लेना।

मुझे बताना कि वे क्या चाहते हैं।

तू प्रदर्शनी में किसी वस्तु को मत छूना / मेरे आने तक गेट पर रहना।

- (9) 'क्रिया + इएगा' का प्रयोग आज्ञार्थक में—

इस रूप का प्रयोग कभी-कभी आदरसूचक 'आप' के साथ भी किया जाता है—

आप पहले खाना खा लीजिए, फिर घर जाइएगा।

जब आप दफ्तर जाएँ तो मेरी छुट्टी की अर्जी (application) मैनेजर साहब को दे दीजिएगा।

आप कल फोन कीजिएगा।

आज्ञार्थक के अंतर्गत —

'तू' के साथ क्रिया का 'धातुरूप' प्रयुक्त होता है।

'तुम' के साथ 'क्रिया का धातुरूप + ओ' का प्रयोग किया जाता है।

'आप' के साथ, 'क्रिया का धातुरूप + इए' का प्रयोग होता है।

- (10) आज्ञार्थक के रूप में संभावनार्थक (subjunctive) का प्रयोग कार्यालयीन पत्र व्यवहार में सामान्य आदेश के रूप में संभावनार्थक क्रिया का प्रयोग होता है। यथा—

फाइल तुरंत भेजें।

मीटिंग आज ही बुलाएँ।

दिनांक 05-12-2015 को दी गई टिप्पणी के अनुसार कार्रवाई करें।

संभावनार्थक (Subjunctive Mood)

- (1) क्रिया के संभावनार्थक रूप से आशंका, संदेह (doubt), इच्छा (wish), नम्र अनुदेश (polite instruction), अनुज्ञा (permission), शर्त (condition), प्रयोजन (purpose) आदि का बोध होता है।

इसमें क्रिया एकारांत (-ए ending) आती है जो बहुवचन में 'एँ' में बदलती है।

- (i) शायद आज रात को पानी बरसे ।

(It may rain tonight.)

हो सकता है गाड़ी देर से आए ।

(May be the train comes late.)

शायद निदेशक महोदय अगले माह छुट्टी पर जाएँ।

(May be the Director will proceed on leave next month.)

- (ii) आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें ।

(May you recover soon.)

तुम्हें यह नौकरी मिल जाए ।

(I wish you get this job.)

- (iii) अपनी जगह से कोई न हिले।

(No one will move from his place.)

चर्चा के अनुसार मसौदा प्रस्तुत करें।

(please put up draft as discussed.)

- (iv) क्या हम भी जाएँ ?

क्या भगवानदीन यहाँ रुके ?

- (v) गाड़ी तेज चलाओ ताकि हम ठीक समय पर स्टेशन पहुँच सकें।

टाइपिस्ट सारे पत्र अभी टाइप करे ताकि वे आज ही भेजे जा सकें।

- (vi) अगर राधिका पूछे तो बता देना मैं चला गया ।

यदि बुखार न आए तो दवा बंद कर देना।

2. सर्वनामों के साथ संभावनार्थक क्रियारूपों का चार्ट नीचे दिया जा रहा है—

पुरुष person	वचन Number	क्रिया का मूल (धातु रूप + प्रत्यय)	उदाहरण example
उत्तम पुरुष First person	एकवचन - मैं	खा+ ऊँ	मैं खाऊँ ।
	बहुवचन - हम	खा + एँ	हम खाएँ ।
मध्यम पुरुष Second Person	एकवचन - तू	खा + ए	तू खाए।
	एकवचन - तुम	खा + ओ	तुम खाओ।
	बहुवचन - तुम		
	एकवचन - आप	खा + एँ	आप खाएँ।
	बहुवचन - आप		
अन्य पुरुष Third Person	एकवचन - वह	खा + ए	वह खाए।
	बहुवचन - वे	खा + एँ	वे खाएँ।

5.0 कहानी

भगवान बुद्ध और अंगुलिमाल

1. अंगुलिमाल एक डाकू था। वह जंगल में रहता था। जंगल से होकर गुजरने वाले यात्रियों को वह पकड़ लेता था और उन्हें मार डालता था। उन यात्रियों को मारकर वह उनकी अँगुलियाँ काट लेता था। वह उन अँगुलियों की माला बनाकर अपने गले में पहन लेता था, इसलिए लोग उसे अँगुलिमाल कहते थे। आसपास के लोग उससे बहुत डरते थे।
2. एक बार भगवान बुद्ध जंगल के पास के एक गाँव में आए। उस गाँव के लोगों ने अंगुलिमाल के बारे में उनसे चर्चा की। उन्होंने रो-रोकर उसकी क्रूरता के किस्से सुनाए। भगवान बुद्ध ने लोगों की बातें बड़े ध्यान से सुनीं और उन्हें धीरज बँधाया।
3. दूसरे दिन भगवान बुद्ध उसी जंगल की ओर चल दिए। लोगों ने उन्हें वहाँ जाने के लिए मना किया, लेकिन वे नहीं माने।
4. बुद्ध अंगुलिमाल के इलाके में पहुँचे। अंगुलिमाल ने उन्हें दूर से देखा। वह उन्हें मारने के लिए उनके पास आ गया।
फिर कहा, “रुक जाओ।”
बुद्ध ने कहा - “लो, मैं रुक गया। तुम कब रुकोगे ?”
अंगुलिमाल इस सवाल पर सोच में पड़ गया। फिर बोला - “मैं समझा नहीं ?”
5. भगवान बुद्ध ने बड़े प्रेम से अंगुलिमाल से कहा - “सुनो भाई, मेरा एक काम कर दो।

उस पेड़ से मेरे लिए चार पत्ते तोड़कर ला दो।”

मारना और काटना तो अंगुलिमाल का रोज का काम था। वह दौड़कर गया और शीघ्र ही पेड़ से चार पत्ते तोड़ लाया।

6. भगवान बुद्ध ने उससे फिर कहा - “अब एक काम और कर दो, भाई। तुम इन पत्तों को पेड़ की उसी शाखा में फिर से लगा आओ।”
7. अंगुलिमाल अचंभे में पड़ गया। वह बोला - “यह कैसे हो सकता है? कहीं टूटा हुआ पत्ता भी फिर से शाखा में लग सकता है ?”
8. बुद्ध ने कहा - “तुमने देखा कि टूटी हुई चीज दुबारा नहीं जुड़ सकती। तुम लोगों के सिर काटते हो, क्या तुम उन्हें दुबारा जोड़ सकते हो ? नहीं। तब तुम लोगों की हत्या क्यों करते हो ? हम दूसरों को जीवन दे नहीं सकते तो हमें उनके प्राण लेने का भी कोई अधिकार नहीं है।”
9. बुद्ध के उपदेश का अंगुलिमाल पर गहरा प्रभाव पड़ा। वह जान गया कि उसे दूसरों की हत्या करने का कोई अधिकार नहीं है। वह अपनी गलतियों पर पछताने लगा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। भगवान बुद्ध के शब्दों ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी। उसने हिंसा करना हमेशा के लिए छोड़ दिया और भगवान बुद्ध की शरण में आ गया।

शब्दावली Vocabulary

पैरा 1	डाकू	dacoit
	से होकर	through
	गुजरना	to pass
	अँगुली	finger
	आसपास	nearby
पैरा 2	चर्चा करना	to discuss
	क्रूरता	cruelty
	किस्सा	tale
	धीरज बँधाना	to console
पैरा 3	मना करना	to forbid
	मानना	to agree
पैरा 4	इलाका	area / locality
	रुक जाना	to stop

पैरा 5	तोड़ना	to pluck
पैरा 7	शाखा	branch
	लगाना	to fix
पैरा 8	अचंभा	surprise
	दुबारा	again
	अधिकार	right
पैरा 9	गहरा	deep
	प्रभाव	impact
	पछताना	to repent
	आँसू	tears
	बहना	to flow
	दिशा	direction
	शरण में आना	to surrender

पाठ-3 : क्रिया विशेषण, पदबंध तथा अन्विति व्यवस्था

1.0	क्रिया विशेषण, पदबंध तथा अन्विति व्यवस्था	50
1.1	क्रिया विशेषण : परिभाषा तथा विशेषता	50
1.2	क्रिया विशेषण के प्रकार	50
1.2.1	कालवाचक क्रिया विशेषण	50
1.2.2	स्थानवाचक क्रिया विशेषण	51
1.2.3	रीतिवाचक क्रिया विशेषण	51
1.2.4	परिमाणवाचक क्रिया विशेषण	52
1.3	क्रिया विशेषणों के रूप	52
2.0	अन्विति	53
2.1	कर्ता और क्रिया की अन्विति	53
2.2	कर्म और क्रिया की अन्विति	54
2.3	विशेषण और विशेष्य की अन्विति	55
3.0	सह-संबंधवाचक	55
4.0	समुच्चयबोधक अव्यय	57
5.0	हिंदी की कुछ विशिष्ट संरचनाएँ	58
5.1	‘कर्ता + को’ संरचना	58
5.2	‘कर्ता + ने’ संरचना	60
6.0	नाटक : परीक्षा	63
	शब्दावली	65

1.0 क्रिया विशेषण, पदबंध तथा अन्विति व्यवस्था

1.1 क्रिया विशेषण : परिभाषा तथा विशेषता

क्रिया विशेषण वह अविकारी शब्द है जिसमें लिंग, वचन, पुरुष, काल, आदि की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता। यह क्रिया की, विशेषण की तथा किसी अन्य क्रिया विशेषण की विशेषता बताता है। जैसे—

शेर तेज दौड़ता है। वाक्य में 'तेज' शब्द 'दौड़ता' क्रिया की विशेषता बताता है। अतएव 'तेज' शब्द क्रिया विशेषण है। शेर कैसे दौड़ता है - 'तेज'

क्रिया विशेषण अव्यय है अर्थात् उसके रूप में परिवर्तन नहीं होता, चाहे विशेष्य क्रिया पुल्लिङ्ग हो या स्त्रीलिङ्ग, एकवचन हो या बहुवचन।

यह लड़का तेज दौड़ता है।

ये लड़के तेज दौड़ते हैं।

यह बालिका तेज दौड़ती है।

ये बालिकाएँ तेज दौड़ती हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'तेज' क्रिया विशेषण है और चारों वाक्यों में उसका रूप नहीं बदलता है।

क्रिया विशेषण किसी विशेषण की विशेषता भी बता सकता है, जैसे—

रमा बहुत खुश हुई।

राधा अत्यंत दुखी है।

यह स्थान अधिक सुंदर है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'खुश, दुखी, सुंदर' विशेषण हैं। 'बहुत, अत्यंत, अधिक' क्रिया विशेषण हैं और ये क्रमशः खुश, दुखी तथा सुंदर विशेषणों की विशेषता बताते हैं।

क्रिया विशेषण अन्य क्रिया विशेषण की विशेषता भी बताता है, जैसे—

रश्मि बहुत धीरे चलती है।

चीता अत्यधिक तेज दौड़ता है।

यह गाड़ी प्रायः देर से आती है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'धीरे, तेज, देर से' क्रिया विशेषण हैं। 'बहुत, अत्यधिक, प्रायः' भी क्रिया विशेषण हैं और क्रिया विशेषणों की विशेषता बताते हैं।

1.2 क्रिया विशेषण के प्रकार

1.2.1 कालवाचक क्रिया विशेषण

कालवाचक क्रिया विशेषण क्रिया की अवधि, काल या समय का बोध कराता है। यथा—

देवव्रत कल पाँच बजे आया।

रेलगाड़ी देर से आएगी।
वह इस बाग में हमेशा आती है।
नेहरु जी इस भवन में बीस साल रहे।
झोपड़ियों में रात को आग लगी।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रिया विशेषण हैं और वे कार्य के समय के संबंध में सूचना देते हैं इसलिए ये क्रिया विशेषण कालवाचक क्रिया विशेषण की कोटि में आते हैं।

‘कब’ का उत्तर दर्शाने वाला क्रिया विशेषण ‘कालवाचक क्रिया विशेषण’ होता है।

अन्य कालवाचक क्रिया विशेषण हैं- आज, सुबह, तुरंत, बहुधा, प्रतिदिन, कभी-कभी, सर्वदा, हमेशा, कल, पहले, अक्सर, फौरन इत्यादि।

1.2.2 स्थानवाचक क्रिया विशेषण

कार्य के स्थल की सूचना देने वाला क्रिया विशेषण स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहलाता है।
जैसे—

समीर का भाई पंक्ति में आगे खड़ा था।
निदेशक (Director) महोदय बाहर गए हैं।
चोर उधर भाग गए।

‘कहाँ’ या ‘किधर’ का उत्तर ‘स्थान’ को दर्शाता है अतएव इनके उत्तर में आया क्रिया विशेषण स्थान वाचक क्रिया विशेषण की कोटि में आता है।

कुछ स्थान वाचक क्रिया विशेषण हैं — वहाँ, सर्वत्र, नजदीक, दूर, पास इत्यादि।

1.2.3 रीतिवाचक क्रिया विशेषण

किसी कार्य की रीति / विधि / प्रकार / गति आदि का बोध कराने वाला क्रिया विशेषण ‘रीतिवाचक क्रिया विशेषण’ होता है। जैसे—

आपकी घड़ी धीरे चल रही है।
देखो, दीपक ध्यानपूर्वक पाठ पढ़ रहा है।
वह ऊबड़-खाबड़ (undulated) रास्ता हमने पैदल ही तय किया ।
कुत्ता अचानक झपटा।

कुछ प्रमुख रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं —

निश्चय, अवश्य, शायद, नहीं, कैसे, तो आदि।

कुछ उदाहरण देखिए—

श्यामलाल अवश्य आएगा।
शायद रेल देर से आए।
सुमन आती तो है।

1.2.4 परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

लड़की खूब रोई।

आप तो हमें बिल्कुल भूल गए।

वे आपसे बहुत डरते हैं।

लोग इससे अधिक पैसा चाहते हैं।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण 'कितना ?' प्रश्न के उत्तर रूप में प्राप्त होता है।

संस्कृत से आगत क्रिया विशेषण तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हैं।

अकस्मात् - अकस्मात् बिजली चली गई।

प्रायः - वे प्रायः मेरे घर रुकते हैं।

कुछ अन्य संस्कृत क्रिया विशेषण हैं - कदाचित्, वस्तुतः, सदा, सर्वदा, वृथा, इत्यादि।

उर्दू से आगत कुछ विशेषण हैं - शायद , अक्सर, फौरन, नजदीक, हमेशा, जरूर, बिल्कुल इत्यादि।

1.3 क्रिया विशेषणों के रूप

क्रिया विशेषण की सूची लंबी है। ये कई रूपों में पदबंधों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

(क) कुछ एकल शब्द

तुरंत, हमेशा, आज, कल, पहले

कालवाचक

बाहर, वहाँ, आगे, दूर, पास

स्थानवाचक

अचानक, पैदल, सचमुच, शायद, कैसे, न, नहीं

रीतिवाचक

बहुत, अधिक, खूब, बिल्कुल

परिमाणवाचक

(ख) कुछ पुनरुक्त शब्द

धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, फटाफट, घर-घर, बार-बार, धड़ाधड़, जहाँ-जहाँ, ठीक-ठाक, जाते-जाते, देश-विदेश, साफ-साफ, रातों-रात, कहीं-कहीं, इधर-उधर, आस-पास, दिन-दहाड़े, रात-दिन, इत्यादि।

(ग) कुछ परसर्गयुक्त शब्द

आराम से, सुविधापूर्वक, ध्यानपूर्वक, सावधानी से इत्यादि।

(घ) कुछ सहसंबंधवाचक

जब तब; जहाँ वहाँ

जैसे वैसे; जितना उतना

(ङ) कुछ अव्यय (निपात)

तो, ही, भी, भर

(च) कुछ कृदंत

(i) 'ने' में अंत होने वाले

पैर मुड़ने से

पैर मुड़ जाने के कारण मधुकर गिर पड़ा।

आपके आने से हम आश्वस्त हुए।

देर से आने के कारण गाड़ी छूट गई।

(ii) वर्तमानकालिक पुनरुक्त कृदंत

वह चलते-चलते गिर पड़ा।

मैं तुम्हारी बात सुनते-सुनते थक गया।

शीला पढ़ते-पढ़ते सो गई।

(iii) वर्तमानकालिक कृदंत

वह दौड़ते हुए चली गई।

मुझे देखते हुए राजू चला गया।

(iv) पूर्णकालिक कृदंत

खड़े होकर प्रार्थना करो।

पढ़कर सोओ।

(v) भूतकालिक कृदंत

पुष्पा लेटे हुए पढ़ रही थी।

सतीश आँखें बंद किए हुए लेटा था।

2.0 अन्विति (agreement)

अन्विति से तात्पर्य है दो पदों के बीच लिंग और वचन और पुरुष के आधार पर एकरूपता।

हिंदी भाषा में अन्विति तीन स्तरों पर होती है—

कर्ता और क्रिया के स्तर पर

कर्म और क्रिया के स्तर पर

विशेषण और विशेष्य के स्तर पर

2.1 कर्ता और क्रिया की अन्विति

(i) यदि कर्ता प्रत्यय रहित पुल्लिङ्ग एकवचन हो तो क्रिया पुल्लिङ्ग एकवचन में होगी, जैसे—

मनोज अपना सामान उठाकर स्टेशन चला गया।

(ii) यदि कर्ता प्रत्यय रहित पुल्लिङ्ग बहुवचन हो तथा एकाधिक पुल्लिङ्ग प्राणिवाचक संज्ञाएँ

‘और’ से जुड़ी हों तो क्रिया पुल्लिङ्ग बहुवचन में होगी। जैसे—

राजेश और मनोज बाग में खेल रहे थे।

हिरण और सियार जंगल में मिल-जुलकर रहते थे।

- (iii) यदि पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग प्राणिवाचक संज्ञाएँ कर्ता के रूप में प्रयुक्त हों तो क्रिया पुल्लिङ्ग बहुवचन में होगी। जैसे—

पति-पत्नी दोनों यात्रा के लिए निकल पड़े।

- (iv) यदि भिन्न-भिन्न लिंगों के दो या अधिक अप्राणिवाचक पद कर्ता के रूप में प्रयुक्त हों तो क्रिया की अन्विति प्रायः अंतिम पद के साथ होगी। जैसे—

उस महिला का माथा और आँखें सूजी हुई थीं।

- (v) जब एक से अधिक सर्वनाम कर्ता हों।

उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के कर्ता के रूप में आने से क्रिया की अन्विति उत्तम पुरुष बहुवचन में होगी। जैसे—

तुम और हम साथ चलेंगे।

मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष कर्ता के रूप में आने से क्रिया की अन्विति मध्यम पुरुष से होगी जैसे—

तुम और वह कब आना चाहोगे ?

- (vi) भिन्न-भिन्न पुरुष के कर्ता विभाजक-प्रत्यय ‘या / अथवा’ से जुड़े हों तो क्रिया की अन्विति अंतिम कर्ता से होगी जैसे—

मैं या मेरी छोटी बहिन शादी में सम्मिलित होगी।

इस व्यापार में उसे हानि या लाभ नहीं हुआ।

2.2 कर्म और क्रिया की अन्विति

- (i) सकर्मक क्रिया का भूतकालिक रूप प्रयुक्त होने पर कर्ता के साथ ‘ने’ का प्रयोग किया जाएगा। इस स्थिति में क्रिया की अन्विति कर्ता से न होकर कर्म से होगी। जैसे—

आपने मुझ पर बहुत कृपा (स्त्री.) की।

- (ii) एक ही लिंग के अनेक प्रत्ययहीन कर्म होने की स्थिति में उस लिंग के बहुवचन क्रिया-रूप का प्रयोग होगा। जैसे—

चिड़ियाघर में हमने शेर, चीता, और बाघ देखे।

जंगल में लोगों ने भैंसे और नीलगायें देखी होंगी।

- (iii) कर्म के रूप में एक ही लिंग के अनेक अप्राणिवाचक कर्म या भाववाचक कर्म हों तो प्रायः उसी लिंग के एकवचन क्रिया-रूप का प्रयोग होगा।

बाजार से यात्री ने एक संदूक और एक लोटा खरीदा।

उस छोटे से बालक ने अभूतपूर्व सुझ-बूझ और साहस का परिचय दिया।

(iv) द्विकर्मक क्रिया की अन्विति प्रत्ययहीन कर्म के लिंग और वचन से होगी।

प्रबंधक ने कर्मचारी को उसकी सेवाओं के लिए पुरस्कार (पु.) दिया।

प्रबंधक ने कर्मचारी को उसकी सेवाओं के लिए हजार रुपए (पु. बहु.) दिए।

प्रबंधक ने कर्मचारी को उसकी सेवा के लिए पदोन्नति (स्त्री.) दी।

2.3 विशेषण और विशेष्य की अन्विति

विशेषण, विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) के लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तित होता है।

अच्छा लड़का ↑ ↑	बड़ों का आदर	करता है।
अच्छी लड़की ↑ ↑		करती है।
अच्छे लड़के ↑ ↑		करते हैं।
अच्छी लड़कियाँ ↑ ↑		करती हैं।

3.0 सह-संबंधवाचक

सह-संबंधवाचक वह शब्द युग्म है जो वाक्य के दो अंशों या दो उपवाक्यों का परस्पर संबंध स्थापित करने में भूमिका निभाता है। सह-संबंधवाचक / शब्द युग्म प्रायः अलग-अलग उपवाक्यों / वाक्यांशों से जुड़कर कथन के आशय को स्पष्ट करते हैं। कुछ महत्वपूर्ण सह-संबंधवाचक हैं—

(क) यदि / अगर तो ।

अगर साहूकार रुपए उधार देगा तो उन्हें ब्याज सहित लौटा दूँगा।

यदि तुम मेहनत करोगे तो अवश्य सफल होगे।

अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ।

यदि आप यह काम कर दें तो मेरा समय बच जाएगा।

(ख) जब तब।

जब बारिश रुक गई तब हम घर से निकले।

जब वे मेरे घर आए थे तब मैं घर पर नहीं था।

कभी-कभी 'जब तब' की स्थिति विपरीत भी हो जाती है। अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, केवल उपवाक्य का प्रभाव बदल जाता है। जैसे—

वह स्टेशन तब पहुँचा जब रेलगाड़ी जा चुकी थी।

आप तब आए जब सारे मेहमान चले गए थे। / जा चुके थे।
जब कार्य और परिणाम की पुनरावृत्ति होती है तब सह-संबंधवाचक की पुनरुक्ति होती है। जैसे—

जब-जब वे मुंबई आते हैं तब-तब वे इसी होटल में ठहरते हैं।
कई स्थितियों में 'तब' का प्रयोग नहीं होता। उसके बदले केवल विराम चिह्न (,) का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

- जब प्रधान अध्यापक आए, मैंने उठकर उनका स्वागत किया।
- (ग) जो वह / वे।
जो मन लगाकर पढ़ता है, वह अवश्य सफल होता है।
जो इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं वे अपना-अपना हाथ उठाएँ।
'जो' और 'वह' तिर्यक् रूपों में भी प्रयुक्त हो सकते हैं जैसे—
जिसके पास टिकट है, उसको / उसे अंदर जाने दिया जाएगा।
जिन्हें बाहर खड़ा किया था, उन्हें अंदर भेज दो।
'जो' और 'वह' तिर्यक् रूपों की आवृत्ति भी हो सकती है। जैसे—
जिस-जिस के पास परिचय पत्र है, उस-उस को मतदान का अधिकार होगा।
जिन-जिन का पैसा आ गया है, उन-उन को सामान दे दो।

- (घ) जहाँ वहाँ।
जहाँ धुआँ है वहाँ आग अवश्य होगी।
जहाँ चाह है वहाँ राह है।
'जहाँ' और 'वहाँ' कभी-कभी क्रम बदलकर आते हैं। जैसे—
बच्चे वहाँ खुश रहते हैं जहाँ उन्हें प्यार मिलता है।
'जहाँ' और 'वहाँ' की पुनरावृत्ति भी होती है। जैसे—
विद्वान जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ-वहाँ उनका स्वागत होता है।

- (ङ) ज्यों ही त्यों ही।
ज्यों ही चोरों ने पुलिस दल को आते देखा त्यों ही वे जीप में भाग गए।
ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही गाड़ी चल पड़ी।

- (च) जैसा वैसा।
जैसा आप कहेंगे वैसा ही मैं करूँगा।
जैसी मूर्ति इसने बनाई है वैसी और कौन बना सकता है ?

- (छ) जितना उतना।

जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा।

जितनी ऊँची यह इमारत है उतनी ऊँची इमारत यहाँ और कोई नहीं है।

(ज) जिस तरह उस तरह

जिस तरह हम बच्चे से बात करेंगे, उस तरह ही वह भी औरों से करेगा।

4.0 समुच्चयबोधक अव्यय

यह दो पदों / पदबंधों / उपवाक्यों को जोड़ता है। समुच्चयबोधक अव्यय निम्नलिखित हैं :-

(क) संयोजक - और, तथा, एवं

	और	
राम	तथा	लक्ष्मण सीता की खोज में निकले।
	एवं	

(ख) विकल्पबोधक - या, अथवा, वा, चाहे..... चाहे....., न कि, नहीं तो, या..... या....., न..... न.....

	या	
या तो नागपुर से मेरे पिता जी आएँगे	नहीं तो	मेरे भाई को भेजेंगे।
	अथवा	

तुम चाहे रहो चाहे जाओ मुझसे कोई मतलब नहीं।

न वह स्वयं आया न उसकी चिट्ठी आई।

(ग) विरोधबोधक - मगर, पर, परंतु, किंतु, लेकिन।

	मगर	
	पर	
वह आया जरूर	परंतु	कुछ नहीं बोला।
	किंतु	
	लेकिन	

(घ) कारणबोधक – अतः, इसलिए, क्योंकि

	अतः	
अध्यक्ष महोदय नहीं आए	इसलिए	उद्घाटन समारोह नहीं हो सका।
	अतएव	

(ड) उद्देश्यबोधक - कि, ताकि, जिससे

उद्घाटन समारोह कल रखा गया है ताकि मंत्री जी आ सकें।

(च) स्पष्टीकरण बोधक - यानी, मानो, जैसे, जैसे कि, यहाँ तक कि

वे चार दिन बाद यानी अगले रविवार को आएँगे।

मुझे ऐसा लगा मानो वह अब नहीं बचेगा।

(छ) शर्तबोधक - जो तो, यदि तो, अगर तो

जो	मैं न आऊँ		तुम चले आना।
यदि	वे दें	तो	रकम ले लेना।
अगर	आप कहें		मैं इसे खरीद लूँ।

5.0 हिंदी की कुछ विशिष्ट संरचनाएँ

5.1 'कर्ता + को' संरचना

कर्ता के साथ 'को' विभक्ति (case-ending) का प्रयोग हिंदी की महत्वपूर्ण संरचना है। हिंदी में 'कर्ता+को' रूप का कर्म तथा क्रिया के रूपों के साथ प्रयोग कर अनेक भावों को अभिव्यक्त किया जाता है। जैसे—

(क) आवश्यकता सूचक

'कर्ता+को'	'कर्म'	'चाहिए'
अशोक को	मकान	चाहिए।
उसको / उसे	सब्जी	चाहिए।

(ख) उत्तरदायित्व सूचक

'कर्ता+को'	'-ना क्रिया'	'चाहिए'	
राम को	जाना	चाहिए	
राधा को	पढ़ना	चाहिए।	
'कर्ता+को'	'कर्म'	'-ना क्रिया'	'चाहिए'
मुझको / मुझे	फाइलें	देखनी	चाहिए।
उसको / उसे	काम	पूरा करना	चाहिए।
'कर्ता+को'	'कर्म + को'	'-ना क्रिया'	'चाहिए'
डाक्टर को	पहले मरीज को	देखना	चाहिए।
उसको / उसे	काम को	पूरा करना	चाहिए।

(ग) बाध्यता / विवशता / वचनबद्धता सूचक

'कर्ता+को'	'-ना क्रिया'	'होना'	
निदेशक को	मीटिंग में जाना	है।	
मुझको / मुझे	दो बजे स्टेशन पहुँचना	होगा।	
'कर्ता+को'	'कर्म'	'-ना क्रिया'	'होना'
आपको	यह काम (पु.)	करना	होगा।
आपको	चिट्ठी (स्त्री.)	लिखनी	है।

'बाध्यता' सूचक संरचना में 'होना' क्रिया के स्थान पर 'पढ़ना' क्रिया के प्रयोग से बाध्यता में अधिक तीव्रता आती है।

'कर्ता+को'	'क्रिया का मूल रूप +ना'	'पढ़ना'	
मुझको / मुझे	अक्सर दूर पर जाना	पड़ता है।	
'कर्ता+को'	'कर्म'	'क्रिया का मूल रूप + ना'	'पढ़ना'
आपको	ये फाइलें	आज ही पेश करनी	पढ़ेंगी।

(घ) शारीरिक / मानसिक स्थिति सूचक

'कर्ता+को'	'संज्ञा'	'क्रिया' (होना / आना / लगना)
अशोक को	बुखार	है / था।
मोहन को	इस बात का दुख	है / था।
गीता को	गुस्सा	आया।
मोहन को	दया	आई।
सीता को	चोट	लगी।
रमेश को	सर्दी	लगती है।

(ङ) ज्ञान / जानकारी / कौशल सूचक

'कर्ता+को'	'संज्ञा'	'क्रिया' (आना, पता होना, मालूम होना, जानकारी होना)
अशोक को	मराठी	आती है।
मुझे	स्कूटर चलाना	आता है।
हमें	इस बात का	पता है।
पवन को	यह बात	मालूम है।
उसे मेरे	घर की समस्याओं की	जानकारी है।

(च) रुचि सूचक

‘कर्ता+को’	‘कर्म’	‘क्रिया’ (पसंद होना, पसंद आना)
गीता को	यह साड़ी	पसंद है।
मुझको / मुझे	यह होटल	पसंद नहीं आया।

(छ)

‘कर्ता+को’	‘कर्म’	‘क्रिया’ (विभिन्न क्रियाएँ)
आलोक को	रुपए	मिले / प्राप्त हुए।
मुझे	आपका पत्र	मिला / प्राप्त हुआ।
‘कर्ता+को’	‘कर्म (व्यक्ति)’	‘क्रिया’ (विभिन्न क्रियाएँ)
मुझे	उसका भाई	मिला।
‘कर्ता+को’	‘कर्म’	‘जरूरत / आवश्यकता / होना’
मुझे	रुपयों की	जरूरत है।
‘कर्ता+को’	‘कर्म’	‘स्वीकार होना’ - सहमति दर्शाना।
मुझे	तुम्हारा प्रस्ताव	स्वीकार है।

5.2 ‘कर्ता + ने’ संरचना

कारक (Case) प्रकरण में कर्ता कारक की विभक्ति 0 (शून्य) तथा ‘ने’ बताई गई है। कर्ता के साथ ‘ने’ का प्रयोग कुछ विशेष परिस्थितियों में होता है। वे स्थितियाँ इस संरचना की विशेषताएँ हैं। जैसे—

(क) क्रिया का सकर्मक होना और वाक्य में उसके भूतकालिक रूप का प्रयोग होना। भूतकालिक रूप निम्नलिखित है :—

क्रिया ‘देखना’ -

सामान्य भूतकाल	- देखा
पूर्ण वर्तमान काल	- देखा है
पूर्ण भूतकाल	- देखा था
संदिग्ध भूतकाल	- देखा होगा

(ख) कर्ता के साथ ‘ने’ लगने पर क्रिया की अन्विति लिंग, वचन, कारक के स्तर पर कर्म से होती है।

उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखिए :—

कर्ता	कर्म	क्रिया
मि. ब्राउन ने	आगरा का टिकट (पु. एक.)	खरीदा
मैंने	आपका काम (पु. एक.)	नहीं किया
हमने	लता का गाना (पु. एक.)	नहीं सुना।
टैक्सीवाले ने	सौ रुपए (पु. बहु.)	लिए।
अशोक ने	नए जूते (पु. बहु.)	खरीदे।
आपके मित्र ने	एक नई घड़ी (स्त्री. एक.)	खरीदी।
क्या आपने	मेरी नई कार (स्त्री. एक.)	देखी ?
मैंने	कुछ साड़ियाँ (स्त्री. बहु.)	खरीदीं।
शीला ने	इस साल एक छोटा टेलीविजन (पु. एक.)	खरीदा है।
नौकरानी ने	अभी तक मेरे कपड़े (पु. बहु.)	नहीं धोए हैं।
अशोक ने	कल बहुत-सी चिट्ठियाँ (पु. बहु.)	लिखी थीं।
अशोक ने	केला (पु. एक.)	खरीदा था / खरीदा होगा।
अशोक ने	केले (पु. बहु.)	खरीदे थे / खरीदे होंगे।
अशोक ने	कमीज (स्त्री. एक.)	खरीदी थी / खरीदी होगी।
अशोक ने	कमीजें (स्त्री. बहु.)	खरीदीं थीं / खरीदी होंगी।
उन्होंने	पिछले साल एक मकान (पु. एक.)	खरीदा था।
स्टेनो ने	कल बहुत-सी चिट्ठियाँ (स्त्री. बहु.)	टाइप की थीं।
रामलाल ने	एक कार (स्त्री. एक.)	खरीदी होगी।

लाना, बोलना, भूलना, इस नियम के अपवाद हैं –

मोहन किताब लाया।

राधा कुछ नहीं लाई।

मोहन कुछ नहीं बोला।

राधा भी नहीं बोली।

रामलाल आपकी बात नहीं भूला।

(ग) 'कर्ता+ने' संरचना में यदि कर्म के साथ 'को' विभक्ति का प्रयोग हुआ हो तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होगी।

सास ने	बहू को	आशीर्वाद दिया।
पिता जी ने	लड़के (पु.) को	बुलाया।
	बहु (स्त्री.) को	
	नौकरों (पु. बहु.) को	
	बहुओं (स्त्री. बहु.) को	
मैंने	उस घड़ी को	बेच दिया।
चिड़ियाघर में बच्चों ने	कंगारू के बच्चों को	देखा।

(घ) द्विकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में क्रिया की अन्विति विभक्तिहीन कर्म से होती है।

दयालु व्यक्ति ने गरीबों को	एक-एक रुपया (पु. एकवचन)	दिया।
	दो-दो कंबल (पु. बहुवचन)	दिए।
	एक-एक थाली (स्त्री. एकवचन)	दी।
	दो-दो कटोरियाँ (स्त्री. बहुवचन)	दीं।

कर्ता+ने के साथ सकर्मक क्रिया के भूतकालिक रूप

मोहन ने	किताब (स्त्री.)	पढ़ी।	पढ़ी है।	पढ़ी थी।	पढ़ी होगी।
शीला ने	खाना (पु.)	खाया।	खाया है।	खाया था।	खाया होगा।
गुप्ता जी ने	साड़ी (स्त्री. एक.)	खरीदी।	खरीदी है।	खरीदी थी।	खरीदी होगी।
गुप्ता जी ने	साड़ियाँ (स्त्री.एक.)	खरीदीं।	खरीदी हैं।	खरीदी थीं।	खरीदी होंगी।

'कर्ता+ ने' के साथ 'कर्म+को' का प्रयोग

बच्चे ने	खिलौने को	तोड़ा।	तोड़ा है।	तोड़ा था।	तोड़ा होगा।
पुलिस ने	गाड़ियों को	रोका।	रोका है।	रोका था।	रोका होगा।
मैंने	चिट्ठी को	पढ़ा।	पढ़ा है।	पढ़ा था।	पढ़ा होगा।
राधा ने	चिट्ठियों को	पढ़ा।	पढ़ा है।	पढ़ा था।	पढ़ा होगा।
पिता जी ने	लड़के को	बुलाया।	बुलाया है।	बुलाया था।	बुलाया होगा।

6.0 नाटक

परीक्षा

(एकांकी - नाटक)

पात्र : गुरु द्रोणाचार्य

शिष्य : 1. युधिष्ठिर, 2 भीम, 3 अर्जुन, 4. दुर्योधन

स्थान : गुरु द्रोणाचार्य का आश्रम।

(स्टेज पर एक पेड़ की शाखा साफ दिखाई दे रही है। उस शाखा पर नीले रंग के कपड़े की एक चिड़िया है। सभी शिष्यों के हाथों में तीर-कमान हैं। उनकी पीठ पर तीरों से भरे हुए तरकश हैं। पर्दा उठते ही सब शिष्य कहते हैं – प्रणाम, गुरुदेव ! गुरु द्रोणाचार्य अपना दायाँ हाथ उठाकर शिष्यों को आशीर्वाद देते हैं।

द्रोणाचार्य : आज मैं तुम लोगों की परीक्षा लेना चाहता हूँ।

सभी शिष्य : जो आज्ञा, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : देखो, इस पेड़ पर एक चिड़िया है। यही तुम्हारा निशाना है। तुम्हें इस पर तीर चलाना है। तैयार हो जाओ।

द्रोणाचार्य : युधिष्ठिर, पहले तुम आगे आओ और निशाना साधो।

युधिष्ठिर : जो आज्ञा, गुरुदेव ।

द्रोणाचार्य : ठहरो, तीर चलाने से पहले मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

युधिष्ठिर : पूछिए, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : क्या तुम उस चिड़िया को देख रहे हो ?

युधिष्ठिर : हाँ, गुरुदेव ! वह चिड़िया मुझे साफ-साफ दिखाई दे रही है।

द्रोणाचार्य : क्या तुम उस पेड़ को भी देख रहो हो।

भीम : गुरु जी, यह पेड़ तो मुझे भी साफ दिखाई दे रहा है। अगर आप कहें तो मैं इसे अभी उखाड़कर फेंक सकता हूँ। और उस चिड़िया को तो दोनों हाथों के बीच दबाकर यों मसल सकता हूँ।

द्रोणाचार्य : भीम, जब तक बात समझ में न आए, तुम बीच में मत बोला करो।

दुर्योधन : यह पहलवानी नहीं है भैया, कुश्ती लड़ने और तीर चलाने में बहुत अंतर होता है।

भीम : तुम चुप रहो, दुर्योधन।

द्रोणाचार्य : हाँ, युधिष्ठिर ! अब तुम बताओ कि चिड़िया के अलावा क्या तुम्हें इस पेड़ की पत्तियाँ, फल, फूल, मैं, भीम और अर्जुन – ये सभी दिखाई दे रहे हैं ?

युधिष्ठिर : हाँ गुरुदेव ! मुझे सब कुछ साफ-साफ दिखाई दे रहा है।

द्रोणाचार्य : तुम्हारे उत्तर से मुझे संतोष नहीं हुआ। अच्छा, अब तुम एक ओर हट जाओ।

दुर्योधन : अगर आप कहें तो मैं सामने आऊँ, गुरुदेव !

भीम : रुको दुर्योधन ! अब मेरी बारी है।

द्रोणाचार्य : जल्दी मत करो। तुम आगे आओ दुर्योधन और निशाना लगाने के लिए तैयार हो जाओ।

दुर्योधन : जो आज्ञा, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : क्या अब तुम तैयार हो, दुर्योधन।

दुर्योधन : हाँ, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : तो बताओ, तुम्हें क्या-क्या दिखाई दे रहा है ?

दुर्योधन : गुरुदेव ! मैं इस पेड़ की शाखा पर लगे हुए पत्ते, फूल, फल, पेड़ की छाया और आप सब लोगों को साफ-साफ देख रहा हूँ।

द्रोणाचार्य : लेकिन तुम्हें जो देखना चाहिए वह नहीं देख रहे। अच्छा तुम भी पीछे हट जाओ।

दुर्योधन : जो आज्ञा।

भीम : मैंने तो पहले ही कहा था, तुम्हारी निगाह हमेशा फल पर रहती है, निशाने पर नहीं (हा! हा! हा!) अब मैं परीक्षा दूँगा। देखना, मैं कैसा उत्तर देता हूँ।

द्रोणाचार्य : भीम, मैं तुम्हारे उत्साह की प्रशंसा करता हूँ। लेकिन तुमसे पहले मैं अर्जुन की परीक्षा लेना चाहता हूँ। आओ, अर्जुन !

अर्जुन : जो आज्ञा, गुरुदेव ! अब पूछिए, गुरुदेव।

द्रोणाचार्य : क्या तुम तैयार हो ?

अर्जुन : मैं बिल्कुल तैयार हूँ, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : तुम चिड़िया के अलावा शाखा, पत्ते, फूल और हम सबको भी देख रहे हो न ?

अर्जुन : बिल्कुल नहीं, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : क्या मतलब तुम्हें कुछ नहीं दिखाई दे रहा, अर्जुन ?

अर्जुन : कुछ नहीं, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : बड़ा आश्चर्य है। ठीक-ठीक बताओ, तुम्हें आखिर क्या दिखाई दे रहा है ?

अर्जुन : गुरुदेव ! मुझे तो केवल चिड़िया दिखाई दे रही है। और चिड़िया का भी केवल सिर साफ दिखाई दे रहा है।

द्रोणाचार्य : इसके अलावा और कुछ।

अर्जुन : न पेड़, न फल, न फूल, न पत्ते, न आप और न दूसरे भाई। मुझे तो केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।

भीम : (हा!! हा!! हा!!) बड़ा मूर्ख है।

दुर्योधन : ऐसा लगता है जैसे इसकी आँखें खराब हो गई हैं।

द्रोणाचार्य : शाबाश, अर्जुन ! चिड़िया पर तीर चलाओ। (अर्जुन का तीर छूटते ही चिड़िया जमीन पर गिर पड़ती है।)

द्रोणाचार्य : (अर्जुन की पीठ ठोकते हुए।) केवल तुम्हीं आज की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, अर्जुन। विद्यार्थी को अपना निशाना ही दिखाई देना चाहिए, और कुछ नहीं। आस-पास की चीजों पर ध्यान चले जाने से निशाना ठीक नहीं बैठता।

भीम : मेरी परीक्षा? मेरी, गुरुदेव !

द्रोणाचार्य : तुम्हारी परीक्षा किसी दूसरी तरह की होगी भीम, घबराओ मत। चलो, अब चलें।

(पर्दा गिर जाता है।)

शब्दावली Vocabulary

तीर कमान	bow and arrow
निशाना	target
निशाना साधना	to aim at the target
तरकश	quiver
साफ-साफ	clearly
उखाड़ना	to pull out
फेंकना	to throw
दबाना	to press
मसलना	to rub
पहलवानी	form of wrestling
कुश्ती लड़ना	wrestling
बारी	turn
छाया	shade
निगाह	sight
उत्साह	enthusiasm
तीर छूटना	to shoot on arrow
पीठ ठोकना	to encourage
उत्तीर्ण होना	to pass

पाठ-4 : शब्द रचना

1.0	शब्द रचना	67
1.1	शब्द रचना से अभिप्राय	67
1.2	शब्द रचना प्रक्रिया	67
1.2.1	उपसर्ग द्वारा शब्द निर्माण	68
1.2.2	प्रत्यय द्वारा शब्द निर्माण	72
1.2.3	संधि द्वारा शब्द निर्माण	77
1.2.4	समास द्वारा शब्द निर्माण	79
1.3	शब्द संपदा	80
1.4	सहायक सामग्री	82
	– कहावतें / लोकोक्तियाँ	82
	– मुहावरे	85
	– पर्यायवाची शब्द	87
	– अनेकार्थी शब्द	88
	– विलोम शब्द	90

1.0 शब्द रचना

शब्द अथवा पद से वाक्य की रचना होती है। शब्द एक निश्चित क्रम में रहकर वाक्य की रचना करते हैं। वाक्य भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वाक्य पदों से ही बनते हैं। शब्दों की रचना, उनका प्रयोग, वाक्य में उनकी स्थिति भाषा के व्याकरण का विषय है। इस पाठ में हिंदी शब्दों के निर्माण तथा शब्द संपदा के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाएगी।

1.1 शब्द रचना से अभिप्राय

शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब पद कहलाते हैं। उदाहरण के लिए एक वाक्य लें –

‘जंगल में शेर और हाथी लड़ रहे थे।’ इस वाक्य में प्रयुक्त जंगल, शेर, हाथी, लड़ ये चारों शब्द कोश में उपलब्ध होंगे। पर वाक्य में प्रयुक्त होने पर ‘जंगल’ अधिकरण कारक में है। ‘शेर’ और ‘हाथी’ कर्ता हैं। ‘लड़’ क्रिया के साथ ‘रहे थे’ अपूर्ण भूतकाल बताया है। इस तरह वाक्य में शब्द पद बन जाते हैं।

‘शब्द रचना’ के अंतर्गत कुछ विशेष शब्दावली का प्रयोग किया जाएगा जिनको समझना आवश्यक है।

व्युत्पत्ति (Derivation) के अनुसार शब्द दो प्रकार के हैं – (1) रूढ़, (2) यौगिक

रूढ़ वे शब्द हैं जिनके साथ और कोई शब्द न जुड़ा हो, जैसे–

मकान, दीपक, खर्च, पानी, मतलब, दूध आदि।

यौगिक शब्द वे हैं जो अन्य किसी शब्द या प्रत्यय (Affix) से मिलकर बनते हैं, जैसे–

मतलबी, खर्चीला, दूधवाला आदि।

प्रत्यय (Affix) प्रायः स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त नहीं होते। वे मूल (Root) शब्दों के साथ भाषिक नियमों के अनुसार जोड़े जाते हैं। जो प्रत्यय प्रारंभ में जोड़े जाते हैं उन्हें **उपसर्ग या पूर्व प्रत्यय (Prefix)** कहा जाता है। जैसे–

शांत	के पूर्व ‘अ’ पूर्व प्रत्यय लगकर	अशांत
ज्ञान		अज्ञान
मर		अमर शब्द बनते हैं।

जो प्रत्यय शब्द के बाद में जोड़े जाते हैं उन्हें **परसर्ग या प्रत्यय (Suffix)** कहते हैं, जैसे–

मकान + वाला = मकानवाला

ज्ञान + वान = ज्ञानवान

ज्ञान + ई = ज्ञानी

साथ + ई = साथी

कोमल + ता = कोमलता

1.2 शब्द रचना प्रक्रिया

हिंदी में नए शब्द गढ़ने की चार विधियाँ हैं –

- (1) उपसर्ग (Prefix) लगाकर
- (2) प्रत्यय (Suffix) लगाकर
- (3) संधि द्वारा तथा
- (4) समास द्वारा।

1.2.1 उपसर्ग द्वारा शब्द निर्माण

संस्कृत ही हिंदी शब्दों का स्रोत है। हिंदी में भी संस्कृत के शब्द तत्सम रूप में आए हैं – तत्सम का अर्थ है उसी रूप में। उसी तरह उपसर्ग (Prefix) और प्रत्यय (Suffix) भी संस्कृत से लिए गए हैं। ये दोनों तत्सम शब्दों के साथ ही जोड़े जाते हैं।

उपसर्ग के प्रयोग से मूल शब्द के अर्थ में

- (1) विशिष्टता आ जाती है।
- (2) किन्हीं स्थितियों में अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।

कुछ उपसर्ग नीचे दिए जा रहे हैं :-

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
अप	कमी, लघुता, गलत	अपमान	निरादर
		अपकार	बुरा अथवा नुकसान करना
		अपहरण	गलत तरीके से ले जाना
		अपकीर्ति अपयश	यश एवं कीर्ति का क्षय होना
अनु	पीछे, पश्चात	अनुसरण	पीछे चलना (to follow)
		अनुकरण	नकल करना (to imitate)
		अनुचर	पीछे चलने वाला (नौकर)
		अनुवाद	बाद में कहा गया (translation)
अति	अधिक, ऊपर	अतिक्रमण	उल्लंघन, सीमा के पार जाना
		अत्याचार	ज्यादती
अधि	उच्चतर, श्रेष्ठ	अधिकार	स्वामित्व
		अधिपति	मालिक, स्वामी
		अध्यक्ष	उच्च अधिकारी
अव	हीनता, पतन, गिरना	अवनति	उन्नति का विलोम (downfall)
		अवगुण	बुराई

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
आ	और, विरोध, पर्यंत, तक	आक्रोश	अधिक गुस्सा
		आगमन	आना (गमन का उलटा)
		आजीवन	जीवनभर
		आकंठ	कंठ (गले) तक
उद् / उत्	ऊपर	उत्थान	ऊपर चढ़ना, उन्नति
		उद्गम	(नदी के) निकलने का स्थान
		उत्पन्न	पैदा होना
उप	कम महत्व का, गौण, छोटा	उपसभापति	सभापति से (पद में) छोटा
		उपवन	छोटा वन, छोटा बाग
		उपनाम	गौण नाम
		उपमंत्री	मंत्री से छोटा
दूः / दूर	बुरा, हीन	दुर्जन	खराब व्यक्ति
		दुर्बल	कमजोर
		दुर्दिन	खराब दिन / समय
		दुर्गुण	बुराई, खराबी
		दुराचार	खराब आचार (misconduct)
निः / निर्	न होना, निषेध	निर्जन	जहाँ किसी जन का वास न हो
		निर्जीव	जिसमें जान न हो / जीवन न हो
		निषेध	मना होना / मना करना, रोकना
		निर्मल	स्वच्छ, बिना मल / धूल के बिना
प्र	अधिक, ऊपर, आगे, विशेष	प्रगति	उत्थान, उन्नति, आगे होना या बढ़ना
		प्रख्यात	प्रसिद्ध (famous)
		प्रयोग	काम में लाना (in use)
		प्रणाम	नमस्कार (bowing, wishing)
		प्रबल	अधिक बलशाली
प्रति	विरोध, रोकना, बराबर	प्रतिकार	विरोध करना, बदला लेना
		प्रतिदान	दान के बदले दान

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
प्रति		प्रतिकूल	विरुद्ध, उलटा
		प्रतिरोध	रोकना, रुकावट डालना
परा	उलटा, विरुद्ध	पराजय	हार
		पराकाष्ठा	चरम सीमा
		पराभव	हार
परि	चहुँतरफा, चारों ओर, आसपास	परिक्रमा	चारों ओर घूमना
		परिचय	जानकारी
		परिपूर्ण	पूरा
		परिजन	संबंधी
वि	बाहर, विशेष, उलटा, भिन्नता	विदेश	देश के बाहर का देश, अन्य देश, विख्यात
		विगत	बीता हुआ
		वियोग	अलग होना या बिछुड़ना (separation)
सम	बराबर, सामने, समान	सम्मुख	मुख के सामने, साने (in front, face-to-face)
		संन्यास	विरक्ति (renunciation)
		संतोष	तृप्ति (satisfaction)
		संगम	मिलन (confluence)
सु	अच्छा, सरल	सुकर्म	अच्छा काम
		सुदिन	अच्छा दिन
		सुलभ	सरलता से प्राप्य
		सुशील	अच्छे आचरण वाला
		सुगम	सरल (easily accessible)

पिछले पृष्ठों में तत्सम उपसर्गों की चर्चा की गई। कुछ ऐसे भी उपसर्ग हैं जो संस्कृत के उपसर्गों से विकसित हुए हैं। इन्हें हम तद्भव (उससे निकले / उससे जन्मे / उससे प्राप्त) उपसर्ग कह सकते हैं। इनमें से कुछ का विवरण आगे दिया जा रहा है।

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
अ / अन	अभाव, न होना, विपरित	अथाह	जिसकी थाह न मिले
		अनजान	अनभिज्ञ, जिसे जानकारी न हो
		अनपढ़	वह जो पढ़ना नहीं जानता
		अनबन	मनमुटाव
		अयोग्य	जो योग्य न हो
		असफल	जो सफल / कामयाब न हो
क, कु	बुरा, खराब	कपूत / कुपूत	बुरा पुत्र
		कुकर्म	खराब काम, बुरा काम
		कुरूप	बदसूरत
दु	बुरा, खराब	दुबला	कमजोर, दुर्बल
		दुकाल	अकाल
नि	न होना, अभाव	निडर	जो न डरता हो
		निकम्मा	बेकार, जिसे कोई काम न हो
पर	दूसरा, अन्य	परलोक	अन्य लोक
बिन	बिना, अभाव	बिन देखा	न देखा हुआ
भर	पूरा	भरपेट	पेट भरकर
		भरपूर	पूरी तरह
स	सहित	सफल	फल सहित
		समूल	जड़सहित
सह	साथ	सहचर	साथी
		सहपाठी	साथ में पढ़ने वाला

भारत में मुसलमानों के आगमन से अरबी, फारसी, तुर्की शब्दों से भी हिंदी के शब्द भंडार की अभिवृद्धि हुई। शब्दों के अतिरिक्त कई उपसर्ग तथा प्रत्यय भी आए। कुछ अधिक प्रचलित उपसर्ग नीचे दिए जा रहे हैं :-

उपसर्ग	द्योतित अर्थ	व्युत्पन्न शब्द	अर्थ
कम	थोड़ा कम	कमसिन	कम आयु वाला
		कमबख्त	कम भाग्यवान
		कमजोर	दुर्बल

खुश	अच्छा	खुशबू	सुगंध
		खुश किस्मत खुश नसीब	अच्छा भाग्य अच्छे भाग्य वाला
गैर	न होना	गैर जिम्मेदार	जो अपनी जिम्मेदारी न समझे (irresponsible)
		गैर हाजिर	अनुपस्थित
ना	उलटा	नासमझ	जिसमें समझ न हो
		नापसंद	जो पसंद न हो
बद	खराब	बदनाम	खराब नाम, किसी बुराई के कारण निंदनीय
		बदजुबां	गंदी जुबान वाला
बे	विरुद्ध, उलटा	बेकार	बिना काम के
		बेदाग	जिसमें दाग या धब्बा न हो
		बेचारा	असहाय
		बेईमान	जिसमें ईमानदारी न हो
बिला	बिना	बिलावजह	बिना कारण
ला	अभाव	लाइलाज	जिसका इलाज न हो (incurable)
		लापरवाह	जो सावधान न रहे (careless)

1.2.2 प्रत्यय द्वारा शब्द निर्माण

हिंदी में प्रत्यय की सहायता से बहुत से शब्द बनाए जाते हैं। इनकी सूची बहुत लंबी है। कुछ परसर्गों या प्रत्ययों से बनाए गए कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं :-

—ई	अच्छा	→	अच्छाई	दुख	→	दुखी
	बुरा	→	बुराई	सुख	→	सुखी
	ऊँचा	→	ऊँचाई	लोभ	→	लोभी
—आई	लिख	→	लिखाई	देख	→	दिखाई
	पढ़	→	पढ़ाई	सुन	→	सुनाई
—ता	सभ्य	→	सभ्यता	वीर	→	वीरता
	नम्र	→	नम्रता	लघु	→	लघुता
	क्रूर	→	क्रूरता	धूर्त	→	धूर्तता

—क	रक्षा	→	रक्षक	निंदा	→	निंदक
	शिक्षा	→	शिक्षक	पाठ	→	पाठक
	चाल	→	चालक	लेख	→	लेखक
—कार	कला	→	कलाकार	मूर्ति	→	मूर्तिकार
	चित्र	→	चित्रकार	शिल्प	→	शिल्पकार
	पत्र	→	पत्रकार	निबंध	→	निबंधकार
	साहित्य	→	साहित्यकार			
—पा	बूढ़ा	→	बुढ़ापा	मोटा	→	मोटापा
—पन	बच्चा	→	बचपन	पागल	→	पागलपन
	लड़का	→	लड़कपन	दीवाना	→	दीवानापन
—आलु / आलू	दया	→	दयालु	झगड़ा	→	झगड़ालू
—दार	शान	→	शानदार	जान	→	जानदार
	इज्जत	→	इज्जतदार			

ऐसे ही और कई प्रत्यय (Suffix) हैं, जैसे—

—अक्कड़	भुलक्कड़ (भूलने वाला)	forgetful
	पियक्कड़ (पीने वाला)	drunkard
	घुमक्कड़ (घूमने वाला)	wanderer
—आऊ	टिकाऊ (ज्यादा दिन चलने / टिकने वाला)	lasting
	कमाऊ (कमाने वाला)	earning
	दिखाऊ (केवल दिखाने लायक)	showy
	जड़ाऊ (जिसमें कीमती पत्थर लगे हों)	gemstudded
—आड़ी	खिलाड़ी (खेलने वाला)	player
	अनाड़ी (न जानने वाला)	ignorant
—आर	लोहार	black smith
	कुम्हार	potter
—आरी	पुजारी	one who adores in temple
	भिखारी	beggar

-आवा	दिखावा	showy
	पहनावा	dress
-आवट	बनावट	make
	सजावट	decoration
	रुकावट	obstruction
	गिरावट	downfall
-आस	मिठास	sweetness
	खटास	sourness
-बाज	चालबाज	trickster
	धोखेबाज, दगाबाज	deceitful
-ला	अगला	next
	पिछला	previous, back
	निचला	lower
-वान	गाड़ीवान	coachman
	धनवान	wealthy
	बलवान	strong
	भाग्यवान	lucky
-हारा	लकड़हारा	woodcutter
	पालनहारा	one who takes care of (God)
-शाली	बलशाली	powerful
	भाग्यशाली	lucky
	शक्तिशाली	strong
-वर्ती	परवर्ती - बाद वाला	later
	पूर्ववर्ती - पहले वाला	former
	अनुवर्ती - बाद में होने वाला	succeeding, consequent

प्रयोग के आधार पर प्रत्यय दो वर्गों में बाँटे गए हैं, जिनका परिचय नीचे दिया जा रहा है :-

कृत और तद्धित प्रत्यय

1. 'कृत' प्रत्यय वे हैं जो प्रायः क्रियाओं से जुड़ते हैं और इनके मेल से बने शब्द कृदंत कहे जाते हैं। ये प्रत्यय क्रिया या धातु को नया रूप देते हैं। इनसे संज्ञा और विशेषणों का निर्माण होता है। जैसे—

—आई	लड़ना	› लड़ाई, पढ़ना	› पढ़ाई	
—आप	मिलना	› मिलाप		
—आवट	मिलाना	› मिलावट, लिखना	› लिखावट, बनना	› बनावट
—त	बचना	› बचत		
—आऊ	बिकना	› बिकाऊ, जलना	› जलाऊ	
—क	तैरना	› तैराक		

'कृत' प्रत्यय निम्नलिखित हैं :—

- (क) वर्तमानकालिक कृदंत (Present Participle) और भूतकालिक कृदंत (Past Participle) भी कृत प्रत्यय की सहायता से बने शब्द हैं।

बहता पानी साफ रहता है।

बहता हुआ पानी साफ रहता है।

बहता / बहता हुआ विशेषण की तरह प्रयुक्त है। यह वर्तमान कालिक कृदंत है।

- (ख) पढ़ा पाठ दुबारा क्यों पढ़ूँ ?

पढ़ा हुआ पाठ दुबारा पढ़कर सुनाओ।

पढ़ा / पढ़ा हुआ भूतकालिक कृदंत है और विशेषण की तरह प्रयुक्त हो रहा है।

- (ग) कर्तृवाचक संज्ञा - गाना › गायक, गवैया

चलाना › चाल, चालक, चलाने वाला

- (घ) क्रियार्थक संज्ञा - तैरना › तैराक, लड़ना › लड़ाकू

2. तद्धित प्रत्यय – संज्ञा और विशेषण के अंत में लगने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहे जाते हैं। उदाहरण के लिए ऐसे कुछ प्रत्यय नीचे दिए जा रहे हैं :—

—ता	विचित्र	→	विचित्रता	peculiarity
	मित्र	→	मित्रता	friendship
—पा	मोटा	→	मोटापा	fatness, obesity
	बूढ़ा	→	बुढ़ापा	old age
—ई	बुद्धिमान	→	बुद्धिमानी	wisdom
	समझदार	→	समझदारी	
—वाला	गाड़ी	→	गाड़ीवाला	

-आई	भला	→	भलाई	
	बुरा	→	बुराई	
	पंडित	→	पंडिताई	

प्रत्यय द्वारा लिंग परिवर्तन

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए प्रयुक्त परसर्ग

प्रत्यय	पुल्लिंग - स्त्रीलिंग	पुल्लिंग - स्त्रीलिंग
-ई	लड़का - लड़की	बेटा - बेटी
	देव - देवी	दादा - दादी
	हिरन - हिरनी	कुमार - कुमारी
-इन	माली - मालिन	साँप - साँपिन
	नाग - नागिन	
-नी	ऊँट - ऊँटनी	मोर - मोरनी
-आनी	सेठ - सेठानी	जेठ - जेठानी
	नौकर - नौकरानी	
-आइन	ठाकुर - ठाकुराइन	बाबू - बबुआइन
	पंडित - पंडिताइन	

कई स्त्रीलिंग शब्दों में प्रत्यय लगाकर पुल्लिंग शब्द बनाए जाते हैं जैसे—

भैंस (स्त्री.) - भैंसा (पु.), बहिन - बहनोई ननद - ननदोई

लिंग परिवर्तन

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
प्रत्यय -आ	प्रियतम	प्रियतमा
	आचार्य	आचार्या
	महोदय	महोदया
	भवदीय	भवदीया
प्रत्यय -ई	सखा	सखी
	नर	नारी
	पुत्र	पुत्री

विभिन्न शब्द	कवि	कवयित्री
	पुरुष	स्त्री
	राजा	रानी
	वर	वधू
	विद्वान	विदुषी
	श्रीमान	श्रीमती
	युवा	युवती

मनुष्येतर प्राणियों में से कुछ के स्त्रीलिंग पुल्लिंग बनाने के लिए शब्दों के सामने क्रमशः मादा अथवा नर लगाया जाता है।

मादा भेड़िया	-	नर भेड़िया
she wolf	-	he wolf
मादा कौआ	-	नर कौआ
she crow	-	he crow

1.2.3 संधि द्वारा शब्द निर्माण

जब दो या अधिक तत्सम शब्दों की निकटता से, पहले खंड के अंत्याक्षर (last letter) के दूसरे शब्द के आद्य अक्षर (first letter) से मिल जाने पर एक भिन्न अक्षर निर्मित होता है तब इस मेल को संधि कहते हैं। संधि के तीन प्रकार हैं।

(1) स्वर संधि : जब स्वर से स्वर का मेल होता है, तब स्वर संधि होती है। जैसे—

	प्रथम शब्द का अंत्याक्षर	दूसरे शब्द का आद्यक्षर	संधि रूप	व्युत्पन्न शब्द
राम + अवतार	अ	अ	आ	रामावतार
राम + आधार	अ	आ	आ	रामाधार
विद्या + अध्ययन	आ	अ	आ	विद्याध्ययन
रवि + इंद्र	इ	इ	ई	रवींद्र
गिरि + ईश	इ	ई	ई	गिरीश
मही + इंद्र	ई	इ	ई	महींद्र
नदी + ईश	ई	ई	ई	नदीश

इसी तरह

उ + उ / उ + ऊ / ऊ + उ / ऊ + ऊ = ऊ होता है।

अ + इ / अ + ई / आ + इ / आ + ई = ए होता है।

अ + अ / अ + ऊ / आ + उ / आ + ऊ = ओ होता है।

अ + ए / अ + ऐ / आ + ए / आ + ऐ = ऐ होता है।

अ + ओ / आ + ओ / अ + औ / आ + औ = औ होता है।

पर + उपकार अ + उ = ओ - परोपकार

महा + ऋषि आ + ऋ = अर - महर्षि

मत + ऐक्य अ + ऐ = ऐ - मतैक्य

सदा + एव आ + ए = ऐ - सदैव

अति + आचार इ + आ = या - अत्याचार

प्रति + उपकार इ + उ = यु - प्रत्युपकार

प्रति + एक इ + ए = ये - प्रत्येक

सु + आगत उ + आ = वा - स्वागत

सूर्य + उदय अ + उ = ओ - सूर्योदय

(2) व्यंजन संधि : जब व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तब व्यंजन संधि होती है।
जैसे—

सत् + आनंद = सदानंद

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

जगत् + ईश = जगदीश

वाक् + ईश = वागीश

उत् + घाटन = उद्घाटन

उत् + लास = उल्लास

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

चित् + मय = चिन्मय

सत् + धर्म = सद्धर्म

सत् + जन = सज्जन

भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति

उत् + डयन = उड्डयन

(3) विसर्ग संधि : जब विसर्ग से स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तब विसर्ग संधि होती है।

हिंदी में अः अनुस्वार है। इस विसर्ग (:) ध्वनि में अंत होने वाले कुछ तत्सम शब्द हिंदी खड़ी बोली में प्रयुक्त होते हैं। जैसे क्रमशः = gradually, पुनः = again, स्वतः = self

निः + चल = निश्चल

निः + संदेह = निस्संदेह

निः + फल = निष्फल

निः + कपट = निष्कपट

निः + बल = निर्बल

निः + जन = निर्जन

निः + रस = नीरस

निः + आशा = निराशा

निः + छल = निश्छल

निः + रोग = नीरोग

1.2.4. समास द्वारा शब्द निर्माण

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। समास का उद्देश्य है कम शब्दों में अधिक भाव व्यक्त करना। संधि में भी दो शब्दों का सम्मिलन होता है, पर उसमें दो ध्वनियों के मेल से नई ध्वनि बनती है। समास में दो ध्वनियों के मेल से नई ध्वनि का निर्माण नहीं होता। बीच में आने वाले प्रत्यय या विभक्ति का लोप हो जाता है। निम्नलिखित वाक्य देखिए :-

मेरे माता-पिता दिल्ली में रहते हैं।

‘माता-पिता’ सामासिक शब्द हैं जिसे होना चाहिए था माता और पिता। ‘और’ अव्यय का लोप करके दो शब्दों को समीप लाया गया है।

वीर सावरकर को देश-निकाला दिया गया।

‘देश-निकाला’ - देश से निकाला। यहाँ ‘से’ विभक्ति का लोप है।

सम्मिलित शब्दों के आधार पर समासों का नामकरण किया गया है। सबसे सरल और अधिक स्पष्ट द्वंद्व समास है जिसमें दो शब्दों के बीच आने वाले ‘और’, ‘अथवा’ / ‘या’ का लोप होता है। जैसे—

सुख-दुख	सुख	और	दुख
माँ-बाप	माँ		बाप
रुपया-पैसा	रुपया		पैसा
अच्छा-बुरा	अच्छा	या	बुरा
धर्म-अधर्म	धर्म		अधर्म

(धर्म + अधर्म अ + अ = आ संधि नियमों के अनुसार धर्माधर्म)

- (1) जिन सामासिक शब्दों में - को, में, पर, से इत्यादि विभक्ति प्रत्ययों का लोप हो वह तत्पुरुष समास कहलाता है। इसमें पहला पद गौण और दूसरा पद प्रधान होता है। जैसे—

मुँहमाँगा	मुँह	से	माँगा
देशभक्ति	देश	के लिए	भक्ति
जन्मरोगी	जन्म	से	रोगी
अवकाशप्राप्त	अवकाश	को	प्राप्त
सेनानायक	सेना	का	नायक

- (2) विशेषण और विशेष्य से बना समास कर्मधारय समास कहलाता है, यथा—

सामासिक पद	विशेषण	विशेष्य
नीलकमल	नीला +	कमल
काली मिर्च	काली +	मिर्च
नीलगाय	नीली +	गाय

- (3) इसी तरह यदि पहला संख्यावाचक विशेषण और दूसरा विशेष्य हो तो वहाँ द्विगु समास होता है। जैसे—

सामासिक पद	विशेषण	विशेष्य
दोपहर	दो	पहरों का समाहार
त्रिभुज	तीन	भुजाओं का समूह
त्रिभुवन	तीन	भुवनों का समूह
नवग्रह	नौ	ग्रहों का समूह

- (4) बहुब्रीहि समास में सम्मिलित शब्द अपना स्वतंत्र अर्थ न देकर किसी अन्य संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, यथा—

लंबोदर	लंबा + उदर (पेट)	लंबा है पेट जिसका	-	गणेश जी
नीलकंठ	नीला + कंठ (गला)	जिसका कंठ नीला है	-	भगवान शिव, एक पक्षी विशेष
त्रिनेत्र	तीन + नेत्र (आँख)	जिसकी तीन आँखें हैं	-	भगवान शंकर

- (5) जिस सामासिक शब्द में पहला शब्द अव्यय होता है और सम्मिलित शब्द क्रिया विशेषण की तरह प्रयुक्त होता है उस सामासिक शब्द को अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे—

वह प्रतिदिन टहलता है।

प्रेमचंद आजीवन साहित्य सेवा करते रहे।

देवव्रत आजन्म कुँवारा (Bachelor) रहा।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रतिदिन, आजीवन तथा आजन्म अव्ययीभाव समास है।

1.3 शब्द संपदा

भाषा में शब्दों को उनके प्रकार के अनुसार शब्द भेदों (Parts of Speech) में विभाजित किया जाता है। कहीं-कहीं एक शब्द भी पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराता है। उस दशा में वह वाक्य की भूमिका निभाता है। वस्तुतः वह संक्षिप्त वाक्य ही होता है। यथा—

आइए! चलें। यहाँ 'आइए' और 'चलें' शब्द हैं — पर ये संक्षिप्त वाक्य हैं।

आइए — आप आइए।

चलें! — हम चलें ?

'आइए' और 'चलें' में दो-दो ध्वनियाँ हैं।

आ + इए, चल + ऐँ।

'आ' और 'चल' अर्थमूलक इकाइयाँ हैं 'इए' और 'ऐँ' नहीं।

किसी भाषा के शब्द उस भाषा के शब्दकोष (Dictionary) में पाए जाते हैं। जिस भाषा में जितने अधिक शब्द होंगे वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध होगी और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता उतनी ही अधिक होगी।

भाषा गतिशील होती है। उसमें अलक्षित रूप से बदलाव आता रहता है। शब्दों के रूप बदल जाते हैं, अर्थ बदल जाते हैं। नए शब्द गढ़े जाते हैं। दूसरी बोलियों, अन्य देशी-विदेशी भाषाओं से शब्द लिए जाते हैं। इस तरह भाषा की शब्द संपदा में निरंतर वृद्धि होती जाती है।

उत्पत्ति या उद्गम की दृष्टि से हिंदी शब्दों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है :

(i) तत्सम (ii) तद्भव (iii) देशज / देशी (iv) विदेशी

(i) तत्सम

तत्सम का अर्थ है उसके समान। संस्कृत शब्दों का मूल प्रयोग करना ही तत्सम है। जैसे, प्रकाश, रवि, आकाश, अग्नि, अंतरिक्ष, वृक्ष, लता, जल, नदी, अर्थ, मानव, वाक्य इत्यादि। हिंदी में और भी ऐसे ही अनगिनत शब्द अपने तत्सम रूप में मिलते हैं।

(ii) तद्भव

तद्भव का अर्थ है उससे उत्पन्न, उससे निकला। संस्कृत के हजारों ऐसे शब्द हिंदी में हैं जिनका तद्भव रूप में प्रयोग मिलता है। जैसे—

संस्कृत (तत्सम)		हिंदी (तद्भव)
क्षेत्र	→	खेत
भ्रातृ	→	भाई
मयूर	→	मोर
ज्येष्ठ	→	जेठ
मुख	→	मुँह
चंद्र	→	चाँद
निद्रा	→	नींद
दुग्ध	→	दूध
वधू	→	बहू

(iii) देशज / देशी

देशज अथवा देशी शब्द वे हैं जिनके आगम के बारे में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। ये शब्द समसामयिक अन्य बोलियों से स्वीकृत हुए होंगे। जैसे—

जूता, लोटा, डिब्बा इत्यादि।

(iv) विदेशी

भारत में मुसलमानों के आगमन से हिंदी में अरबी, फारसी, तुर्की शब्द भी प्रयोग में आने लगे। हिंदी ने उन्हें अपना लिया और वे विदेशी नहीं रह गए, हिंदी के अभिन्न अंग बन गए।

अंग्रेजी के शब्द हिंदी में धड़ल्ले से प्रयुक्त हो रहे हैं।

अंग्रेजी शब्द

अफसर, डॉक्टर, नर्स, बोटल, इंजेक्शन, अस्पताल, पेन, पेंसिल, रेल, ट्रेन, टिकट, स्कूल, फुटबाल, सिनेमा, टैक्सी, नोटिस, मोटर, पेट्रोल, डीजल, मीटर, थर्मामीटर, साइकिल इत्यादि।

अरबी शब्द

अजीब	कीमत	दावा	आफत	जुरमाना	पैदावार
अदा	जहाज	नकद	चेहरा	दरबार	सौदागर
अमीर	तकिया	खबर	जादू	परदा	फीता
औलाद	दवा	गरीब	आलपिन	चाबी	
तारीख	मजबूर	तकदीर	किराना	तंबाकू	

1.4 सहायक सामग्री

कहावतें / लोकोक्तियाँ

कहावतें या लोकोक्तियाँ प्रायः किसी कहानी, प्रसंग या घटना से संबद्ध रहती हैं। प्रसंग, कहानियाँ या घटनाएँ तो लुप्त हो गईं पर उनसे बनी कहावतें प्रयोग में आने लगीं। उदाहरण के लिए एक कहानी नीचे दी जा रही है।

‘चोर की दाढ़ी में तिनका’

(Guilty mind is always suspicious)

बहुत पुरानी बात है। एक बहुत धनी ज़मींदार था। उसका नाम माधवराज था। उसके पास सोने का एक कीमती हार था। हर रात सोने से पहले जमींदार हार को गले से उतारकर अपने सिरहाने रख देता था। सुबह नहा-धोकर पहन लेता था। एक दिन उसका हार गुम हो गया। उसके घर में कई नौकर-चाकर थे। सभी को अलग-अलग बुलाकर उसने पूछा। सभी ने यही कहा, “हुजूर, मैंने आपका हार नहीं लिया है। चाहे जो भी कसम ले लें।”

ज़मींदार बड़ा चिंतित था। एक दिन उसका एक मित्र आया। जमींदार ने उसे यह बात बताई। उसका मित्र वनमाली बड़ा ही चतुर और सूझबूझ वाला था। उसने कहा, “माधवराज, चिंतित न हों, मैं पता लगा लूँगा कि हार किसने चुराया है।”

जमींदार ने कहा, “तुम कैसे पता लगा लोगे ? एक सप्ताह में मैंने सभी नौकरों से पूछताछ कर ली है। मैंने डराया, धमकाया, ईश्वर का डर दिखाया पर कोई असर नहीं पड़ा।”

वनमाली बोला : “तुम्हारे महल में कितने नौकर हैं?”

ज़मींदार : “पंद्रह”

वनमाली : “क्या कोई छुट्टी लेकर बाहर गया है ?”

ज़मींदार : “नहीं तो।”

वनमाली : “सभी नौकरों को बुलाओ। मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।”

जमींदार ने सभी नौकरों को बुलाकर वनमाली के सामने खड़ा कर दिया। वनमाली ने उनके नाम पूछे। सभी ने अपना-अपना नाम बता दिया। वनमाली बुदबुदाते हुए उनके आगे-पीछे चक्कर लगाने लगा। वह ऐसे बुदबुदा रहा था मानो कोई मंत्र पढ़ रहा हो।

सबके सामने खड़े होकर उसने जमींदार से कहा, “माधवराज, यहाँ मेरे पास खड़े हो जाओ। तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसने चोरी की है। मंत्र-शक्ति से मैं जान गया हूँ।”

माधवराज : “मुझे बताओ कौन है वह ?”

वनमाली : “नाम बताने की जरूरत नहीं। सामने देखो, चोर की दाढ़ी में तिनका है।” जिसने चोरी की थी उसने तुरंत दाढ़ी से तिनका हटाने का प्रयत्न किया। वनमाली ने कहा, “यही वह नौकर है जिसने तुम्हारा हार चुराया है।” उस नौकर ने चोरी करना स्वीकार कर लिया और उसने पैरों पर गिरकर क्षमा माँगी।

तब से “चोर की दाढ़ी में तिनका” कहावत चल पड़ी। अर्थ हुआ, जो गलती करता है उसे शंका बनी रहती है। अंग्रेजी में कहा गया है “Guilty mind is always suspicious.”

कुछ कहावतें नीचे दी जा रही हैं :-

- (1) **अंधे की लकड़ी** – एकमात्र सहारा (The only support)
- (2) **अंधों में काना राजा** – नासमझ लोगों के बीच एक थोड़ा समझदार व्यक्ति (A figure among cyphers)
गाँव में लोकपति ही प्राइमरी पास है बाकी सब निरक्षर हैं। ठीक ही कहा है, अंधों में काना राजा।
- (3) **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत** – काम बिगड़ने के बाद पश्चाताप करने से क्या लाभ (It is no use crying over split milk)
भवभूति को नौकरी का कागज मिला था परंतु वह नहीं गया। अब वह जगह भर गई। अब भवभूति दुखी है। पर अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
- (4) **आस्तीन का साँप** – विश्वासघाती (Ungrateful, Cheat)
मैंने अपने भतीजे को पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया। उसी ने अदालत में मेरे खिलाफ झूठी गवाही दी। वह तो आस्तीन का साँप निकला।
- (5) **देखें, ऊँट किस करवट बैठता है** – अनिश्चितता की स्थिति (See which way the wind blows)
मैंने अदालत में मुकदमा कर दिया है। कल निर्णय का दिन है। देखें ऊँट किस करवट बैठता है।
- (6) **ऊँट के मुँह में जीरा** – आवश्यकता से बहुत ही कम (A drop in the ocean)
मनमोहन ने मकान बनाने के लिए बैंक से दस लाख रुपए माँगे थे, पर बैंक ने केवल एक लाख दिए। यह तो ऊँट के मुँह में जीरा वाली बात हुई न!
- (7) **एक और एक ग्यारह** – एकता में शक्ति (Unity is Strength)

तुम दोनों भाई मिलकर रहो तो तुम्हारे विरोधी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तुम तो जानते ही हो एक और एक ग्यारह होते हैं।

- (8) **एक पंथ दो काज** – एक ही कार्य से दो लाभ (To kill two birds with one stone)
एक सरकारी फाइल लेकर मुझे मुंबई जाने का आदेश मिला है। मैंने सोचा वहाँ मैं अपने बड़े भाई से भी मिल आऊँगा। एक पंथ दो काज हो जाएँगे।
- (9) **काला अक्षर भैंस बराबर** – बिल्कुल अनपढ़ होना (To be illiterate)
पड़ोसी से तुम अपनी चिट्ठी क्या लिखवाओगे। उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।
- (10) **खून पसीने की कमाई** – बड़ी मेहनत से कमाई संपत्ति या धन (Hard earned money)
अपने पिता की खून-पसीने की कमाई को राकेश ने शराब और जुए में उड़ा दिया।
- (11) **चोर-चोर मौसेरे भाई** – एक ही तरह के (Birds of the same feather / chips of the same block)
मुकेश और सतीश दोनों में खूब पटती है। दोनों ही ब्लैक में सिनेमा के टिकट बेचते हैं और पटेगी भी क्यों नहीं। चोर-चोर मौसेरे भाई जो ठहरे।
- (12) **होनहार बिरवान के होत चीकने पात** – होनहार के लक्षण पहले ही प्रकट होने लगते हैं (Coming events cast their shadow before)
शिवशंकर भारतीय प्रशासनिक सेवा में अवश्य चुना जाएगा। प्रथम परीक्षा में उसे बहुत अच्छे अंक मिले हैं। ठीक ही कहा गया है होनहार बिरवान के होत चीकने पात।
- (13) **हाथ कंगन को आरसी क्या** – प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत? (Self evident needs no proof)
थानेदार साहब, मैं सरकारी कर्मचारी हूँ। मेरे ब्रीफकेस में सरकारी फाइलें हैं, विश्वास न हो तो ब्रीफकेस देख लीजिए। हाथ कंगन को आरसी क्या ?
- (14) **चिराग तले अंधेरा** – जहाँ विद्वता हो वहीं अज्ञानता का कार्य (Nearer the Church, farther from heaven)
मास्टर साहब से ट्यूशन लेने वाले पाँचों लड़के पास हो गए पर उनका खुद का लड़का फेल हो गया। इसी को तो कहते हैं चिराग तले अँधेरा।
- (15) **बात का धनी** – वचन का पक्का (True to one's word)
वादे के अनुसार राधेश्याम आज शाम तक अवश्य आएगा। वह बात का धनी है।
- (16) **पानी में रहकर मगर से बैर** – किसी के आश्रित रहकर दुश्मनी करना (To live in Rome and quarrel with the Pope)
तुम अपने उच्च अधिकारी को कभी नाराज मत करना। पानी में रहकर मगर से बैर करना ठीक नहीं।

मुहावरे

वह वाक्यांश जो शाब्दिक अर्थ का बोध न कराके विशेष अर्थ का बोध कराता है 'मुहावरा' कहलाता है।

- मुहावरे का प्रयोग वाक्य के संदर्भ में ही होता है – स्वतंत्र रूप से नहीं।
- मुहावरा अपने स्वरूप में बदलाव नहीं लाने देता अर्थात् उसमें प्रयुक्त शब्द / शब्दों का पर्याय रखने से मुहावरा नहीं बनता।
- मुहावरे में शब्द अपना कोशीय अर्थ (Lexical meaning, meaning in the dictionary) खो देता है और अन्य शब्दों के साथ मिलकर विशेष या विलक्षण अर्थ दर्शाता है।
- मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता आ जाती है और कथन का प्रभाव बढ़ जाता है।

एक उदाहरण देखिए 'पेट काटना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है अपने खाने-पीने में कटौती करना ताकि अन्य खर्चों की पूर्ति हो सके। 'राधा रमण ने पेट काटकर अपने लड़के को इंजीनियरी पढ़ाई।' यहाँ पेट काटना का शाब्दिक अर्थ बिल्कुल खो गया है। नीचे कुछ मुहावरे वाक्यों में प्रयोग के साथ दिए जा रहे हैं :-

- (1) **अँगूठा दिखाना** – जरूरत पड़ने पर धोखा देना (To back out)
मेरे मित्र ने मुझे एक लाख रुपए देने का वादा किया था परंतु जब वक्त आया तो उसने अँगूठा दिखा दिया।
- (2) **अपना उल्लू सीधा करना** – अपना स्वार्थ सिद्ध करना / अपना काम निकालना।
मधुकर ने अपना उल्लू सीधा किया और मुझे अँगूठा दिखाकर चलता बना।
- (3) **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना** – खुद अपना नुकसान करना। (To harm one self)
अपने अधिकारी से झगड़ा मोल लेकर तुमने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है।
- (4) **अपने पैरों पर खड़ा होना** – आत्मनिर्भर होना। (To be self supporting / self reliant / self sufficient)
माँ, मेरी शादी की जल्दी मत करो। पहले मुझे अपने पैरों पर खड़ा हो लेने दो।
- (5) **अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना** – अपनी तारीफ स्वयं करना। (Self praise is no recommendation / to indulge in self praise)
तुमने अपने बारे में इतनी बड़ी-बड़ी बातें बताईं। बात तब है जब दूसरे तुम्हारी प्रशंसा करें, तुम तो अपने मुँह मियाँ मिट्टू बन रहे हो।
- (6) **आँखों में धूल झाँकना** – धोखा देना। (to cheat, to deceive)
सोने के गहनों को चमकाने (साफ करने) का बहाना करके वह धोखेबाज गृहिणी की आँखों में धूल झाँककर गहनों के साथ चलता बना।
- (7) **आपे से बाहर होना** – बहुत क्रोधित होना / नाराज होना। (to be beside one self due to anger)

जैसे ही मैंने फकीरचंद से उसके छोटे भाई की जमानत के बारे में पूछा वह आपे से बाहर हो गया और मुझे गाली देने लगा।

- (8) **ईद का चाँद होना** – बहुत दिनों बाद दिखाई पड़ना। (rare sight / once in the blue moon)

तुम तो ईद का चाँद हो गए। कहाँ रहे इतने दिन ?

- (9) **खटाई में पड़ना** – किसी काम में रुकावट या व्यवधान आ जाना। (to be obstructed / to be delayed)

मेरा नियुक्ति पत्र निकलने ही वाला था। नए पदों पर रोक लगने से मेरी नियुक्ति खटाई में पड़ गई।

- (10) **गड़े मुर्दे उखाड़ना** – पुरानी दबी बात को फिर से उभारना। (let bygones be bygones)

तुम कहते हो उसने तुम्हें पहले नुकसान पहुँचाया था। पुरानी बातें भूल जाओ। गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ ?

- (11) **तिल का ताड़ बनाना** – बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना। (to exaggerate)

उसकी बात पर विश्वास न करो। वह तो तिल का ताड़ बनाता है।

- (12) **दाँतों तले उँगली दबाना** – आश्चर्य करना / चकित होना। (to be astonished)

ताजमहल की कारीगरी और नक्काशी देख बड़े-बड़े विदेशी वास्तुशिल्पी दाँतों तले उँगली दबाते हैं।

- (13) **दाल में काला होना** – कुछ शंकास्पद काम होना। (there is something fishy in... / about any affair)

वह वादा करके भी अभी तक नहीं आया। लगता है दाल में कुछ काला है।

- (14) **दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करना** – खूब उन्नति करना। (by leaps and bounds)

जब से पंचवर्षीय योजनाएँ लागू हुईं, देश दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है।

- (15) **दिन रात एक कर देना** – अनवरत मेहनत करना।

भीमराव ने इस परियोजना की सफलता के लिए दिन-रात एक कर दिया।

- (16) **नाक में दम करना** – बहुत परेशान करना। (to irritate)

इन बच्चों ने शोर मचाकर नाक में दम कर दिया है।

- (17) **पहाड़ टूट पड़ना** – बहुत बड़ी मुसीबत आना।

शिव शंकर मुकदमे में हार गया। उसकी नौकरी भी छूट गई, उस पर मानो पहाड़ टूट पड़ा।

- (18) **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** – सभी ओर से लाभान्वित होना। (His bread is buttered on both sides)

सोमनाथ के चाचा जी निःसंतान थे। चाचा जी की सारी जायदाद सोमनाथ को मिली। अब तो उसकी पाँचों उँगलियाँ घी में हैं।

(19) **मुट्ठी गरम करना** – रिश्वत देना। (to grease one's palm)

अपना काम निकलवाने के लिए अधिकारी की मुट्ठी गरम करने से देश का विकास रुकता है।

(20) **हवाई किले बनाना** – ऊँची-ऊँची कल्पना करके खुश होना। (to built castles in the air)

सीताराम काम कुछ करता नहीं केवल हवाई किले बनाता रहता है।

(21) **हाथ मलना** – पछताना। (to repent)

जमीन में अभी से अपना हिस्सा ले लो, वरना सब बँट जाएगा और तुम हाथ मलते रह जाओगे।

पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो वे 'प्रतिशब्द', 'समानार्थी शब्द' या 'पर्यायवाची शब्द' कहलाते हैं। उनमें से एक शब्द प्रसंगानुसार अपने पर्यायवाची शब्द से प्रतिस्थापित (replace) किया जा सकता है। यथा

राम, सीता और लक्ष्मण	वन	में रहने लगे।
	जंगल	

वन - जंगल

कुछ अधिक प्रचलित पर्यायवाची शब्द नीचे दिए जा रहे हैं :-

शब्द	पर्यायवाची शब्द
अमृत	सुधा, पीयूष, अमिय।
आग	अग्नि, पावक, अनल।
आँख	नयन, नेत्र, दृग, लोचन।
अंग	अवयव, अंश, भाग, हिस्सा।
आकाश	आसमान, गगन, अंबर, नभ।
आनंद	प्रसन्नता, उल्लास, सुख, हर्ष।
इच्छा	आकांक्षा, अभिलाषा, चाह, कामना।
कपड़ा	वस्त्र, वसन, अंबर, चीर।
कमल	सरोज, जलज, पंकज, अंबुज।
घर	गृह, निकेतन, आवास, निलय।

चतुर	दक्ष, प्रवीण, निपुण, होशियार।
चाँद	चंद्रमा, चंद्र, सुधाकर, शशि, राकेश।
जंगल	वन, अरण्य, कानन।
जल	पानी, नीर, वारि, सलिल।
तालाब	सरोवर, जलाशय, तड़ाग।
दुख	पीड़ा, व्यथा, कष्ट, वेदना, शोक, क्लेश।
धन	द्रव्य, वित्त, संपदा, दौलत।
नदी	सरिता, तटिनी, तरंगिणी।
पत्थर	प्रस्तर, पाषाण, पाहन।
पर्वत	शैल, गिरि, पहाड़, महीधर।
पुत्र	बेटा, सुत, आत्मज।
पृथ्वी	भू, भूमि, धरा, धरती, वसुंधरा।
पेड़	वृक्ष, तरु, द्रुम, विटप।
फूल	पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून।
बादल	मेघ, घन, वारिद, जलद, नीरद, पयोद।
बिजली	चपला, दामिनी, विद्युत, तड़ित।
सागर	समुद्र, जलधि, सिंधु, पयोधि।
सूर्य	सूरज, रवि, आदित्य, दिनकर, भास्कर, भानु।
स्त्री	नारी, वनिता, महिला, कामिनी।

अनेकार्थी शब्द

भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जिनके कई अर्थ होते हैं और वे प्रसंगानुकूल अलग-अलग अर्थ की प्रतीति कराते हैं। उदाहरण के लिए हम निम्नलिखित वाक्य को लें :-

- (1) रामनारायण, तुमने मेरे पत्र का उत्तर क्यों नहीं भेजा ? (जवाब)
- (2) रामनारायण का मकान झील के उत्तर में है (एक दिशा का नाम)

इस तरह के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :-

शब्द	अर्थ
अर्थ	मतलब, धन, रुपए-पैसे
अंक	संख्या, नाटक के भाग, गोद, पत्र-पत्रिकाओं के क्रम

शब्द	अर्थ
अपवाद	नियम से अलग, कलंक
अंबर	आकाश, कपड़ा
आदि	प्रारंभ, शुरू, इत्यादि
आम	आम का पेड़ या फल, सर्वसाधारण / सर्व सामान्य, मामूली
कनक	सोना, धतूरा
कर	हाथ, टैक्स, हाथी की सूँड़, किरण
कुशल	खैरियत, चतुर, दक्ष, प्रवीण
गति	हालत, स्थिति, चाल, मोक्ष
गुरु	महान, बड़ा, शिक्षक, अध्यापक, एक ग्रह, वजन वाला, वजनी
घन	बादल, लंबाई x चौड़ाई x ऊँचाई
जाल	जाला, मछली पकड़ने का जाल, फरेब, धोखा
द्रव्य	धन, वस्तु
धन	संपत्ति, दौलत, जोड़, योग
धर्म	संप्रदाय, प्रकृति, स्वभाव, कर्तव्य
पद	दर्जा, गीत, वाक्य में प्रयुक्त शब्द, पैर
पत्र	चिट्ठी, पत्ता
पक्ष	माह का पंद्रह दिन का भाग, पंख, की तरफ, के साथ
पानी	जल, इज्जत, चमक
पृष्ठ	किताब का पन्ना, पीठ-पीछे का भाग
फल	परिणाम, नतीजा, पेड़ से प्राप्त फल
बल	शक्ति, ताकत, सेना
भूत	बीता हुआ (समय / काल), प्रेतात्मा
मधु	शहद, वसंत ऋतु, शराब, मीठा
लक्ष्य	उद्देश्य, निशाना
वर्ण	रंग, अक्षर, जाति
वार	चोट, आघात, दिन
सर	सिर, तालाब, तीर

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा में कई ऐसे शब्द युग्म हैं जो एक-दूसरे के अर्थ से सर्वथा विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, जैसे— रात x दिन / अच्छा x बुरा / सुखी x दुखी। हमें इतना ध्यान रखना चाहिए कि संज्ञा का विपरीतार्थक शब्द संज्ञा, विशेषण का विशेषण, क्रिया विशेषण का क्रिया विशेषण ही होना चाहिए। कुछ अधिक प्रयोग में आने वाले विलोम शब्द युग्म नीचे दिए जा रहे हैं :-

शब्द	विलोम
अंत	आदि
अंतरंग	बहिरंग
अंधकार	प्रकाश, उजाला
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अनुकूल	प्रतिकूल
अनुराग	विराग
अपमान	मान, सम्मान
परतंत्र	स्वतंत्र
परमार्थ	स्वार्थ
प्रधान	गौण
प्रमुख	सामान्य, गौण
अमृत / अमिय	विष, हलाहल
अर्वाचीन, नवीन	प्राचीन, पुरातन, पुराना
आदान	प्रदान
आय	व्यय
आयात	निर्यात
आलोक, प्रकाश	अंधकार, अँधेरा
उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उपकार	अपकार
उपयुक्त	अनुपयुक्त
कृत्रिम	अकृत्रिम, प्रकृत

शब्द	विलोम
गुरु	लघु
छाँव / छाया	धूप
प्रत्यक्ष	परोक्ष
प्राकृतिक	अप्राकृतिक, कृत्रिम
लौकिक	अलौकिक
विशेष	सामान्य
विस्तृत	संक्षिप्त
संयोग	वियोग
सजीव	निर्जीव
सम्मान	अपमान
साकार	निराकार
सार्थक	निरर्थक
सुकर्म	कुकर्म, दुष्कर्म
सुगंध	दुर्गंध
जड़	चेतन
जन्म	मृत्यु, मरण
जटिल / कठिन	सरल
दुर्जन	सज्जन
सुमति	कुमति
सौभाग्य	दुर्भाग्य
हर्ष	विषाद, शोक
हिंसा	अहिंसा

पाठ-5 : लिपि तथा उच्चारण

1.0	लिपि तथा उच्चारण	92
1.1	देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विकास	92
1.2	लिपि की वैज्ञानिकता के मापदंड	92
1.3	देवनागरी लिपि की विशेषताएँ	93
1.4	हिंदी वर्तनी का मानकीकरण	95
1.5	हिंदी वर्तनी में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ	98
1.6	देवनागरी वर्णों में रूपों की विविधता	101
1.7	हिंदी के शब्दों की उच्चारण संबंधी विशेषताएँ	102
1.8	हिंदी वाक्यों में शब्द क्रम	103

1.0 लिपि तथा उच्चारण

भाषा के उच्चरित रूप को निर्धारित प्रतीक चिह्नों के माध्यम से लिखित रूप देने का साधन ही लिपि है। लिपि की उत्पत्ति भाषा की उत्पत्ति के बहुत बाद में हुई। लिपि, मानव समुदाय का एक बहुत बड़ा आविष्कार है। इसके प्रयोग, क्रमिक विकास में काफी समय लगा। लिपि की उत्पत्ति से पहले भावाभिव्यक्ति का दायरा बोलने और सुनने वाले तक सीमित रहता था। मनुष्य की उत्कट अभिलाषा थी कि ज्ञान-विज्ञान विषयक उसके विचार दूर-दूर तक पहुँचें। उन्हें भविष्य के लिए संचित किया जा सके, उनका संरक्षण किया जा सके। इस आवश्यकता की पूर्ति करना ही उसका लक्ष्य बन गया और आगे चलकर यही मनुष्य के लिए लिपि के आविष्कार की प्रेरणा भी बनी।

1.1 देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विकास

प्राचीन भारत में ब्राह्मी और खरोष्ठी नाम की दो लिपियाँ प्रचलित थीं। ब्राह्मी लिपि का प्रयोग पश्चिमोत्तर भारत को छोड़कर प्रायः पूरे देश में होता था। ब्राह्मी आर्य लिपि थी। इसमें वे सभी ध्वनि संकेत थे जो भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों के लिए होने चाहिए अर्थात् हर एक ध्वनि के लिए एक अलग वर्ण या अक्षर था। भाषा की ध्वनि और वर्ण में अन्योन्याश्रित संबंध था। ब्राह्मी लिपि देवनागरी की तरह बाईं ओर से दाहिनी ओर लिखी जाती थी। इसी ब्राह्मी से भारत की समस्त मध्यकालीन और आधुनिक लिपियों का उद्भव हुआ। ब्राह्मी की उत्तरी शैली से देवनागरी, असमी, उड़िया, कश्मीरी, गुरुमुखी, गुजराती और बंगला लिपियाँ विकसित हुईं। और ब्राह्मी लिपि की दक्षिणी शैली से कन्नड़, तमिल, तेलुगु और मलयालम लिपियों का विकास हुआ।

इस बात के पर्याप्त साक्ष्य मिले हैं कि मौर्य काल में ब्राह्मी का प्रयोग सारे भारत में होता था। ब्राह्मी में लिखे शिलालेख ईसा पूर्व पाँचवीं शती तक के मिले हैं। इस लिपि का प्रचार 350 ई. तक रहा। चौथी शताब्दी में कुछ परिवर्तनों के कारण यही 'गुप्त लिपि' कहलाई। लिपि को यह नाम संभवतः तत्कालीन गुप्त सम्राटों के महत्व के कारण मिला। यह गुप्त लिपि ही कालांतर में कुटिल लिपि बनी। कुटिल लिपि का प्रचार ईसा की छठी से नवीं शताब्दी तक रहा। कुटिल लिपि से ही देवनागरी तथा कश्मीर की प्राचीन लिपि 'शारदा लिपि' का विकास हुआ। इस काल की देवनागरी को हम 'प्राचीन नागरी' कह सकते हैं। इसी का विकसित रूप आज प्रचलित है।

1.2 लिपि की वैज्ञानिकता के मापदंड

किसी भी भाषा के लिए प्रयुक्त लिपि के वर्णों / अक्षरों की विशिष्टता इसमें है कि सभी वर्णों के लिए अलग-अलग प्रतीक हों, वर्णों में स्पष्ट आकार भेद हो, लिखने में सरल हो और स्पष्ट हो, कम समय लगे और कम स्थान घेरे।

इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है :-

(क) भाषा की हर सार्थक ध्वनि के लिए प्रतीक या वर्ण हो।

(ख) हर वर्ण एक ही ध्वनि का प्रतिनिधित्व करे। किंतु अंग्रेजी में इस व्यवस्था के विपरीत उदाहरण देखने को मिलते हैं।

इसे स्पष्ट करने के लिए हम अंग्रेजी का उदाहरण लें।

अंग्रेजी के C का उच्चारण निम्नलिखित शब्दों में देखें :-

Cat में 'C' का उच्चारण 'क' है, जब कि Cent में 'C' का उच्चारण 'स' है।

(ग) एक ही ध्वनि के लिए कई लिपि चिह्न न हों, लेकिन

उर्दू में 'स' के लिए से, सीन, स्वाद तीन अक्षर हैं।

(घ) जो बोला जाए वही लिखा जाए और जो लिखा जाए वही बोला जाए अर्थात् लेखन-उच्चारण / पठन में सीधा संबंध हो। निम्नलिखित उदाहरण में 'CH' का उच्चारण 'च', 'क' और 'श' के रूप में किया जा रहा है, जो सही नहीं है :-

Ch—	charm	monarch	chef
	चार्म	मोनार्क	शेफ

(ङ) ध्वनि प्रतीक / वर्ण एक-दूसरे से इतने भिन्न लगें कि तुरंत पहचाने जा सकें।

(च) वर्णों / अक्षरों के वर्गीकरण में कोई विशेष क्रम हो, वर्गीकरण का कोई वैज्ञानिक आधार हो।

1.3 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

(क) भाषा की हर सार्थक ध्वनि के लिए एक लिपि संकेत है। हिंदी के जितने स्वनिम (ध्वनियाँ) हैं, उन सभी के लिए अलग-अलग वर्ण या अक्षर हैं। न कम न ज्यादा। जैसे—

'क्' स्पर्श व्यंजन, अघोष, अल्पप्राण ध्वनि है और क उसका लिपि चिह्न है।

(ख) हिंदी का हर वर्ण यथोचित एक ही ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता है।

क	प्रारंभ में कमल	मध्य में मकान	अंत में नाक	सर्वत्र 'क' ही उच्चरित होगा।
---	--------------------	------------------	----------------	------------------------------

(ग) शब्द में प्रयुक्त प्रत्येक वर्ण उच्चरित होता है—कोई भी वर्ण अनुच्चरित नहीं रहता। अंग्रेजी के knife, write में क्रमशः 'k' और 'w' अनुच्चरित हैं।

(घ) हिंदी में जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। इसलिए यदि अन्य भाषा-भाषी, हिंदी के शब्दों का ठीक उच्चारण सुनकर ठीक लेखन करें तो वर्तनी की गलती नहीं होगी।

(ङ) हिंदी के सभी वर्णों में आकार की दृष्टि से पूर्ण भिन्नता है। इसलिए लेखन में किसी प्रकार की भ्रामक स्थिति उत्पन्न नहीं होती।

(च) नागरी वर्णमाला का वर्गीकरण (classification) और अनुस्तरिकरण (sequencies)

(i) पहले स्वर

(ii) फिर व्यंजन

(iii) स्वरों में पहले ह्रस्व फिर दीर्घ

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ह्रस्व-दीर्घ क्रम में

(iv) ए, ऐ, ओ, औ - प्राचीन आर्यभाषाओं में ये संध्यक्षर थे।

ये क्रमशः अ + इ (ए), आ + इ (ऐ), अ + उ (ओ), आ + उ (औ)

अब हिंदी के मूल स्वर हैं। चारों दीर्घ स्वर हैं।

(v) व्यंजन ध्वनियों को वैज्ञानिक आधार पर अभिक्रमित किया गया है।*

क ख ग घ	← कंठ्य	→ ङ	} अनुनासिक
च छ ज झ	← तालव्य	→ ञ	
ट ठ ड ढ	← मूर्धन्य	→ ण	
त थ द ध	← दंत्य	→ न	
प फ ब भ	← ओष्ठ्य	→ म	

(vi) हर वर्ग का पहला अक्षर (क, च, ट, त, प) अघोष, अल्पप्राण, स्पर्श व्यंजन है।

(vii) हर वर्ग का द्वितीय वर्ण (ख, छ, ठ, थ, फ) अघोष, महाप्राण, स्पर्श व्यंजन है।

(viii) हर वर्ग का तीसरा अक्षर (ग, ज, ड, द, ब) सघोष, अल्पप्राण, स्पर्श व्यंजन है।

(ix) हर वर्ग का चौथा व्यंजन (घ, झ, ढ, ध, भ) सघोष, महाप्राण, स्पर्श व्यंजन है।

(x) हर वर्ग का पंचम अक्षर अनुनासिक है।

(xi) इसके बाद य, र, ल, व अंतस्थ व्यंजन हैं। इन्हें अंतस्थ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनका उच्चारण स्वर और व्यंजन के बीच का है।

(xii) अंतस्थ व्यंजन के पश्चात श, ष, स हैं जिन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

(xiii) ह संघर्षी घोष ध्वनि है।

(xiv) क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं।

क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ, श् + र = श्र

(xv) इ मूर्धन्य, घोष, अल्पप्राण ध्वनि है और ढ महाप्राण ध्वनि है।

(छ) हिंदी में प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला निम्नलिखित क्रम में लिखी जाती है।

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

अनुस्वार - अं तथा अः (विसर्ग :)

* कंठ्य = velar, तालव्य = palatal, मूर्धन्य = alveolar, दंत्य = dental, ओष्ठ्य = bilabial, सघोष / घोष = voiced, अघोष = unvoiced, अल्पप्राण = un-aspirate, महाप्राण = aspirate, स्पर्श = stop, अनुनासिक = nasal, संध्यक्षर = diphthong

व्यंजन

नाम	अघोष अल्पप्राण	अघोष महाप्राण	घोष अल्पप्राण	घोष महाप्राण	अनुनासिक अल्पप्राण / महाप्राण	
कंठ्य या 'क' वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	
तालव्य या 'च' वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	
मूर्धन्य या 'ट' वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	इ ढ
दंत्य या 'त' वर्ग	त	थ	द	ध	न	
ओष्ठ्य या 'प' वर्ग	प	फ	ब	भ	म	
अंतस्थ*	य	र	ल	व		
ऊष्म	श	ष	स			
संघर्षी* घोष		ह				
संयुक्त अक्षर*	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		

आगत ध्वनियाँ / गृहीत स्वन

अंग्रेजी से आँ ball में 'a' की ध्वनि

doctor में 'o' की ध्वनि

फारसी से नुक्ता क / ख / ग / ज़ / फ़

1.4 हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

भारत सरकार ने हिंदी की वर्तनी में एकरूपता लाने के विषय में सुझाव देने हेतु एक विशेषज्ञ समिति का गठन 1961 में किया था। इसमें भाषाविद्, शिक्षा शास्त्री, अध्यापक, पत्रकार तथा हिंदी के मूर्धन्य विद्वान थे। इस समिति द्वारा दिए गए सुझाव मंत्रालय द्वारा स्वीकृत हुए तथा 1966 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किए गए। इनमें समय-समय पर संशोधन होते रहे हैं। देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के संबंध में अद्यतन सिफारिशों में से कुछ इस प्रकार हैं :-

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन -

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर बनाया जाए, यथा :- कुत्ता, प्यास, सभ्य, उल्लेख, पथ्य, धन्य।

* अंतस्थ = continuant, संघर्षी = fricative, संयुक्त व्यंजन = conjunct consonant

(ख) बिना खड़ी पाई वाले व्यंजन, जैसे—

ड, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् का चिह्न लगाकर बनाए जाएँ, यथा—
वाङ्मय, लट्ठ, बुढ़ा, विद्या, चिह्न आदि

(ग) 'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर—

पक्का, दफ्तर आदि की तरह बनाए जाएँ।

(घ) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे, यथा—

प्रकार, धर्म, राष्ट्र।

(ङ) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य रहेगा। त् + र के संयुक्त रूप के लिए त और त्र दोनों में से त्र का प्रयोग किया जाए।

(च) हल् चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के पूर्व ही किया जाए। यथा—

द्वितीय, बुद्धिमान आदि।

(छ) संस्कृत भाषा के मूल श्लोकों को उद्धृत करते समय संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे। जैसे—संयुक्त, विद्या, चञ्चल, विद्वान्, वृद्ध, अङ्क, द्वितीय, बुद्धि आदि। किंतु उक्त नियमानुसार भी वर्तनी का प्रयोग किया जा सकता है।

विभक्ति चिह्न

(क) हिंदी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ, जैसे—
राम ने, राम को, राम से आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ, जैसे—उसने, उसको, उससे, उसपर आदि।

(ख) सर्वनामों के साथ दो विभक्ति चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक् लिखा जाए, जैसे—उसके लिए, इनमें से।

(ग) सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही', 'तक' आदि का निपात हो तो विभक्ति को पृथक् लिखा जाए, जैसे—आप ही के लिए, मुझ तक को।

क्रियापद

संयुक्त क्रियाओं में सभी क्रियाएँ अलग-अलग लिखी जाएँ, जैसे—पढ़ा करता है, आ सकता है, बढ़ते चले आ रहे हैं आदि।

अव्यय

'तक', 'साथ' आदि अव्यय सदा पृथक् लिखे जाएँ, जैसे—आपके साथ, यहाँ तक।

श्रुतिमूलक 'य', 'व'

(क) जहाँ श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग विकल्प से होता है वहाँ किए-किये, नई-नयी, हुआ-हुवा आदि में से पहले (स्वरात्मक) रूपों का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि

सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए, जैसे—दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली आदि।

- (ख) जहाँ 'य' श्रुतिमूलक, व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्त्व हो वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, जैसे—स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि। यहाँ स्थाई, अव्ययीभाव, दाइत्व न लिखा जाए।

अनुस्वार तथा अनुनासिक-चिह्न (चंद्रबिंदु)

अनुस्वार (ं) और अनुनासिक चिह्न (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे।

संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण / लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए, जैसे गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक आदि में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आगे आता है। यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, जैसे अन्य, अन्न, सम्मेलन, चिन्मय, उन्मुख आदि।

चंद्रबिंदु के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, जैसे हंस - हँस, अंगना - अँगना आदि में। अतएव चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। किंतु शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग की छूट दी जा सकती है। जैसे—नहीं, मैं, मैं।

विदेशी ध्वनियाँ

- (क) अरबी-फारसी या अंग्रेजी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिंदी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं, जैसे— कलम, किला, दाग आदि (कलम, किला, दाग नहीं)।
- (ख) अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (ा) के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए (ऑ, ऎ)। जैसे— कॉलेज, हॉकी, कॉफी, डॉक्टर आदि।

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। कुछ उदाहरण हैं - गरदन / गर्दन, गरमी / गर्मी, बरफ / बर्फ, बिलकुल / बिल्कुल, सरदी / सर्दी, कुरसी / कुर्सी, भरती / भर्ती, फुरसत / फुर्सत, बरदाश्त / बर्दाश्त, वापिस / वापस, आखीर / आखिर, बरतन / बर्तन, दोबारा / दुबारा, दूकान / दुकान, बीमारी / बिमारी, दीवार / दीवाल, पूरी / पूड़ी आदि। दोनों वर्तनियाँ चलती रहेंगी।

विसर्ग

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए। जैसे— अतः, पुनः, प्रायः, स्वतः, प्रातःकाल, नमः, शनैः शनैः।

पूर्वकालिक प्रत्यय

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे— मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर आदि।

अन्य नियम

- (क) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।
(ख) फुलस्टॉप को छोड़कर शेष विराम आदि चिह्न वही ग्रहण कर लिए जाएँ, जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं। यथा “-----! : =”

(विसर्ग के चिह्न को ही कोलन का चिह्न मान लिया जाए)

- (ग) पूर्णविराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए।

हाइफन – हाइफन का प्रयोग स्पष्टता के लिए किया जाता है।

- (क) द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए, जैसे-शिव-पार्वती-संवाद, देख-रेख, चाल-चलन, हँसी-मजाक, लेन-देन, पढ़ना-लिखना, खाना-पीना आदि।
(ख) सा, जैसा, आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए, जैसे-तुम-सा, राम-जैसा।

हल चिह्न

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों का संस्कृत रूप ही रखा जाए, परंतु जिन शब्दों के प्रयोग में हिंदी में हल चिह्न लुप्त हो चुका है, उनमें उसको फिर से लगाने का यत्न न किया जाए, जैसे-महान्, विद्वान् आदि के 'न' में।

स्वन परिवर्तन

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए। अतः 'ब्रह्मा' को 'ब्रम्हा', 'चिह्न' को 'चिन्ह' में बदलना उचित नहीं होगा। जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखने की छूट है, जैसे-अर्द्ध / अर्ध, उज्ज्वल / उज्वल, तत्त्व / तत्व आदि।

1.5 हिंदी वर्तनी में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ

किसी भी भाषा में शब्दों की वर्तनी का बड़ा महत्व है। वर्तनी के छोटे से अंतर में अर्थ बदल जाता है। यहाँ ऐसे ही कुछ शब्दों की वर्तनी दी जा रही है जिनमें प्रायः गलती हो जाती है।

- (1) आदि = शुरू beginning
इत्यादि = etcetera
आदी = अभ्यस्त habituated
(2) आकर = खान mine
आकार = स्वरूप, रूप size
(3) आयत = लंबाई-चौड़ाई length-breadth
आयात = आना, बाहर से किसी वस्तु का आना import
(4) आसन = बैठने का स्थान, बैठने के लिए कोई प्रबंध seat

- आसान = सरल simple
 आसन्न = नजदीक, पास near
- (5) कर्म = काम action, work
 क्रम = सिलसिला order, serial
- (6) कलि = कलियुग name of the present age
 कली = अधखिला फूल bug, unblossomed flower
- (7) कंकाल = ठठरी skeleton
 कंगाल = गरीब poor
- (8) कोश = dictionary
 कोष = खजाना treasure
- (9) किला = महल, दुर्ग fort
 कीला = लोहे की कील nail (iron)
- (10) खाद = उर्वरक manure, fertilizer
 खाद्य = खाने के योग्य eatable
- (11) खासी = काफी enough
 खाँसी = cough
- (12) गण = समूह group
 गण्य = गिनने के लायक countable
- (13) ग्रह = नक्षत्र planet
 गृह = घर house
- (14) गड़ना = चुभना to prick, अंदर जाना (जमीन के) to be buried
 गढ़ना = सुडौल बनाना to shape properly
- (15) चिर = पुराना old
 चीर = वस्त्र, कपड़ा cloth
- (16) चिता = अंत्येष्टि संबंधी funeral pyre
 चीता = एक जंगली जानवर leopard
- (17) चालक = चलाने वाला driver
 चालाक = चतुर clever, cunning
- (18) दिन = दिवस day
 दीन = गरीब poor, destitute

- (19) देव = देवता God
दैव = प्रारब्ध, भाग्य fate
- (20) द्रव = तरल पदार्थ liquid
द्रव्य = धन wealth
- (21) नत = नम्र / झुका हुआ polite
नद = बड़ी नदी a big river
- (22) दिया = 'दे' का भूतकालिक रूप gave
दीया = दीपक lamp
- (23) नियत = निश्चित appointed, fixed
नीयत = मंशा / इच्छा intention
- (24) निश्चल = अटल static
निश्छल = निष्कपट pure heart
- (25) नीरज = कमल lotus
नीरद = बादल cloud
- (26) परिणय = विवाह marriage
प्रणय = प्रेम love
- (27) पास = निकट, नजदीक near
पाश = बंधन tie, restriction
- (28) बलि = कुर्बानी sacrifice
बली = ताकतवर strong
- (29) बास = महक smell, fragrance
वास = रहना / निवास stay
- (30) बात = वचन, कहना talk
वात = हवा wind, air
- (31) बुरा = खराब bad
बूरा = बारीक शक्कर fine sugar
- (32) भारती = सरस्वती Goddess of knowledge and learning
भारतीय = भारत का रहने वाला Indian
- (33) राज = राज्य kingdom
राज़ = रहस्य secret

- (34) लक्ष = लाख one lac, ten million
लक्ष्य = निशाना aim, target
- (35) मूल = जड़ root
मूल्य = कीमत cost
- (36) वसन = कपड़ा cloth
व्यसन = लत, बुरी आदत bad habit, addiction
- (37) सर = तालाब tank
शर = बाण arrow
- (38) शती = सैकड़ा century
सती = पतिव्रता
(i) a lady totally devoted to her husband even after his death.
(ii) an out dated custom
- (39) शहर = नगर town
सहर = सवेरा, सुबह morning
- (40) समान = बराबर equal
सामान = सामग्री things, article
- (41) हल = solution, a plough
हाल = समाचार news

1.6 देवनागरी वर्णों में रूपों की विविधता

पहले मानकीकृत हिंदी वर्णों के कुछ अलग रूप थे। इनको जानना आवश्यक है क्योंकि पहले मुद्रित / लिखित सामग्री में वे वर्ण ही प्रयुक्त होते थे।

वर्ण

क्रम संख्या	पहले का रूप	मानक रूप
1.	अ	अ
2.	आ	आ
3.	ओ	ओ
4.	औ	औ
5.	अं	अं

6.	अः	अः
7.	ए	ख
8.	छ	छ
9.	भ	झ
10.	ण	ण
11.	ध	ध
12.	म	भ

1.7 हिंदी के शब्दों की उच्चारण संबंधी विशेषताएँ

हिंदी भाषा की ध्वनियों और हिंदी लिखने के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि में एक और एक की अनुरूपता (One to one correspondence) है। तात्पर्य यह है कि हिंदी में जितनी सार्थक ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं उन सबके लिए अलग ध्वनि प्रतीक अर्थात् वर्ण अथवा अक्षर हैं। न एक कम, न एक ज्यादा। इस तथ्य का सीधा संबंध लिखने और बोलने या पढ़ने में पूर्ण सामंजस्य से है। हिंदी में प्रायः वही लिखा जाता है जो बोला जाता है और वही बोला जाता है जो लिखा जाता है।

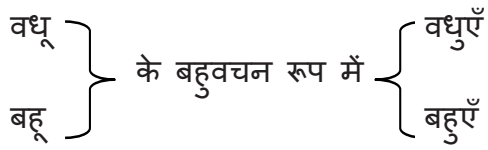
देवनागरी में एक भी ऐसा अक्षर नहीं है जो दो तरह से उच्चरित होता हो। साथ ही शब्द रचना में आए वर्णों में से कोई भी वर्ण अनुच्चरित नहीं होता।

हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में सीखने वाले ही नहीं, हिंदी भाषी भी वर्तनी संबंधी भूलें करते हैं। यह विशेषकर ईकारांत और ऊकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के पुल्लिंग रूप बनाते समय देखा जा सकता है। उदाहरण स्वरूप—

दवाई	इन सभी ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन रूपों में दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' हो जाती है। इसे हम
नदी	व्याकरणिक नियम न कहें तो उचित होगा। यह प्रयत्न लाघव और मुखसुख का सिद्धांत
सब्जी	है। स्वाभाविक रूप से पुल्लिंग प्रत्यय 'याँ' जोड़ने से पहले दीर्घ (long) 'ई' ह्रस्व (short) 'इ'
देवी	उच्चरित होता है। हिंदी भाषा का सिद्धांत है कि जैसा बोला जाए वैसा ही लिखा जाए। इस
रानी	स्थिति में ऊपर दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप इस तरह बनेंगे और वैसे ही उच्चरित भी होंगे।

एकवचन रूप	बहुवचन रूप	एकवचन रूप	एकवचन रूप
दवाई	दवाईयाँ	देवी	देवी
नदी	नदियाँ	रानी	रानी
सब्जी	सब्जियाँ		

यही नियम ऊकारांत (ending in ऊ) स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाते समय होता है। बहुवचन प्रत्यय 'एँ' जोड़ने से पहले दीर्घ ऊ (long ऊ) ह्रस्व उ (short उ) में परिवर्तित किया जाता है। सिद्धांत वही प्रयत्न लाघव (Principle of least effort) का है।



1.8 हिंदी वाक्यों में शब्द क्रम

अन्वय 1

भाषा मुख से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक समाज के सदस्य आपस में विचार विनिमय करते हैं।*

हर भाषा की अपनी विशिष्ट ध्वनियाँ होती हैं जिनकी सहायता से शब्द बनाए जाते हैं। शब्दों को भाषिक नियमों के अनुसार विशेष क्रम में रखने से वाक्य बनते हैं। किसी भाषा के वाक्य के शब्दों का क्रम क्या हो, इसका निर्णय व्यावहारिक व्याकरण करता है। वाक्य में शब्द क्रम, व्याकरणिक नियमों के अनुसार रखने से ही अपेक्षित अर्थ देने में वाक्य समर्थ होता है।

हिंदी भाषा में शब्दों का क्रम प्रायः निम्नलिखित नियमों के अनुसार होता है :-

- (i) वाक्य के प्रारंभ में कर्ता या उद्देश्य और अंत में क्रिया रखी जाती है।
गोपाल (कर्ता) सो रहा है। (क्रिया)
- (ii) कर्ता के बाद कर्म (सकर्मक क्रियाओं के प्रयोग से) और अंत में क्रिया रहती है।
धर्मवीर पुस्तक (कर्म) पढ़ रहा है।
- (iii) द्विकर्मक क्रिया के प्रयोग से वाक्य में दो कर्म प्रयुक्त होते हैं। एक गौण (secondary) और एक मुख्य (primary)
अध्यापक छात्रों को (गौण कर्म) कविता (मुख्य कर्म) पढ़ा रहा है।
- (iv) विशेषण अपने विशेष्य से पहले रखे जाते हैं, जैसे—
—यह सुंदर चित्र किसने बनाया है ?
विशेषण विशेष्य के बाद भी आता है, जैसे—
—यहाँ का दृश्य बड़ा ही मनमोहक है।
- (v) क्रिया विशेषण भी अपनी विशेष्य-क्रिया/विशेषण/अन्य क्रिया विशेषण के पहले प्रयुक्त होते हैं।
—रेलगाड़ी धीरे-धीरे (क्रि.वि.) चल रही थी।
—यहाँ का दृश्य अत्यधिक (क्रि.वि.) मोहक (विशेषण) है।
—बीमार व्यक्ति बहुत (क्रि.वि.) धीरे-धीरे (क्रि.वि.) बोल रहा था।
- (vi) समानाधिकरण शब्द मुख्य शब्द के बाद में रखा जाता है।
—तुम्हारा छोटा भाई रामप्रकाश बरामदे में बैठा है।
(मुख्य शब्द)

* A Language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a social group cooperates and interacts—Bloch & Trager, Outline of Linguistic Analysis. P.S.

अन्वय 2

क्रिया का पूरक कर्म की तरह कर्म की जगह रखा जाता है।

राजीव	डॉक्टर (पूरक)	है।
	समझदार (पूरक)	

अन्वय 3

(viii) समुच्चय बोधक अव्यय (conjunct word) उन शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों के बीच आता है जिन्हें वह जोड़ता है।

पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

हमने सुधीर को कई बार समझाया पर / परंतु / किंतु / लेकिन उसने हमारी बात नहीं मानी।

(ix) यदि 'और' अथवा 'या' इत्यादि कई शब्दों को जोड़ते हैं तो यह प्रायः अंतिम शब्द के पहले रखा जाता है।

राम, रहीम और एल्बर्ट सिनेमा देखने गए हैं।

राधारमण, पुनीत या हैदर अवश्य आएँगे।

(x) पूर्णकालिक कृदंत (Perfect Participle) क्रिया के पहले रखा जाता है।

हम सब खाना खाकर चलेंगे।

(xi) तो, हो, भी, भर, तक, मात्र जैसे निपात उस शब्द के बाद रखे जाते हैं जिस पर जोर देना होता है।

रघुराज तो आया।

At least Raghuraj came.

रघुराज आया तो।

Raghuraj did come.

जोसफ ही आया था।

Only Joseph had come.

जोसफ आया ही था कि बम फटा।

Joseph had just entered (come) when the bomb exploded.

अन्वय 4

(xii) कालवाचक क्रिया विशेषण - आज, कल, तुरंत, हमेशा, सुबह

स्थानवाचक क्रिया विशेषण - बाहर, आगे, सभी जगह (सर्वत्र)

रीतिवाचक क्रिया विशेषण - धीरे-धीरे, अचानक, चलकर, पैदल

जोसफ कल (adverb of time) स्कूल (adverb of place) गया था।

जोसफ कल स्कूल पैदल (adverb of manner) गया था।

जिस क्रिया विशेषण पर जोर देना है उसे पहले रखा जाता है। उसी के अनुसार हिंदी भाषा में क्रम बदला जाता है।

पाठ-6 : हिंदी साहित्य का परिचय एवं वीरगाथा काल

1.0	हिंदी साहित्य का परिचय	106
1.1	हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन एवं नामकरण	106
1.2	वीरगाथा काल	107
1.2.1	भक्ति काल	108
	- निर्गुण भक्ति धारा	108
	- सगुण भक्ति धारा	109
	- राम-भक्ति शाखा	109
	- कृष्ण-भक्ति शाखा	110
1.2.2	रीति काल	110
1.2.3	आधुनिक काल	111
	- भारतेंदु युग	112
	- द्विवेदी युग	112
	- छायावाद युग और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा	113
	- छायावादोत्तर युग	114
	(क) प्रगतिवाद	114
	(ख) प्रयोगवाद	114
	(ग) नई कविता	114
1.3	वीरगाथा काल	115
1.3.1	वीरगाथा काल के प्रमुख कवि	116
	- चंदबरदाई	116
	- दलपत विजय	117
	- नरपति नाल्ह	117
	- अमीर खुसरो	117
	- विद्यापति	118

1.0 हिंदी साहित्य का परिचय

हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग 1000 वर्ष पुराना है। जब से हिंदी में रचना आरंभ हुई तभी से हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रारंभ माना जाता है। सामान्यतः इतिहास समाज के राजनैतिक, आर्थिक विकास क्रम को दर्शाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।' आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।

1.1 हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन एवं नामकरण

हिंदी साहित्य के विकास को निम्नलिखित चार चरणों में बाँटा जा सकता है :-

भाषा निरंतर प्रवाहमान है। (भाषा बहता नीर।) इसलिए हिंदी साहित्य के काल-विभाजन का कार्य अत्यंत कठिन है। विभाजन तो उसी का हो सकता है जिसके मध्य में कोई रेखा खींची जा सके। हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ आपस में इतनी घुली-मिली हैं कि उनके बीच कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती फिर भी विद्वानों ने हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी साहित्य का काल-विभाजन किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "जिस कालखंड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पड़ी है वह एक अलग काल माना गया है और उसका नामकरण रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया गया है।"

हिंदी साहित्य के इतिहास को निम्नलिखित चार चरणों में बाँटा गया है :-

1.	वीरगाथा काल (इसे आदि काल के नाम से भी जाना जाता है)	विक्रम संवत् सन्	1050-1375 993-1318
2.	भक्ति काल	विक्रम संवत् सन्	1375-1700 1318-1643
3.	रीति काल	विक्रम संवत् सन्	1700-1900 1643-1843
4.	आधुनिक काल	विक्रम संवत् सन्	1900 से आज तक 1843 से आज तक

उपर्युक्त काल-विभाजन में यह ध्यान रखने योग्य है कि यह विभाजन आदि और अंत की दो तिथियों की सीमा में बंधा नहीं है। इन तिथियों को केवल विभिन्न युगों का सूचक समझना चाहिए। प्रत्येक काल में इस काल की मुख्य प्रवृत्तियों के अतिरिक्त कुछ गौण प्रवृत्तियाँ भी सम्मिलित होती हैं और जिस काल में कुछ विशेष प्रकार की रचनाएँ अधिक होती हैं, उस काल का नामकरण उन रचनाओं के आधार पर किया गया है, जैसे-वीरगाथा काल, भक्ति काल, रीति काल आदि। कहीं-कहीं किसी युग का नामकरण प्रमुख साहित्यकारों के नाम पर भी किया गया है, जैसे-भारतेंदु युग, द्विवेदी युग आदि। हिंदी साहित्य के प्रमुख कालों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है।

1.2 वीरगाथा काल

इस काल में विभिन्न राजाओं के आश्रय में रहने वाले कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की वीरता के वर्णन के लिए उनकी प्रशंसा में कविताएँ लिखी हैं, इसलिए इस काल को वीरगाथा काल कहा गया। यह देश में राजनीतिक उथल-पुथल का काल था। चारों ओर अशांति का वातावरण था। सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् राज्यों में विघटन की स्थिति थी। छोटे-छोटे रजवाड़ों के अधिपति (तोमर, राठौर, चौहान, सोलंकी, चंदेल आदि) राजपूत आपस में लड़कर देश की शक्ति को क्षीण कर रहे थे। सामान्यतः विदेशी हमलों के समय ये एक-दूसरे की सहायता नहीं करते थे। कभी-कभी अपने ही देश के शत्रु राजाओं के विरुद्ध विदेशी आक्रांताओं से मिल भी जाते थे। इसी आपसी फूट का लाभ उठाकर मुसलमानों ने देश पर आक्रमण करके देश के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया।

इस काल के राजाश्रय में पलने वाले कवि अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में कविता लिखते थे और युद्ध में राजाओं को जोश दिलाने के लिए उन्हें सुनाते थे। कुछ आश्रित कवि तो आवश्यकता पड़ने पर राजाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध में भाग भी लेते थे।

इस काल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

- (i) इस काल में अपभ्रंश से हिंदी के आरंभिक भाषा रूप का जन्म हुआ।
- (ii) इस काल में काव्य के क्षेत्र में वीर रस की प्रधानता रही। इस काल के कवियों ने अपनी रचनाओं में अपने आश्रयदाता राजाओं की वीरता की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा की।
- (iii) इस काल में वर्णनात्मक काव्यों का ही अधिक सृजन हुआ।
- (iv) इस काल की रचनाओं पर स्वदेश का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।
- (v) अधिकांश राजा राजस्थान के राजपूत थे, इसलिए काव्यों में राजस्थान के 'डिंगल' भाषा रूप का प्रयोग हुआ है।

इस काल का काव्य वीर रस प्रधान है। इसमें रासो की प्रधानता है। इनमें सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो' है। यह दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान के जीवन से संबंधित है। चंदबरदाई पृथ्वीराज चौहान के राजकवि थे। इसमें कवि ने शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के युद्ध का सजीव वर्णन किया था। इसमें वीर रस के साथ श्रृंगार रस का हृदयस्पर्शी वर्णन है। 'पृथ्वीराज रासो' को डिंगल साहित्य का प्रथम प्रबंधकाव्य और चंदबरदाई को प्रथम महाकवि माना जाता है।

इस काल के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं :-

चंदबरदाई	-	पृथ्वीराज रासो
नरपति नाल्ह	-	बीसलदेव रासो
जगनिक	-	परमाल रासो
दलपत विजय	-	खुमान रासो
भट्ट केदार	-	जयचंद प्रकाश
विद्यापति	-	कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पदावली आदि

इसके अतिरिक्त इस काल में गोरखनाथ की बानियाँ, चौरासी सिद्धों के दोहे और गीत, अमीर खुसरो की पहेलियाँ और भाँति-भाँति के जैन चरित काव्य मिलते हैं।

1.2.1 भक्ति काल

वीरगाथा काल के समाप्त होने से पहले ही साहित्य के क्षेत्र में बदलाव आने लगा था। दिल्ली सहित देश के बड़े भाग पर मुसलमानों का आधिपत्य हो गया था। हिंदुओं के हृदय में भय और आतंक व्याप्त था। उनके पास अपने धर्म की रक्षा की शक्ति नहीं बची थी। उनका धर्म, संस्कृति, आत्मविश्वास सभी कुछ खतरे में था।

ऐसी ही निराशाजनक स्थिति में भक्ति का उदय हुआ। इसी समय दक्षिण में उत्पन्न भक्ति आंदोलन का प्रचार रामानंद ने उत्तर में किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि एक ओर तो संत कवियों ने हिंदू और मुसलमानों में समान रूप से स्वीकार्य निर्गुण (निराकार) ईश्वर की भक्ति में काव्य लिखा तो दूसरी ओर राम और कृष्ण की भक्ति पर आधारित सगुण काव्य की रचना आरंभ हुई।

यहाँ भगवान के निर्गुण और सगुण रूप के अंतर को समझना आवश्यक है। निर्गुण भक्ति में भगवान का कोई रूप या आकार नहीं होता। निर्गुण भक्त निराकार भगवान से या तो प्रेम करता है या प्रेम की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने पर अधिक बल देता है। इसी कारण भक्ति काल में निर्गुण भक्ति की प्रेममार्गी और ज्ञानमार्गी दो प्रकार की धाराएँ प्रवाहित होती दिखाई देती हैं।

दूसरी ओर सगुण भक्ति में भक्त भगवान को रूप और आकार वाला मानता है। वह इस साकार भगवान से प्रेम करता है। उसका यह प्रेम अत्यंत स्वाभाविक है। वह उसका प्रेम पाने के लिए उसकी पूजा करता है। इस सगुण भगवान के भी दो रूप हैं। ये दो रूप विष्णु के अवतार राम और कृष्ण हैं। इस प्रकार सगुण भक्ति की दो शाखाएँ हो गई—एक राम भक्ति शाखा और दूसरी कृष्ण भक्ति शाखा।

निर्गुण भक्ति धारा

निर्गुण भक्ति के आरंभ होने का कारण यह था कि लोग कर्मकांड, अंधविश्वास और कुरीतियों में फँसे हुए थे। हिंदू और मुसलमान, धर्म के नाम पर आपस में लड़ते थे। ऐसे समय में कबीर, नानक आदि संतों ने उन्हें समझाया कि हिंदुओं का राम और मुसलमानों का रहीम उसी भगवान के नाम हैं। उन्होंने दोनों धर्मों के आडंबरों एवं कट्टरपंथ पर कठोर प्रहार किया और मनुष्य मात्र को मानवता का संदेश दिया। रामानंद के प्रभाव के कारण उन संतों का ब्रह्म और माया में विश्वास था। ईश्वर को पाने के लिए इन्होंने मन को शुद्ध करने और आचरण को सुधारने पर जोर दिया। इस धारा में जहाँ कबीर ने गुरु और ज्ञान को आवश्यक माना वहीं मलिक मुहम्मद जायसी ने प्रेम को प्रधानता दी। इस प्रकार निर्गुण भक्ति के ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी शाखाओं के रूप में दो भेद हुए। इन्हें क्रमशः संतकाव्य और सूफीकाव्य भी कहा जाता है।

इन दोनों शाखाओं के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं :—

ज्ञानमार्गी		प्रेममार्गी	
कवि	कृतियाँ	कवि	कृतियाँ
कबीरदास	बीजक (साखी, सबद, रमैनी)	जायसी	पद्मावत
गुरुनानक	गुरु ग्रंथ साहिब, जपुजी, असा दी वार आदि	मंझन	मधुमालती
रैदास	रैदासबानी	मुल्लादाउद	चंदायन
मलूकदास	ज्ञानबोध	कुतुबन	मृगावती
दादूदयाल	फुटकर पद	नूरमोहम्मद	अनुराग बाँसुरी
		उस्मान	चित्रावली

इनमें कबीर के पदों की भाषा सधुक्कड़ी (खिचड़ी) भाषा थी जब कि जायसी ने अवधी में काव्य रचना की।

सगुण भक्ति धारा

भगवान के साकार रूप की उपासना करने वाले सगुण भक्त कवि मानते हैं कि भगवान पापियों का नाश करने के लिए जन्म या अवतार लेते हैं और भक्तों का कल्याण करते हैं। सगुण भक्तों के अनुसार जीवन ईश्वर का अंश है। ईश्वर सर्वज्ञ है किंतु जीव अल्पज्ञ है। भगवान हमेशा आनंद में निमग्न (डूबा) रहता है। वह दयालु है और भक्तों पर दया करने के लिए अवतार लेता है। निर्गुण भक्त संसार को अवास्तविक या मिथ्या (भ्रम) मानते हैं जब कि सगुण भक्तों का कहना है कि जिस संसार में भगवान जन्म लेते हैं, वह अवास्तविक या मिथ्या कैसे हो सकता है। यह संसार भगवान की लीला स्थली है।

सगुण भक्ति की दो धाराएँ हैं - 1. राम-भक्ति शाखा 2. कृष्ण-भक्ति शाखा

राम-भक्ति शाखा

राम-भक्ति धारा का प्रवर्तन रामानुजाचार्य के शिष्य रामानंद ने किया। इन्होंने राम के लोक-कल्याणकारी रूप की उपासना की। राम-कथा को आधार मानकर जो काव्य लिखा गया, उसे रामकाव्य कहा गया। इसके प्रमुख कवि और उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं :-

गोस्वामी तुलसीदास	-	रामचरितमानस (अवधी), विनय पत्रिका (ब्रजभाषा)
स्वामी अग्रदास	-	ध्यान मंजरी, रामध्यान मंजरी
केशवदास	-	रामचंद्रिका (ब्रजभाषा)
नाभादास	-	भक्तमाल
हृदयराम	-	हनुमन्नाटक
प्राणचंद चौहान	-	रामायण महा नाटक

कृष्ण-भक्ति शाखा

कृष्ण-भक्ति धारा का प्रवर्तन वल्लभाचार्य ने किया था। इन्होंने कृष्णपूजा का जो रूप निर्धारित किया वह बहुत ही आकर्षक था। राम-भक्ति धारा और कृष्ण-भक्ति धारा में एक बड़ा अंतर यह था कि राम-भक्त स्वयं को राम का सेवक या दास समझते थे जब कि कृष्ण-भक्त स्वयं को कृष्ण का सखा मानते थे। कृष्ण-भक्त कवि, भक्त और भगवान के बीच प्रेमी-प्रेमिका का संबंध मानते थे। इसलिए उनके अनुसार भक्त को भगवान के समक्ष आत्म-समर्पण करना चाहिए तब भगवान स्वयं भक्त की चिंता करते हैं।

इस काव्यधारा के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं :-

सूरदास	-	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी
नंददास	-	रास पंचाध्यायी, भ्रमरगीत, अनेकार्थमंजरी
कृष्णदास	-	भ्रमरगीत, प्रेमतत्त्व निरूपण
परमानंद	-	परमानंदसागर
कुंभनदास	-	फुटकर पद
चतुर्भुजदास	-	द्वादश यश, भक्ति प्रताप, हितज् को मंगल
छीतस्वामी	-	फुटकर पद
गोविंदस्वामी	-	फुटकर पद
मीराबाई	-	रागसोरठ पद संग्रह, नरसी जी का मायरा, रागगोविंद
रसखान	-	प्रेमवाटिका, सुजान रसखान।

अधिकांश कृष्ण काव्य ब्रजभाषा में लिखा गया है। इन्हें मुक्तक काव्य कहा जा सकता है। सूरदास, नंददास, कृष्णदास, परमानंददास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी अष्टछाप के कवि हैं।

1.2.2 रीति काल

संवत् 1700 के आसपास पुनः हिंदी साहित्य में एक मोड़ आता है। रीति काल के कवियों से पहले भक्ति काल का समृद्ध साहित्य था। भक्ति साहित्य में कलात्मक सौंदर्य के बजाय जन कल्याण की भावना अधिक थी। निराश और डरी हुई जनता के हृदय में उनकी रचनाओं ने आशा और विश्वास पैदा किया। भक्ति काल के राधा और कृष्ण रीति काल में नायिका और नायक में बदल गए। संस्कृत साहित्य के प्रभाव से इस युग के कवियों ने रीति, रस, नायिका भेद को अपने काव्य का विषय बनाया। भक्ति काल में अलंकार गौण थे, रीति काल में उनकी प्रधानता हो गई। काव्य मानसिक विलास का साधन बन गया। प्रभु के प्रति प्रेम और भक्ति की प्रवृत्ति श्रृंगारिकता में बदल गई। इस काल में रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य की रचना की गई। रीतिबद्ध का आशय काव्यशास्त्र का अनुसरण था जब कि रीतिमुक्त का आशय स्वच्छंद काव्य प्रवृत्ति है।

इस काल में कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को रिझाने के लिए मुक्तकों की रचना की, इसलिए प्रबंध काव्य का लगभग अभाव रहा। राजाश्रय में दरबारी जीवन श्रृंगारमय हो गया था। सुरा-सुंदरी का

प्रभाव बढ़ गया था। नारी विलास का साधन समझी जाने लगी और काव्य का विषय नारी सौंदर्य तक सीमित रह गया था। रीति काल के कवियों की काव्यभाषा ब्रज थी। इस काल में अवधी का भी प्रयोग हुआ। इस काल के मुख्य कवि और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

बिहारी	-	बिहारी सतसई
चिंतामणि त्रिपाठी	-	कविकुल कल्पतरु, काव्य विवेक, छंदविचार, काव्य प्रकाश
मतिराम	-	मतिराम सतसई, रसराज, ललित ललाम, छंदसार
भूषण	-	शिवराज भूषण, शिवाबावनी, छत्रसाल दसक
देव	-	अष्टयाम, रसलिवास, प्रेमचंद्रिका, नखशिख, भावविलास
पद्माकर	-	गंगालहरी, जगत विनोद, पद्माभरण
रसलीन	-	रसप्रबोध, अंग दर्पण
घनानंद	-	सुजान सागर, बिरहलीला

1.2.3 आधुनिक काल

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल का विशेष महत्व है। इसका आरंभ संवत् 1900 से माना जाता है। इस काल में हिंदी साहित्य की सभी विधाओं का विकास हुआ। इस काल के साहित्य पर देश की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा। देश पर अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित होने के कारण पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव बढ़ा। ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के कारण शिक्षा का प्रसार हुआ। उधर ईसाइयों के धर्म प्रचार के कारण राजा राममोहन राय और आर्य समाज के सुधार आंदोलनों का भी प्रभाव पड़ा। इससे राष्ट्रव्यापी पराधीनता की प्रतिक्रिया के कारण राष्ट्रभावना का उदय हुआ। रीति काल की राजभक्ति ने देश भक्ति का रूप धारण कर लिया। अंग्रेजी शासन में बुद्धिवाद की प्रधानता के कारण मनुष्य का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। काव्य रचना के क्षेत्र में ब्रजभाषा का स्थान खड़ी बोली ने ले लिया। इस काल में पद्य के साथ हिंदी गद्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना आदि सभी विधाओं में साहित्य की रचना होने लगी। इसलिए इसे गद्य काल भी कहा जाता है।

यह काल दूसरे कालों की अपेक्षा बहुत व्यापक है इसलिए इस काल के साहित्य को हम निम्नलिखित चरणों में बाँट सकते हैं :-

- (i) भारतेंदु युग
- (ii) द्विवेदी युग
- (iii) छायावाद युग और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा
- (iv) छायावादोत्तर युग -
 - (क) प्रगतिवाद
 - (ख) प्रयोगवाद
 - (ग) नई कविता

उपर्युक्त चरणों में पहले दो चरणों के नाम क्रमशः भारतेंदु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी नामक दो साहित्यकारों के नाम पर हैं जब कि अन्य चरणों के नाम साहित्य की विशेष प्रवृत्ति के आधार पर हैं।

भारतेंदु युग

भारतेंदु युग के साहित्य में देशप्रेम, निज भाषा और संस्कृति प्रेम तथा राष्ट्रीयता की भावना का उदय हुआ। रीतिकाल के बाद आधुनिक काल के साहित्य में जो परिवर्तन हुआ उसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं। भारत पर ब्रिटिश शासन पूर्ण रूप से स्थापित हो गया था। इसलिए भारतीय संस्कृति, धर्म, भाषा और उद्योगों को खतरा पैदा हो गया था। यही कारण है कि इस काल के साहित्य में देशप्रेम, संस्कृति, भाषा और धर्म की रक्षा की भावना दिखाई देती है।

इस काल की दूसरी विशेषता यह है कि पद्य के साथ गद्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की जाने लगीं। इस काल की कविता में नई और पुरानी विचारधाराओं का संगम दिखाई देता है। कवि और लेखक समय के प्रति सजग थे। वे अंग्रेजी शासन का विरोध नहीं कर सकते थे इसलिए उन्होंने कविता में स्वदेश प्रेम, स्वसंस्कृति और स्वभाषा का गुणगान किया। इस युग के साहित्य को तत्कालीन नवनिर्मित साहित्यिक गोष्ठियों और नई पत्र-पत्रिकाओं से बल मिला।

कवियों ने कविता के लिए ब्रजभाषा का प्रयोग जारी रखा। स्वयं भारतेंदु ने ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं। इस युग के प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

- | | | |
|---------------------|---|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| भारतेंदु हरिश्चंद्र | - | प्रेम माधुरी, प्रेमप्रलाप, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, नीलदेवी, चंद्रावली, शृंगार रस के कवित्त, सवैये, गेय पद आदि। |
| प्रताप नारायण मिश्र | - | प्रताप लहरी, बुढ़ापा, गोरक्षा आदि। |
| अंबिकादत्त व्यास | - | दशरथ विलाप। |

द्विवेदी युग

द्विवेदी युग को खड़ी बोली के विकास का युग भी कहा जाता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में विकसित करने का प्रयास किया। इस प्रयास में उन्हें सफलता भी मिली। इस युग में पद्य और गद्य दोनों में ही नवीन विषयों पर रचनाएँ की गईं। विशेषतः गद्य के क्षेत्र में उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना आदि में रचनाएँ होने लगीं। इसी समय आर्य समाज और राजा राममोहन राय के नैतिकता के आंदोलनों के प्रभाव से कविता में शृंगार रस की धारा मंद पड़ गई। इस युग के साहित्य में भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों की प्रधानता रही।

इस काल में द्विवेदी जी ने पत्र-पत्रिकाओं (विशेषतः 'सरस्वती') के माध्यम से हिंदी गद्य में व्याकरण की दृष्टि से सुधार किया। उन्होंने कवियों को ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली में कविता लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। भारतेंदु युग तक पद्य के लिए ब्रजभाषा का ही प्रयोग होता था लेकिन गद्य की रचना खड़ी बोली में शुरू हो गई थी। अब पद्य के लिए भी खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा। इस दिशा में द्विवेदी जी का प्रयास प्रशंसनीय है। द्विवेदी जी ने स्वयं भी कालिदास के 'कुमार संभव' और अन्य संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद किया।

इस युग के प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	- प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे
मैथिलीशरण गुप्त	- साकेत, यशोधरा, भारत-भारती, जयद्रथ वध, पंचवटी
श्रीधर पाठक	- श्रान्त पथिक, ऊजड़ ग्राम
गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही'	- प्रेमपचीसी, कुसुमांजलि
जगन्नाथ दास 'रत्नाकार'	- उद्धवशतक, गंगावतरण (ब्रजभाषा में)

छायावाद युग और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा

'द्विवेदी युग' की कविता में बौद्धिकता और उपदेशात्मकता थी। कवियों पर राष्ट्रवादी धारा का प्रभाव था। कवियों का ध्यान स्थूल संसार की ओर अधिक था। उनके तथ्यपरक वर्णन के कारण कला पक्ष छिपा रहा। छायावाद युग में कविता ने नया मोड़ लिया। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर देश को वायदे के अनुसार आजादी नहीं मिली और महात्मा गांधी के सत्याग्रह के विफल हो जाने के कारण देश में निराशा व्याप्त हो गई। साहित्य पर भी इसका प्रभाव पड़ा। कवि अंतर्मुखी होकर कविता लिखने लगा। द्विवेदीकालीन काव्य की इतिवृत्तात्मकता का स्थान यहाँ अमूर्त विधान और चित्रात्मकता ने ले लिया। इस नई शैली में गीतात्मकता थी। कवियों ने वड्सवर्थ, कीट्स, शैली, बायरन आदि रोमांटिक कवियों से प्रेरणा ली। इसके अलावा बंगला के प्रभाव से छायावादी कविता में लालित्य और सुकुमारता आ गई। छायावादी कविता में प्रेम और सौंदर्य का अच्छा वर्णन मिलता है। इस युग के कवियों ने प्रकृति को नारी के रूप में चित्रित किया। इनकी कविताओं में रहस्य का पुट दिखाई देता है। वस्तुतः छायावादी कवियों को मूल प्रेरणा भारतीय आत्मदर्शन और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रतीकों से मिली। इन्होंने प्रकृति का मानवीकरण किया और उस पर चेतना को आरोपित किया। छायावादी कविता में भाषा का परिष्कार इसकी प्रमुख विशेषता है। द्विवेदी युग में जिस राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति आरंभ हुई उसे छायावाद युग में भी पर्याप्त महत्व प्राप्त हुआ।

इस युग के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ नीचे दी जा रही हैं :-

जयशंकर प्रसाद	- कामायनी, आँसू, लहर, झरना।
सुमित्रानंदन पंत	- वीणा, पल्लव, गुंजन, उत्तरा, चिदंबरा, लोकायतन।
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	- परिमल, अनामिका, अणिमा, आराधना, तुलसीदास, कुरुरमुत्ता, राम की शक्ति पूजा।
महादेवी वर्मा	- यामा, नीहार, नीरजा, दीपशिखा।

छायावाद युग की राष्ट्रीय काव्यधारा के रचनाकारों में प्रमुख कवि हैं :-

माखनलाल चतुर्वेदी	- 'एक फूल की चाह' (कविता), हिमकिरीटनी, हिमतरंगिणी, युग चरण
सुभद्रा कुमारी चौहान	- झाँसी की रानी, वीरों का वसंत।
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	- 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ' (कविता)।
रामधारी सिंह 'दिनकर'	- कुरुक्षेत्र, उर्वशी।

छायावादोत्तर युग

(क) **प्रगतिवाद** - पंत और निराला की कविताओं में सन् 1936 के आसपास एक नवीन शैली के दर्शन होते हैं। उसमें दलित शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति है। जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टि प्रगतिशील कवियों का आदर्श था। आजादी के बाद देश का शासन भारतीय नेताओं के हाथ में आ गया। कवियों के विचारों पर पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और साहित्य का प्रभाव पड़ा। मार्क्सवादी विचारधारा की लहर चल पड़ी और इसका प्रभाव कविता पर भी दिखाई देता है। मनुष्य का स्थान सबसे ऊपर माना गया। प्रगतिवादी काव्य शोषण का विरोध करता है। इस काल की कविता में क्रांति की भावना दिखाई देती है। प्रगतिवादी काव्यधारा के मुख्य कवि थे - केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नरेंद्र शर्मा, शिवमंगल सिंह सुमन, गजानन माधव 'मुक्तिबोध' नागार्जुन, प्रभाकर 'माचवे', रांगेय राघव आदि।

(ख) **प्रयोगवाद** - इस युग के कवियों ने जहाँ कविता में नए-नए प्रयोग किए वहीं नए-नए विषयों का भी चयन किया। प्रयोगवाद से पूर्व कविता में छंद का प्रयोग आवश्यक समझा जाता था। इस युग में कवियों ने छंद को छोड़कर गद्य जैसी अतुकांत कविताएँ लिखीं। कविता में बौद्धिकता को विशेष महत्व दिया गया। इन कवियों ने प्रयोगवादी कविता में जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। नये प्रतिमानों और शब्दों का प्रयोग इस युग की विशेषता है। इसलिए इन्हें राहों का अन्वेषी कहा जाता है। प्रयोगवाद को आरंभ करने का श्रेय अज्ञेय को है। वे इसके प्रवर्तक माने जाते हैं। अज्ञेय ने सन् 1943 में 'तारसप्तक' का संपादन किया। 'तारसप्तक' में जिन कवियों की रचनाएँ हैं उन्हें प्रयोगवादी कवि कहा गया। ये कवि हैं - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नेमिचंद्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, भवानीप्रसाद मिश्र, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर और रामविलास शर्मा।

(ग) **नई कविता** - प्रयोगवाद के बाद कविता में स्थिरता दिखाई देती है और उसके अपने मूल्य स्थापित होते हैं। कविता नया रूप धारण कर लेती है। इस कविता को 'नई कविता' कहा गया। इस कविता की रचना करने वाले कवि प्रायः प्रयोगवादी ही हैं। कुछ और नाम भी इसमें जुड़ गए हैं। प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	- कितनी नावों में कितनी बार, भग्नदूत, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी
धर्मवीर 'भारती'	- अंधायुग, कनुप्रिया, सात गीत वर्ष
गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	- चाँद का मुँह टेढ़ा है
गिरिजाकुमार माथुर	- धूप के धान, शिलापंख चमकीले, मंजीर, नाश और निर्माण
भवानी प्रसाद मिश्र	- गीतफरोश, खुशबू के शिलालेख
नरेश मेहता	- वनपाखी सुनो, संशय की एक रात, महाप्रस्थान
दुष्यंत कुमार	- एक कंठ विषपायी, सूर्य का स्वागत

1.3 वीरगाथा काल

हिंदी साहित्य का आरंभ अपभ्रंश की अंतिम अवस्था से हुआ है। इसे अपभ्रंश और हिंदी भाषा का संधिकाल कह सकते हैं। समय के साथ-साथ धीरे-धीरे हिंदी भाषा अपभ्रंश के प्रभाव से मुक्त होती गई और 1575 वि० संवत् तक किसी-न-किसी रूप में हिंदी पर अपभ्रंश का प्रभाव बना रहा। इस काल के साहित्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। ये हैं –

1. अपभ्रंश काव्य
2. लोकभाषा काव्य

अपभ्रंश काव्य

हिंदी में अपभ्रंश काव्य का सबसे पुराना रूप सिद्ध साहित्य में मिलता है। सातवीं शताब्दी में सिद्ध योगियों ने बौद्ध धर्म के विरुद्ध धार्मिक विद्रोह का शंखनाद फूँक दिया था। यह परंपरा बारहवीं शताब्दी तक चलती रही। इन सिद्धों ने विरक्ति, त्याग, ज्ञान और संयम का विरोध करके सिद्धि, चमत्कार, मद्यपान और भोग-विलास को प्रधानता दी। उनकी उपदेशात्मक रचनाओं में पुरानी हिंदी का रूप दिखाई देता है। इस काल के प्रसिद्ध कवि थे सरहपा, जो वज्रयान शाखा के ब्राह्मण भिक्षु थे। इन सिद्ध संतों के विरोध में नाथपंथी योगियों का उदय हुआ। इसके प्रवर्तक बाबा गोरखनाथ माने जाते हैं। नाथ साहित्य की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित थी।

अपभ्रंश साहित्य का दूसरा रूप जैन धर्माचार्यों की रचनाओं में पाया जाता है। 'हेमचंद्र का व्याकरण' इसका अच्छा उदाहरण है। इसमें पुरानी हिंदी की झलक मिलती है। जैसे—

भल्ला हुआ जु मारिया, बहिणि महारा कंतु।

लज्जेजं तु वयंसिअहु, जइ भग्गा घरु एंतु।।

जैन साहित्य के प्रमुख कवि स्वयंभूदेव और पुष्पदंत थे। स्वयंभूदेव की प्रसिद्ध रचना 'पउम चरित' (पद्मचरित) है। पुष्पदंत जैन साहित्य के उत्कृष्ट महाकवि थे। इनकी प्रमुख रचना 'णायकुमार-चरित' (नागकुमार चरित) है।

लोकभाषा काव्य

अपभ्रंश भाषा की रचनाओं के साथ राजाश्रय में रहने वाले कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में काव्यग्रंथ लिखे। इनमें वीर रस की प्रधानता थी। ये रचनाएँ सामान्यतः प्रबंधकाव्य के रूप में और कहीं-कहीं मुक्तकों यानी फुटकर गेय पदों के रूप में लिखी गईं। इन रचनाओं का नाम 'रासो' था। प्रमुख 'रासो' ग्रंथ और उनके ग्रंथकार निम्नलिखित हैं :—

खुमान रासो	-	दलपतविजय
बीसलदेव रासो	-	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	-	शारंगधर
परमाल रासो	-	जगनिक
पृथ्वीराज रासो	-	चंदबरदाई

इसके अतिरिक्त 'ढोला-मारू रा दूहा', 'जयचंद प्रकाश' और 'जयमयंक जसचंद्रिका' इस काल की अन्य उत्कृष्ट रचनाएँ हैं।

सातवीं शताब्दी के अंत तक भारत का केंद्रीभूत हिंदी क्षेत्र बिखराव की स्थिति में आ गया था। छोटे-छोटे राजे-रजवाड़े जरा-जरा सी बात पर आपस में लड़कर देश को कमजोर करने में लगे थे। मुसलमान आक्रांताओं ने इसका खुलकर लाभ उठाया। इन्होंने पश्चिमोत्तर से भारत पर हमले किए और बारहवीं शताब्दी तक उनका उत्तरी भारत के अधिकांश भाग पर अधिकार हो गया।

उस समय राजस्थान में राठौर, सोलंकी, परिहार, चंदेल, तोमर, गहलौत आदि वंशों के शासक थे। वे आपस में युद्ध में संलग्न रहते थे। साहित्य पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इस काल में इन राजाओं के आश्रय में रहने वाले कवियों ने डिंगल भाषा में काव्य सृजन किया। यह काव्य मुख्य रूप से अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में लिखा गया था। ये राजा एक-दूसरे के साथ युद्ध में उलझे रहते थे। इस प्रकार की कविताओं में वीर रस की प्रधानता थी। ये कविताएँ चूंकि राजाओं की झूठी प्रशंसा में लिखी जाती थीं इसलिए इसे चारण काव्य भी कहा जाता है। इस काल के काव्य ग्रंथ प्रायः प्रबंध काव्य थे।

1.3.1 वीरगाथा काल के प्रमुख कवि

चंदबरदाई

वीरगाथा काल के कवियों में चंदबरदाई (संवत् 1225) प्रमुख थे। चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का विशालकाय चरित-काव्य है। 'चंद' ने इसमें पृथ्वीराज चौहान की यशोगाथा का वर्णन किया है। यह ग्रंथ अपनी विशालता के लिए हिंदी साहित्य में जाना जाता है। इतने बड़े आकार का कारण यह है कि समय-समय पर इसमें विभिन्न कवियों द्वारा उनके निर्मित अंश मिलाए जाते रहे। संभवतः इसका मूलरूप काफी छोटा रहा होगा। 'चंद' लाहौर के निवासी थे। और पृथ्वीराज चौहान के मित्र तथा सेनापति थे। परंतु इनके जीवन का महत्वपूर्ण भाग दिल्ली में पृथ्वीराज के साहचर्य में बीता।

भाषा की दृष्टि से 'पृथ्वीराज रासो' का विशेष महत्व है। वीरता के भावों या वीर रस की जैसी सुंदर अभिव्यक्ति इस काव्य में हुई है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। इसमें आबू में यज्ञ कुंड से चार क्षत्रिय कुलों की उत्पत्ति से लेकर दिल्ली के अंतिम सम्राट पृथ्वीराज के कैद होने तक की कथा वर्णित है। इसमें संयोगिता और पृथ्वीराज के विवाह की कथा के साथ-साथ चंगेज खाँ और तैमूरलंग आदि के आक्रमणों का भी सुंदर वर्णन है। इस ग्रंथ में वीरगाथा काल की जैसी झलक मिलती है वैसी किसी दूसरे काव्य में नहीं पाई जाती है। छंदों का जैसा विस्तार और भाषा का जैसा सुगठित रूप इनमें मिलता है वैसा अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देता। रसात्मकता की दृष्टि से इसकी गणना हिंदी साहित्य के कुछ इने-गिने काव्यों में की जा सकती है। रासो में अनेक कथानक रुढ़ियों और काव्य रुढ़ियों का प्रयोग किया गया है। नायिका का नखशिख वर्णन, सेना के प्रयाण, युद्ध, षट् ऋतुओं का वर्णन भी कवि ने मनोयोग से किया है। रासो में छप्पय की प्रधानता है। नीचे चंदबरदाई की कविता में वीर रस और श्रृंगार रस का एक-एक उदाहरण देखिए—

वीर रस

कालंजर जब परिय भरिय सेनापति साहित्य ।
पंच फौज एक ठूठ कन्ह करवारि सम्हारिय॥
घर पारे बहुमीर सथ्य जब सेना भगिगय।
गर घत्ती कम्मान लियौ गोरीय उछगियु॥

शृंगार रस

मनहूँ काम कामिनी रचिय, रचिय रूप की रास।
पसु पंछी सब मोहनी सुर नर मुनिवर पास॥

दलपत विजय

इस काल के दूसरे कवि दलपत विजय हैं। इनकी रचना का नाम 'खुमान रासो' है। इसमें चित्तौड़ के राजा खुमान द्वितीय (संवत् 867 वि०) से लेकर महाराणा प्रताप तक के युद्धों का वर्णन है। इनमें से 'पृथ्वीराज रासो' के समान पर्याप्त प्रक्षिप्त (बाद में जोड़े गए) अंश हैं।

नरपति नाल्ह

'नाल्ह' के गीतात्मक काव्य का नाम 'बीसलदेव रासो' है। इनके काव्य में अपभ्रंश का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। इसमें अपभ्रंश के व्याकरण के नियमों का पालन हुआ है। इसमें मालवा के राजा भोज परमार की पुत्री राजमती के बीसलदेव के साथ विवाह आदि का सुंदर वर्णन है। इसमें वीर रस की अपेक्षा शृंगार रस की प्रधानता है।

जगनिक

जगनिक का 'परमाल रासो' एक ओजपूर्ण काव्य है। इसका दूसरा नाम 'आल्हाखंड' है। इसमें महोबा के राजा परमार के दरबारी और वीर सेनापति आल्हा और ऊदल के युद्धों का वर्णन है। इसकी गाथा लोकप्रचलित है। उत्तर भारत विशेषतः राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के गाँव-गाँव में इनका खूब प्रचार रहा है। इसका उदाहरण देखिए -

इतना सुनिकै रायलंगरी, नैना अग्नि ज्वाल हुई जाए।
ऐसा देखो न काहू को, डोला ले दिल्ली को जाए॥
बातन-बातन बतबढ़ हुईगौ, औ बातन में बाढ़ि रारि।
दूनौ दल में हल्ला हुईगौ, छत्रिन खैंचि लई तरवारि॥
पैदल के संग पैदल भिरिगे, अरु असवारन के असवार।
पड़ौ जड़ाका दूनौ दल में, जँह मुँह तोर चले तरवारि॥

अन्य कवि

इस काल में रास परंपरा का 'संदेश रासक' ग्रंथ अद्दहमाण (अब्दुल रहमान) भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अमीर खुसरो

आचार्य शुक्ल के अनुसार खुसरो ने संवत् 1340 (1283 ई०) के लगभग रचना आरंभ की थी। जन-जीवन के साथ घुल-मिलकर काव्य-रचना करने वाले कवियों में खुसरो का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और कहमुकरियाँ लिखी थीं। वीरगाथा काल (आदिकाल) में खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने वाले वे पहले कवि हैं। खुसरो द्वारा रचित 20-21 ग्रंथ उपलब्ध

हैं। जिनमें 'खालिकबारी', 'पहेलियाँ', 'दो सुखने', 'गजल' आदि प्रसिद्ध हैं। भाषा की दृष्टि से उनकी पहेलियाँ साहित्य के इतिहास का सदा एक महत्वपूर्ण अंग रहेंगी।

खुसरो की भाषा का एक नमूना देखिए -

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औँधा धरा।

चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे॥ (1)

गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारै केस।

चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देश॥ (2)

विद्यापति

अपभ्रंश की परंपरा समाप्ति के 50-60 वर्ष बाद विद्यापति ने बीच-बीच में देश भाषा में भी कुछ पद्य रचकर अपभ्रंश में छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं, उस समय तक अपभ्रंश का स्थान देश भाषा ले चुकी थी। 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका' और 'पदावली' इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। 'कीर्तिलता' में तिरहुत के राजा कीर्तिसिंह की वीरता, उदारता आदि का वर्णन, देश भाषा के कुछ पद्यों तथा अपभ्रंश भाषा के दोहा, चौपाई, छंद, गाथा आदि में किया गया है। इस अपभ्रंश की विशेषता यह है कि यह पूरबी अपभ्रंश है। दूसरी विशेषता विद्यापति के अपभ्रंश की यह है कि वह प्रायः देशभाषा के अधिक निकट है।

विद्यापति जिस रचना के कारण मैथिलिकोकिल कहलाए, वह इनकी पदावली है। इन्होंने अपने समय की प्रचलित मैथिली भाषा का प्रयोग किया है। विद्यापति के पद अधिकतर श्रृंगार परक हैं जिनमें नायिका और नायक राधा-कृष्ण हैं। उन्होंने इन पदों की रचना श्रृंगार काव्य की दृष्टि से की है, भक्त के रूप में नहीं।

सरल बसंत समय भल पावलि दछिन पवन बह धीरे।

सपनहु रूप बचन इक भाखिय मुख से दूरि करु चीरै॥

पाठ-7 : भक्ति काल और रीति काल

भाग-क: भक्ति काल

1.0	भक्ति काल और रीति काल	120
1.1	भक्ति काल की पृष्ठभूमि	120
1.1.1	राजनीतिक परिस्थितियाँ	120
1.1.2	सामाजिक परिस्थितियाँ	120
1.1.3	धार्मिक परिस्थितियाँ	120
1.2	भक्तिकालीन काव्य धाराएँ	121
1.2.1	ज्ञानमार्गी शाखा	121
	- कबीर	123
1.2.2	प्रेममार्गी शाखा	124
	- मलिक मुहम्मद जायसी	125
1.2.3	रामभक्ति शाखा	126
	- गोस्वामी तुलसीदास	127
1.2.4	कृष्णभक्ति शाखा	128
	- सूरदास	129

भाग-ख: रीति काल

1.3	रीति काल	130
1.3.1	राजनीतिक परिस्थितियाँ	131
1.3.2	सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ	131
1.4	रीति काव्य धाराएँ	131
1.4.1	रीतिबद्ध धारा	132
	- केशवदास, पद्माकर	132
	- बिहारीलाल	133
1.4.2	रीतिमुक्त धारा	133
	- घनानंद	134
	- आलम	135

भाग-क : भक्ति काल

1.0 भक्ति काल और रीति काल

पिछले अध्याय में हमने हिंदी साहित्य के प्रथम चरण अर्थात् वीरगाथा काल के बारे में पढ़ा था। प्रस्तुत पाठ में हम भक्ति काल और रीति काल के बारे में पढ़ेंगे।

1.1 भक्ति काल की पृष्ठभूमि

भक्ति काल का आरंभ संवत् 1375 (सन् 1318) से माना जाता है। वीरगाथा काल की समाप्ति के साथ देश की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन हुए जिसका प्रभाव देश के वातावरण और साहित्य पर पड़ा।

1.1.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ

धीरे-धीरे मुसलमानों का शासन दिल्ली और उत्तर भारत पर स्थापित हो गया। हिंदुओं पर तरह-तरह के अत्याचार किए जाने लगे। असुरक्षा की भावना ने लोगों को भाग्यवादी बना दिया। राजकीय कार्यों में पक्षपात बढ़ गया। लोगों से बेगार कराई जाने लगी और स्त्रियों को भोग-विलास की वस्तु समझा जाने लगा। हिंदू राजाओं की परस्पर लड़ाइयों ने उनके बल को क्षीण कर दिया और वे भी मुस्लिम शासकों के अधीन हो गए।

1.1.2 सामाजिक परिस्थितियाँ

मुस्लिम शासकों और हिंदू सामंतों की विलासिता की प्रवृत्ति के कारण प्रजा पर आर्थिक भार बढ़ गया था। बहुसंख्यक हिंदू समाज का निर्धनता और निराशा के कारण बुरा हाल था। वर्णाश्रम व्यवस्था नष्ट होने लगी थी। हिंदू स्त्रियों ने आत्मरक्षा के लिए मुसलमानों की देखा-देखी परदा प्रथा को अपनाना शुरू कर दिया। तभी से हिंदू समाज में स्त्री जाति की सुरक्षा के लिए बाल-विवाह, बहु-विवाह जैसी कुरीतियाँ प्रचलित हो गईं।

1.1.3 धार्मिक परिस्थितियाँ

मुस्लिम शासक इस देश में अपने पैर जमाना चाहते थे। साथ ही वे अपने धर्म का प्रचार भी करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने उच्च वर्ग के लोगों को बल प्रयोग से और तथाकथित नीची कही जानेवाली जातियों के लोगों को प्रतिष्ठित पद का प्रलोभन देकर धर्मांतरण किया। हिंदू पहले ही सिद्ध योगियों और नाथपंथी संतों के प्रभाव से तंत्र-मंत्र और जादू-टोना आदि से प्रभावित थे। इससे हिंदू धर्म का निरंतर हास हो रहा था।

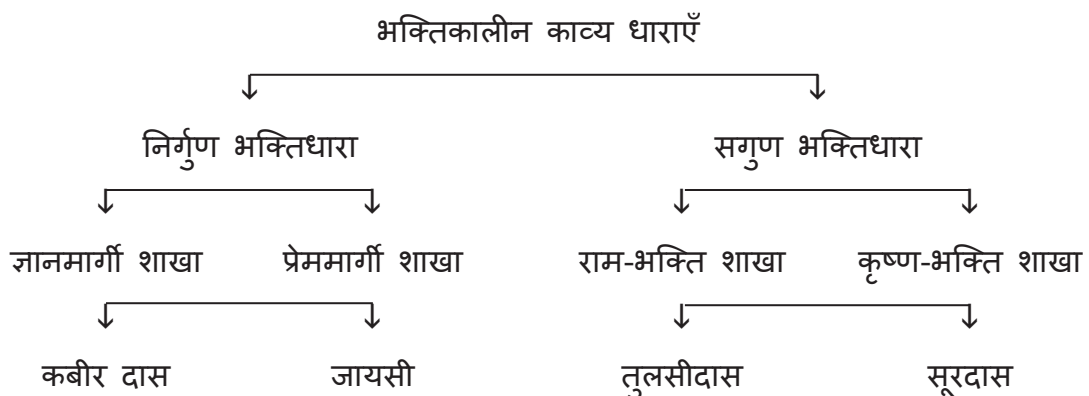
शासक वर्ग देश के शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए और इस्लाम के प्रचार के लिए जनता के निकट आना चाहता था। निराश हिंदू जनता ने इसका स्वागत किया। धीरे-धीरे दोनों धर्मों और संस्कृतियों में आपसी सहयोग की भावना पैदा होने लगी। दूसरी ओर ऐसे भी हिंदू थे जो इसे पसंद नहीं करते थे। उन्हें इस बात का विश्वास था कि विदेशी यवन शासकों के अत्याचारों से रक्षा के लिए ईश्वर अवतार लेगा और अत्याचारियों का नाश करेगा।

ऐसे समय में रामानुजाचार्य के शिष्य रामानंद ने और महाप्रभु वल्लभाचार्य ने वैष्णव धर्म का प्रचार करके भक्ति आंदोलन को जन्म दिया। रामानंद ने राम की और वल्लभाचार्य ने कृष्ण की उपासना के द्वारा अवतार की धारणा को जनता के सम्मुख रखा। इससे निराश जनता के हृदय में आशा का संचार हुआ। इसी समय हिंदुओं और मुसलमानों के बीच भेदभाव को मिटाने के लिए कुछ ऐसे संत कवि भी हुए जिन्होंने ईश्वर और खुदा, राम और रहीम के एकत्व को प्रतिपादित किया। उनका संबंध संतकाव्य धारा से था जिसके प्रवर्तक संत कबीर थे। कबीर भी रामानंद के शिष्य थे। परंतु, इन्होंने भक्ति के जिस रूप को चलाया वह वैष्णव भक्ति रूप से अलग था। इन्होंने निर्गुण, निराकार ब्रह्म की ऐसी भावना का प्रचार किया जिससे हिंदू और मुसलमान के बीच निकटता बढ़ी और परस्पर सद्भाव उत्पन्न हुआ।

इन प्रयत्नों से सूफी मत का धार्मिक प्रभाव भी बढ़ा। सूफी संतों ने भारतीय जीवन से संबंधित प्रेमख्यान काव्यों की रचना की।

इस प्रकार इस काल में एक ओर तो सगुण भक्ति राम-भक्ति धारा और कृष्ण-भक्ति धारा में प्रवाहित होने लगी तो दूसरी ओर निर्गुण भक्ति भी ज्ञानमार्गी शाखा, प्रेममार्गी शाखा के रूप में अस्तित्व में आई। वास्तव में इस देश में भक्ति का प्रवाह निरंतर चला आ रहा था किंतु जब आततायियों के अत्याचार से जनता त्रस्त और निराश होकर दिशाहीन हो गई तब भक्ति का स्रोत फूट पड़ा।

1.2 भक्तिकालीन काव्य धाराएँ



इस काल की भक्ति भावना ने दिशाहीन हिंदू जनता को नई दिशा प्रदान की और जीने की राह दिखाई। इस समय का भक्ति साहित्य भाषा, भाव, काव्य सौंदर्य आदि की दृष्टि से हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस काल में तुलसी, सूरदास, कबीर और जायसी जैसे उच्च कोटि के कवि हुए जिन पर कोई भी गर्व कर सकता है। इसलिए इस युग को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भी कहा जाता है।

1.2.1 ज्ञानमार्गी शाखा

पहले हम निर्गुण भक्ति की ज्ञानमार्गी शाखा पर विचार करें। पहले यह बताया जा चुका है कि रामानंद की शिष्य परंपरा में एक ओर तुलसीदास हुए तो, दूसरी ओर कबीर। तुलसीदास ने ब्रह्म के सगुण रूप की उपासना की तो कबीर ने निर्गुण ब्रह्म की। कबीर की प्रेरणा से हिंदी साहित्य में ज्ञानमार्गी भक्त कवियों की एक अलग शाखा चल पड़ी। कबीर, नानक, दादू, मलूकदास, सुंदरदास आदि इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हुए। ये सभी संत थे। इन्होंने एक ईश्वर की स्थापना करके बाहरी आडंबरों

और आचार-विचार को धर्म मानने वाले हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को फटकारा। इसे उनके दोहों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

“कांकर-पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।।”

संत कवि भिन्न-भिन्न जातियों के थे। इनके उपदेशों में जातिभेद को कोई महत्व नहीं दिया गया। इनका कथन था –

“जात पात पूछे ना कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई।”

इसके आधार पर उन्होंने मानव मात्र में एकता स्थापित करने की कोशिश की। जहाँ तक अध्यात्म का संबंध है, इन संत कवियों ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना की। परंतु उपासना के लिए इन्हें भी निर्गुण ब्रह्म में गुणों को आरोपित करना पड़ा। उपासना के लिए निर्गुण ईश्वर की प्रतिष्ठा करके तथा परमार्थ सिद्धि के लिए धर्म ग्रंथों की निस्सारता बताकर इन संतों ने एक ऐसा आधार तैयार कर दिया जिस पर हिंदू और मुसलमान दोनों समान भाव से चल सकें। इन संत कवियों ने अपने लौकिक जीवन को अत्यंत सरल, निर्मल और स्वाभाविक बनाने का उद्देश्य दिया और सदाचार पर विशेष बल दिया। इससे एक ऐसे सीधे-सादे भक्तिमार्ग की नींव पड़ी जिसका आधार था एकेश्वर और लौकिक जीवन की सरलता। इसकी ओर सामान्य जन भी आकर्षित हुआ।

संत कवियों की कविता से जिस भक्ति का विकास हुआ वह लोक-व्यापी न हो सकी। इनका उपास्य निर्गुण ब्रह्म लोक-व्यवहार से अलग निराकार और ज्ञान के द्वारा प्राप्य था। इसीलिए यह सबके हृदय में स्थित तथा दया आदि गुणों से युक्त होकर भी सर्वसाधारण के आकर्षण का विषय न बन सका। कबीर आदि संतों की वाणी भी इसकी जटिलता दूर न कर सकी।

नीचे ज्ञानमार्गी शाखा की विशेषताओं को संक्षेप में दिया गया है :-

- (i) इस शाखा का जन्म हिंदू-मुस्लिम एकता की भावना को स्थापित करने के लिए हुआ।
- (ii) इस शाखा के कवियों ने इस्लाम के एकेश्वरवाद और हिंदुओं के अद्वैतवाद को महत्व दिया।
- (iii) इन कवियों ने मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, व्रत-उपवास, रोजा, नमाज आदि मिथ्या आडंबरों का विरोध किया।
- (iv) ये कवि सांप्रदायिकता, वर्णाश्रम व्यवस्था और जात-पात के विरोधी थे। ये इंद्रिय निग्रह और साधना पर जोर देते थे।
- (v) इस शाखा के कवियों पर सिद्धों, योगियों और नाथपंथ का प्रभाव था इसलिए इनके काव्य में हठयोग की प्रधानता रही। हठयोगी हृदय के भीतर ब्रह्म का साक्षात्कार करने पर बल देते हैं।
- (vi) इस शाखा के कवि संत कहलाए। इनकी कविता उपदेश प्रधान रही।
- (vii) इनके काव्य पर अहिंसा, भक्ति भावना की महत्ता आदि की छाप भी पाई जाती है।
- (viii) प्रचार और उपदेश का साधन होने के कारण इनकी भाषा, सधुक्कड़ी भाषा कही जाती है।

कबीर

कबीरदास इस धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। अब तक के अनुसंधानों के अनुसार कबीर का जन्म संवत् 1456 में हुआ था। कहा जाता है कि कबीर को एक विधवा ब्राह्मणी ने जन्म दिया था। लोकलाज के डर से ब्राह्मणी ने कबीर को बनारस के लहरतारा तालाब में छोड़ दिया। जहाँ से जाति के जुलाहा नव दंपति नीरू और नीमा प्रातःकालीन सैर के दौरान लालन-पालन के लिए फूल पर लेटे बाल कबीर को अपने घर ले आए और उसका लालन-पालन किया।

स्वामी रामानंद को कबीर अपना गुरु मानते थे। कबीर भक्त और समाज सुधारक थे। इनकी रचनाओं में निर्गुण ब्रह्मवाद, सूफियों के रहस्यवाद, योगियों की साधना और अहिंसा आदि के साथ ही सगुण ब्रह्म का भी उल्लेख है। कबीर के पदों का वर्ण्य विषय ज्ञान का उपदेश है। इनकी रचनाओं में योगाभ्यास, गुरुमहिमा, माया के सिद्धांत नाम-महिमा और सत्संगति आदि का वर्णन है। इनके वर्णन का सामान्य विषय निर्गुण ईश्वर या ब्रह्म का निरूपण था। ज्ञान का यह वर्णन सरल और व्यावहारिक ढंग से किया गया है। इसलिए यह ज्ञान जनमानस में सहज रूप से उतर गया। कबीर की मृत्यु मगहर में हुई।

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने स्वयं कहा है - 'मसि कागद छुओ नहीं।' परंतु कबीर बहुश्रुत थे। साधु-संतों के सत्संग से उन्हें वेदांत, उपनिषदों और पौराणिक कथाओं का ज्ञान था। उन्हें योग क्रियाओं की जानकारी थी पर कबीर ने इन्हें महत्व नहीं दिया। वे मूलतः संत थे। अपने पदों में उन्होंने मुख्य रूप से हिंदू और मुस्लिम का उल्लेख किया। सच्चे धर्म और परमात्मा की प्राप्ति में बाधक होने के कारण वेदों और शास्त्र तथा कर्मकांडों की निंदा की है।

कबीर मूलतः समाजसुधारक थे। उन्होंने समाज में फैले आडंबरों और भेदभाव की प्रवृत्ति का निर्भीकता से विरोध किया। उन्होंने मूर्ति पूजा और अंधविश्वासों का खंडन कर हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। हिंदुओं को फटकारते हुए वे कहते हैं :-

पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।

ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार॥

वहीं मुसलमानों का भी वे मजाक उड़ाते हैं :-

कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाय।

ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥

कबीर की भाषा का निर्णय करना सरल नहीं है क्योंकि उनकी भाषा कई भाषाओं का मिश्रित रूप लगती है। उन्होंने स्वयं ही कहा है कि 'मेरी बोली पूरबी है', परंतु खड़ी बोली, ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, अरबी, फारसी, आदि भाषाओं का पुट भी उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। इसका कारण उनका देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करना है। देश भ्रमण करते समय जो कुछ उनकी अटपटी वाणी से निर्गत हुआ, वही काव्य बन गया। उनकी भाषा में अकखड़पन है। परंतु उनकी रचनाओं में जो खरेपन की मिठास है वह उन्हीं की विशेषता है।

कबीर मूलतः रहस्यवादी कवि हैं । यों तो सभी संत कवियों में थोड़ा-बहुत रहस्यवाद मिलता है परंतु उन पर कबीर का ही प्रभाव था। बंगला के कवि रवींद्र पर भी उनका प्रभाव पड़ा।

निर्गुण संत कवियों में कबीर का स्थान सर्वोपरि है। बाद में अन्य संत कवियों ने उनका ही

अनुसरण किया। उनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' और 'कबीर ग्रंथावली' में मिलता है। कबीर की रचना के कुछ उदाहरण देखिए, जिसमें कबीर की समाज सुधार की भावना दिखाई देती है।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

* * *

कबीरा खड़ा बाजार में, माँगे सबकी खैर।

ना काहू से दोस्ती, ना काहू से वैर॥

कबीर ने अपनी रचनाओं में सामान्य जन को संबोधित करते हुए 'भाई' या 'साधो' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है, जैसे "सुनो भई साधो"। कबीर की रचनाओं में यथार्थबोध के साथ ही व्यंग्य की तीव्र धार है। उनमें अक्खड़पन, निर्भीकता और दो टूक बात कहने की क्षमता है। कबीर ने अपनी अंतःसाधना और अनुभूतियों को अपनी उलटबासियों में असामान्य प्रतीकों के द्वारा प्रकट किया है। कवि के रूप में कबीर जीवन के अत्यंत निकट हैं। सहजता उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है।

इस काल के अन्य प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ हैं :-

नानक - असा दी वार, रहिरास, सोहिला, जपुजी, गुरु ग्रंथ साहिब (संकलित)

रैदास - रैदासबानी (संकलित)

मलूकदास - ज्ञानबोध, रत्नखान

सहजोबाई - फुटकर पद

दादूदयाल - हरडे बानी, अंग वधू

सुंदरदास - सुंदर विलास

1.2.2 प्रेममार्गी शाखा

भारत में मुसलमानों के आने के साथ ही हिंदू और मुस्लिम सभ्यताओं का परस्पर संपर्क हुआ। आरंभ में वे एक-दूसरे से अलग-अलग बने रहे, परंतु समय के साथ-साथ धीरे-धीरे वे आपस में मिलने-जुलने लगे। कबीर ने उन्हें समझाने और आपस में मिलकर रहने का उपदेश दिया। कबीर ने कहा कि हम सबको पैदा करने वाला ईश्वर या खुदा एक ही है। हम अज्ञान के कारण उसे अलग-अलग समझते हैं।

बाद में सूफी मत का उदय हुआ। सूफी संत हिंदुओं और मुसलमानों के आपसी मतभेद दूर करके उन्हें प्रेम के सूत्र में बाँधना चाहते थे। सूफी संतों का जीवन सरल, सीधा-सादा था और उनके उच्च आध्यात्मिक विचार थे। सूफीमत के कवियों ने लोक प्रचलित प्रेमाख्यानों के द्वारा अपने सिद्धांतों और विचारों को जनता के सामने रखा। ये प्रेमाख्यान कल्पित होते थे लेकिन उनमें ऐतिहासिक घटनाओं का भी समावेश होता था। इनका संबंध प्रायः हिंदू समाज से था। इनमें उन सूफी कवियों के हृदय की उदारता और समन्वय बुद्धि का पता लगता है। इन आख्यानों में ईश्वर के प्रति लौकिक प्रेम की झलक मिलती है। उनका मत था कि ईश्वर एक है। आत्मा और परमात्मा में कोई अंतर नहीं है।

इस शाखा की सभी रचनाएँ प्रबंधकाव्य हैं, मुक्तक नहीं। प्रेममार्गी कवियों ने प्रायः अवधी में

रचना की। काव्य के लिए इन्होंने दोहे और चौपाइयों का प्रयोग किया। प्रेमाख्यानों के सभी लेखक मुसलमान थे। किंतु उन पर भारतीय प्रभाव था। अपने भारतीय होने का परिचय देने के लिए इन कवियों ने नायिका के सतीत्व और उत्कृष्ट पति-प्रेम का वर्णन किया। प्रेममार्गी कवियों का वस्तु वर्णन बहुत आकर्षक नहीं है। इसका कारण यह था कि उनका ध्यान वस्तु वर्णन के बजाय अपने मत के प्रस्तुतीकरण पर रहता था। इन पर फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव है।

इस संप्रदाय में ही हिंदी की रहस्यवादी कविता मिलती है। कबीर का रहस्यवाद जहाँ दार्शनिक रहस्यवाद था। वहीं सूफी मत का रहस्यवाद माधुर्य भावना का रहस्यवाद था। इस रहस्यवाद की अभिव्यक्ति प्रकृति की सहायता से हुई है।

आइए, अब हम संक्षेप में प्रेममार्गी सूफी शाखा की विशेषताओं को देखें :-

- (i) यह प्रेममार्गी शाखा सूफी मत पर आधारित है। सूफी मत ईश्वर और जीव में प्रेम संबंध मानता है। इनमें आत्मा प्रेमी और परमात्मा प्रियतमा है।
- (ii) इस शाखा के कवियों ने प्रेमाख्यानों द्वारा अपने सूफी प्रेममार्ग का प्रचार किया।
- (iii) इस शाखा में भौतिक प्रेम द्वारा ईश्वरीय प्रेम का प्रतिपादन किया गया है। कवियों ने अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए विभिन्न प्रतीकों का सहारा लिया।
- (iv) इस शाखा के सभी कवि मुसलमान थे जो हिंदू धर्म की सामान्य बातों से परिचित थे।
- (v) इस काल की सभी रचनाएँ प्रबंध काव्य हैं। उन पर फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव था। इसलिए काव्य के आरंभ में ईश्वर वंदना, मुहम्मद वंदना तथा उस समय के बादशाह की स्तुति होती थी।
- (vi) इनके प्रेमाख्यानों का कुछ भाग ऐतिहासिक होता था जिसमें कल्पना का सहारा लिया जाता था।
- (vii) इस शाखा के कवियों का लक्ष्य प्रेममार्ग के द्वारा ईश्वर प्राप्ति था। उनके काव्य का उद्देश्य खंडन-मंडन नहीं था।
- (viii) इस शाखा के कवियों ने माया को शैतान माना है।
- (ix) इनकी सभी रचनाएँ अवधी भाषा में पाई जाती हैं जिनमें दोहा, चौपाई का प्रयोग किया गया है।

मलिक मुहम्मद जायसी

ये अमेठी के निकट जायस (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले थे। इसी कारण इन्हें जायसी कहा जाता है। इनका जन्म संवत् 1550 में हुआ था। इनके द्वारा रचे हुए ग्रंथों में 'पद्मावत', 'अखरावत', 'कान्हावत' और 'आखिरी कलाम' प्रमुख हैं। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध 'पद्मावत' की कथावस्तु ऐतिहासिक है। इसमें चित्तौड़ के हिंदू राजा रत्नसेन की कथा है। इसलिए हिंदू जनता में इसके प्रति विशेष आकर्षण था और यह काफी लोकप्रिय भी हुई। इसमें इतिहास और कल्पना का अच्छा समन्वय है। 'अखरावत' में सूफी सिद्धांतों तथा ईश्वर और जगत के बारे में बताया गया है।

जायसी के गुरु सैयद मुइद्दीन थे। जायसी अपने समय के सिद्ध फकीरों में गिने जाते थे। जायसी को पंडितों और साधु संतों के सत्संग से वेद, पुराण, कुरान आदि धर्मग्रंथों का परिचय प्राप्त

हुआ जिससे वे जनता की धार्मिक भावना को संतुष्ट करने में विशेष रूप से सफल हुए। इन्होंने बहुत अधिक क्षेत्रों का भ्रमण किया जिसका परिचय 'पद्मावत' में वर्णित विभिन्न स्थलों की भौगोलिक स्थिति से मिलता है। 'पद्मावत' की कथा में प्रेम की पीर की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। इसमें पद्मावत की नायिका पद्मिनी परम सत्ता की प्रतीक है। रत्नसेन साधक का प्रतीक है तो राघव चेतन शैतान का। 'पद्मावत' की रचना में बोलचाल की अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है। यह मसनवी शैली में लिखा गया है। पद्मावत घटना प्रधान प्रबंध काव्य है। इसमें पात्रों का बहुत ही मनोवैज्ञानिक चित्रण है। नागमती का विरह वर्णन, उसका उन्माद, पशु-पक्षियों की उससे सहानुभूति, दांपत्य जीवन, प्राकृतिक दृश्यों का सजीव वर्णन स्वाभाविकता से सरल भाषा में किया गया है। गोरा-बादल के प्रसंग में वीर रस का सुंदर चित्रण है। इस काल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

मंझन	-	मधुमालती
मुल्लादाउद	-	चंदायन
कुतुबन	-	मृगावती
उसमान	-	चित्रावली
नूर मोहम्मद	-	इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी

1.2.3 रामभक्ति शाखा

इससे पहले आप निर्गुण भक्ति की ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी शाखाओं के बारे में पढ़ चुके हैं। इनमें भगवान के निर्गुण स्वरूप की उपासना का वर्णन है। आइए, अब हम उन भक्त कवियों के बारे में जानें जिन्होंने भगवान के सगुण रूप की उपासना की है। सगुण कवि मानते थे कि भगवान पापियों का संहार करने के लिए संसार में अवतार लेते हैं और अपने भक्तों का कल्याण करते हैं। उनके मत में जीव ईश्वर का ही अंश है। ईश्वर और जीव में यही अंतर है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, आनंदमय और दयालु है जब कि जीव अल्पज्ञ है और उसकी शक्ति सीमित है। वह भगवान की दया पर निर्भर है।

निर्गुण भक्त कवियों ने संसार को मिथ्या यानी सारहीन कहा, परंतु सगुण भक्त कवियों का कहना था कि जिस संसार में भगवान जन्म लेते हैं वह संसार मिथ्या कैसे हो सकता है ? सगुण भक्त तो संसार को भी ईश्वर का ही रूप मानते हैं। यह संसार भगवान की लीला स्थली है।

इन सगुण भक्तों के आराध्यदेव की भिन्नता के कारण इस शाखा के दो भेद हो गए। एक वर्ग में राम के भक्त थे तो दूसरे में कृष्ण के उपासक। वैसे 'राम' और 'कृष्ण' दोनों ही भगवान विष्णु के अवतार हैं।

इनमें राम-भक्ति धारा का प्रवर्तन प्रसिद्ध दार्शनिक और आचार्य रामानुज के शिष्य रामानंद ने किया था। रामानंद ने संस्कृत के साथ जनभाषा में वैष्णव धर्म का प्रचार किया और भक्ति को ब्रह्म प्राप्ति का साधन बनाने पर जोर दिया। इस शाखा के कवि राम और सीता को अपना इष्टदेव मानते थे और सेवक-सेव्य (या दास्य) भाव से उनकी उपासना करते थे। इन्होंने राम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप का वर्णन किया है और रामराज्य की परिकल्पना द्वारा आदर्श लोक की कल्पना की है। इस शाखा के कवियों ने पुरुषोत्तम राम का प्रचार करते हुए लोक मंगल के लिए कविता का सहारा लिया।

इन कवियों ने वर्णाश्रम धर्म पर आधारित समाज व्यवस्था का समर्थन किया और वेद, शास्त्रों

और वैष्णव धर्म के आदर्शों की श्रेष्ठता प्रतिपादित की। इन्होंने ज्ञान और कर्म से भक्ति को श्रेष्ठ माना तथा भगवत् कृपा को अधिक महत्व दिया।

रामानंद ने जिस रामभक्ति शाखा का विकास किया, आगे चलकर उसका बहुत अधिक विस्तार हुआ और वह खूब फली-फूली। कबीर, रैदास, मल्लूकदास आदि निर्गुण कवि भी रामानंद के ऋणी हैं। इसी शिष्य परंपरा में आगे चलकर रामभक्त गोस्वामी तुलसीदास हुए जिनका विश्व प्रसिद्ध 'रामचरितमानस' हिंदी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है और हमारी संस्कृति का पथ-प्रदर्शक है।

इस काल की भक्ति ने बिखरते हुए हिंदू समाज को संभालने का काम किया और उसे महान आदर्शों से युक्त किया। इस काल का साहित्य काव्यशास्त्र, काव्य सौंदर्य, भाषा आदि की दृष्टि से हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस काल में गोस्वामी तुलसीदास जैसे युग प्रवर्तक महाकवि हुए जिन्होंने हिंदू जाति के हृदय को छूने वाले भावों और सांस्कृतिक जीवन के अच्छे उदाहरण प्रस्तुत किए। इसलिए इस युग के साहित्य को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है।

इस काल की रचनाओं में मुख्य रूप से अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है परंतु कुछ रचनाओं, जैसे— 'विनय पत्रिका', 'गीतावली' आदि में ब्रजभाषा का भी प्रयोग मिलता है।

आइए, अब रामभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर डालें :-

- (i) इस शाखा का प्रवर्तन रामानंद ने किया। उन्होंने भक्ति को ब्रह्म प्राप्ति का साधन माना।
- (ii) इस शाखा के कवियों ने राम और सीता को अपना इष्टदेव माना और राम को विष्णु का अवतार मानकर सेवक-सेव्य भाव से उनकी उपासना की।
- (iii) इस शाखा के कवियों ने किसी की प्रशंसा करने या धन कमाने के लिए कविता नहीं की बल्कि स्वांतः सुखाय कविता की।
- (iv) इन कवियों ने लोक मर्यादा का प्रचार करते हुए लोक कल्याण के लिए काव्य लिखा।
- (v) इस काल के कवियों में समन्वयवादी भावना कूट-कूटकर भरी हुई है।
- (vi) इस काल के कवियों में नारी मात्र के प्रति अपार सम्मान की भावना है।
- (vii) इनकी रचनाओं में जहाँ भाव पक्ष प्रबल है वहीं छंदों और अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।
- (viii) इस काल की रचनाओं में मुख्य रूप से अवधी भाषा का और गौण रूप से ब्रजभाषा का प्रयोग मिलता है।
- (ix) इस शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इस शाखा के अन्य कवियों में नाभादास, केशवदास आदि भी उल्लेखनीय हैं।

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म बाँदा जिला (उत्तर प्रदेश) के राजापुर गाँव में सन् 1540 में हुआ था। तुलसी का बचपन अभावों में बीता। जन्म होते ही इनके माता-पिता का देहांत हो गया था। पंद्रह वर्ष की आयु में इनका विवाह रत्नावली से हुआ था। कहा जाता है कि पत्नी के उपदेश से तुलसी विरक्त हो गए और भक्ति की ओर उन्मुख हो गए। इसके बाद वे

काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि अनेक तीर्थों में भ्रमण करते रहे।

राम के उदात्त चरित्र से मोहित होकर उन्होंने अयोध्या में ही 1574 ईस्वी में 'रामचरितमानस' की रचना प्रारंभ की। उन्होंने 'रामचरितमानस' में राम के जीवन को आधार बनाकर जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन किया। इस ग्रंथ में हृदय की विशालता, भाव-प्रसार की शक्ति और समन्वय की भावना कूट-कूटकर भरी है। वास्तव में तुलसी की रामकथा मानव-जीवन की संपूर्ण गाथा है। रामकथा मानवता के सर्वोच्च आदर्शों की स्थापना करती है। तुलसी के रामचरितमानस ने तत्कालीन निराश जनता में नए प्राण फूँकने का काम किया और लोगों में आत्मविश्वास जाग्रत किया। यथा—

जब-जब होहिं धरम कै हानी बाड़ैहिं असुर अधम अभिमानी।

तब-तब धरि प्रभु विविध सरीरा हरैहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

तुलसीदास भगवान गौतम बुद्ध के बाद सबसे बड़े लोकनायक के रूप में जाने जाते हैं। उनके 'रामचरितमानस' को पढ़कर लाखों दुर्जन व्यक्तियों ने सज्जनता का मार्ग अपनाया।

उनके गीतिकाव्यों विनय पत्रिका, गीतावली और कृष्णगीतावली में भावनाओं की जो सरिता उमड़ती है, वैसा आवेग हिंदी साहित्य में दुर्लभ है। इस प्रकार तुलसीदास ऐसे महाकवि हैं जिनपर हिंदी साहित्य को गर्व है।

तुलसी जीवन के अंतिम दिनों में अनेक रोगों से ग्रस्त हो गए और 1623 ईसवी में उनका देहांत हो गया।

1.2.4 कृष्णभक्ति शाखा

आइए, सगुण भक्ति की रामभक्ति धारा के बारे में जानने के बाद अब हम उसकी दूसरी शाखा कृष्णभक्ति के बारे में जान लें।

कृष्णकाव्य के प्रारंभिक संकेत हमें चौथी शताब्दी में जयदेव और 15वीं शताब्दी में विद्यापति की रचनाओं से मिलते हैं। जयदेव के संस्कृत ग्रंथ 'गीत-गोविंद' और विद्यापति के पदों में राधाकृष्ण का रागात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। विद्यापति की दृष्टि बाहरी दुनिया के आकर्षक रंगों पर गई, उनकी दृष्टि अंतर्जगत की ओर नहीं गई। उनकी कविता विलास की सामग्री बन गई, वह उपासना का साधन न हो सकी। इससे पूर्व बंगला में चंडीदास और चैतन्य महाप्रभु ने भी कृष्ण भक्ति के गीतों की रचना की। इसके बाद एक बार फिर कवियों का ध्यान कृष्णभक्ति की ओर गया।

रामकाव्य के समानांतर प्रवाहित होते हुए भी कृष्ण काव्यधारा को अधिक महत्व नहीं मिला। राम के ही समान कृष्ण भी विष्णु के अवतार थे। इन दोनों की भक्ति भावना में सैद्धांतिक अंतर है। रामभक्त कवि स्वयं को राम का सेवक या दास समझते थे जब कि कृष्णभक्त कवि कृष्ण को अपना सखा मानते थे। रामभक्त के लिए भक्त और भगवान के बीच मर्यादा और आदर का भाव था परंतु कृष्णभक्तों और भगवान के बीच प्रेमी और प्रेमिका का भाव था। ये दोनों ही अपने आपको भगवान के समक्ष पूर्णरूप से समर्पित करने में विश्वास रखते थे। श्रीमद्भागवत के व्यापक प्रचार से माधुर्य भक्ति का रास्ता खुला। आनंद का पूर्ण भाव कृष्ण में है। वे अपने भक्तों के लिए नित्य लीला करते हैं।

कृष्णभक्त मानते थे कि भक्त जीवन में जो कुछ भी करे वह भगवान को प्रसन्न करने के लिए करे अपने लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। भगवान स्वयं ही भक्त का ध्यान रखेंगे।

महान दार्शनिक वल्लभाचार्य और चैतन्य महाप्रभु ने कृष्णभक्ति का जो रूप रखा, वह अत्यंत आकर्षक था। उनके माधुर्य और वात्सल्य भाव की उपासना में कृष्ण के श्रृंगारिक रूप की ही प्रधानता रही जिसका प्रतिपादन इन्होंने बहुत कुशलता से किया। इसके साथ कृष्णभक्त कवियों पर वल्लभाचार्य के दार्शनिक चिंतन का भी विशेष प्रभाव पड़ा। वल्लभाचार्य के अनुसार यह सारी सृष्टि लीलामय है और वह परमब्रह्म की आत्मकृति है। जीव ब्रह्म का अंश है। वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने वल्लभाचार्य की मृत्यु के बाद अपने शिष्यों में से आठ शिष्यों की एक मंडली बनाई। इन भक्त कवियों को 'अष्टछाप के कवि' कहते हैं। इन्होंने कृष्णभक्ति काव्य परंपरा को शक्तिशाली बनाया। ये कवि भगवान कृष्ण की लीलाओं के सुंदर पदों की रचना करते और उन्हें बारी-बारी से श्रीनाथ मंदिर में सुनाया करते थे। इन कृष्णभक्त कवियों में ज्ञान की अपेक्षा प्रेम और आत्मचिंतन की अपेक्षा आत्मसमर्पण की भावना अधिक पाई जाती है। **इन अष्टछाप के कवियों के नाम हैं - कुंभनदास, परमानंददास, सूरदास, कृष्णदास, गोविंदस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास।** इन अष्टछाप के कवियों में पहले चार वल्लभाचार्य के शिष्य थे और बाद के चार उनके पुत्र विट्ठलनाथ के शिष्य थे।

आइए, अब कृष्णभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताओं पर एक दृष्टि डालें :-

- (i) कृष्णभक्ति में भक्त स्वयं को सख्यभाव में देखता है।
- (ii) इस भक्ति में भगवान की लीलाओं के वर्णन और कीर्तन पर अधिक बल दिया गया है। इसमें कवियों ने गेय मुक्तक पद लिखे हैं।
- (iii) कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि 'अष्टछाप' के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ के शिष्य थे।
- (iv) कृष्णभक्ति शाखा के कवियों की रचनाओं में अधिकांशतः कृष्ण के लोकरंजक रूप का वर्णन हुआ है।
- (v) कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवियों की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है। इनकी रचनाओं में श्रृंगार और वात्सल्य रसों की प्रधानता है और अलंकारों (शब्दालंकारों और अर्थालंकारों) का अच्छा प्रयोग हुआ है।
- (vi) इस शाखा के कवियों ने ज्ञान एवं कर्म के स्थान पर भक्ति को महत्व दिया। इनकी ज्यादातर रचनाएँ पदों में हैं। इसलिए इनका काव्य गीतिकाव्य माना जाता है।

सूरदास

वल्लभाचार्य के शिष्यों में सबसे प्रमुख शिष्य कवि सूरदास थे। कहा जाता है कि इनका जन्म सन् 1478 में रुनकता में हुआ। यह गाँव आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क पर स्थित है। किशोरावस्था में ही विरक्त होकर वे मथुरा चले गए और बाद में वृंदावन के बीच गऊ घाट पर रहने लगे। कहा जाता है कि वे जन्मांध थे। किंतु यह कथन सत्य प्रतीत नहीं होता क्योंकि जिस तरह का हृदयग्राही और जीवंत प्रकृति-चित्रण, वात्सल्य और श्रृंगार का चित्रण उन्होंने किया है उससे लगता है कि वे जन्मांध नहीं थे।

गऊ घाट पर जब सूरदास रहने लगे, तभी उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई। वहीं पर उन्होंने वल्लभाचार्य को गीत गाकर सुनाया जिससे प्रभावित होकर वल्लभाचार्य ने सूरदास को अपना शिष्य बना लिया। महाप्रभु वल्लभाचार्य के आदेश पर ही सूरदास ने श्रीमद्भागवत के आधार पर कृष्ण

लीला का नाना प्रकार से वर्णन किया है। उनके द्वारा रचित तीन ग्रंथ मिलते हैं - सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी। सूरसागर इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। कहा जाता है कि इसमें सवा लाख पद हैं। सूरसागर में सूरदास ने कृष्ण की बाल लीलाओं का जैसा सुंदर वर्णन किया है वैसा हिंदी के किसी अन्य कवि ने नहीं किया। एक पद देखिए -

‘मैया कबहिं बढैगी चोटी।

किती बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।।’

इस पद में माँ बालक को दूध न पीने पर उसे लालच देती है कि दूध पीने पर चोटी बढ़ने लगेगी। कई बार दूध पीने पर भी जब चोटी नहीं बढ़ती तो बाल कृष्ण कहते हैं कि मैया अब भी मेरी चोटी क्यों नहीं बढ़ती ?

इस प्रकार के पदों में कितना वात्सल्य, स्नेह है और उसका कितना सूक्ष्म निरीक्षण और स्वाभाविक वर्णन है। उनकी सूक्ष्म दृष्टि भी बहुत पैनी थी। वात्सल्य वर्णन में सूर के जोड़ का कोई अन्य कवि नहीं है।

सूर हिंदी साहित्य के सूर्य के समान हैं। उन्होंने केवल भाव और भाषा की दृष्टि से ही साहित्य की श्रीवृद्धि नहीं की बल्कि धार्मिक क्षेत्र में ब्रजभाषा में कृष्णकाव्य की एक विशिष्ट परंपरा को भी जन्म दिया। सूर से पहले ब्रजभाषा का रूप बहुत ही सीमित था। सूर ने संस्कृत मिश्रित साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया। सूर ने वात्सल्य के साथ श्रृंगार और शांत रसों को अपनाया। इन्होंने श्रृंगार के वियोग पक्ष पर अधिक ध्यान दिया और गोपियों के विरह वर्णन को अत्यधिक उच्च स्तर पर पहुँचा दिया। उसे पढ़ते हुए यही लगता है कि श्री कृष्ण उनके आराध्य हैं।

कृष्ण के युवा होने पर उनके तथा गोपियों के प्रेम का वर्णन भी बहुत सुंदर है। कृष्ण जब गोपियों को छोड़कर मथुरा जाते हैं उस समय कृष्ण के वियोग में गोपियों की विरह भावना का चित्रण हृदय को छू लेता है। ऐसे प्रसंगों में सूर ने निर्गुण भक्ति की अपेक्षा सगुण भक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध की है। गोपी विरह के पद ‘**भ्रमर गीत**’ के नाम से जाने जाते हैं जो हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। यथा,

निरगुन कौन देस कौ बासी ?

मधुकर कहि समझाइ सौँह दै, बूझति साच न हाँसी।

को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी।।

भाग-ख : रीति काल

1.3 रीति काल

आइए, हम हिंदी साहित्य के तीसरे काल रीति काल या उत्तर मध्य काल के बारे में जानकारी प्राप्त करें। रीति काल का अध्ययन आरंभ करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि रीति शब्द से क्या अभिप्राय है ? रीति शब्द का सामान्य अर्थ है ‘पद्धति’ या ‘तरीका’। यहाँ रीति से अभिप्राय है ‘काव्य रचना की पद्धति’। इस काल में कवियों ने काव्य की पद्धति या नियमों के अनुसार काव्य रचना की। इस काव्य पद्धति का आधार संस्कृत ग्रंथों को बनाया गया। संस्कृत भाषा में काव्य सिद्धांतों के आधार पर अनेक लक्षण ग्रंथ लिखे गए हैं। **रीति काल को श्रृंगार काल नाम से भी जाना जाता है।**

यह सौंदर्य और कला की उपासना का युग था। राजा कला प्रेमी थे। उनके राजदरबार में कलाकारों और कवियों को आश्रय मिलता था। शासकों की रुचि विलास और अलंकरण की ओर थी, इसलिए कवियों को उनकी रुचि के अनुसार कविता करनी पड़ती थी। श्रृंगार की प्रवृत्ति पूरे वातावरण में व्याप्त हुई और दरबारी संस्कृति का विकास हुआ। रीति कालीन कविता तो 'राधा-कन्हैया सुमरन को बहानो' है।

अधिकांश कवि ब्रजभाषा में मुक्त छंदों और गेय पदों में कृष्ण की लीलाओं के वर्णन में संलग्न थे। उन्होंने कृष्ण और राधा के सौंदर्य वर्णन में अपनी सारी शक्ति लगा दी। रीति काल के दरबारी कवियों की रचनाओं में कृष्ण और गोपियों के प्रेम की लीलाएँ लिखने की प्रवृत्ति बढ़ चली। इसलिए, आश्रयदाता राजाओं-सामंतों से पुरस्कार पाने और जनता की वाहवाही लूटने के लिए उनकी कविता श्रृंगारमयी हो गई। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि अन्य उत्कृष्ट कोटि की काव्यात्मक रचनाएँ उनके सामने दब गईं।

1.3.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ

अब तक देश पर मुगलों का शासन अच्छी तरह जम चुका था। मुगल सम्राट अकबर के बाद जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में हिंदी प्रदेश में सुख और शांति का वातावरण था। लोग सुखी और संपन्न थे। ऐसे में दरबारी जीवन पूर्णरूप से श्रृंगारमय हो गया। यहाँ तक कि छोटे-छोटे सामंतों के यहाँ भी सुरा-सुंदरियों का बोलबाला था। उनके यहाँ राग-रंग और सुंदरियों के नृत्यों का आयोजन आम बात थी। ऐसे विलासपूर्ण वातावरण में हिंदी कविता भी श्रृंगार की ओर झुकती गई। कवि अपने आश्रयदाताओं को खुश करने के लिए चमत्कारपूर्ण कविताएँ रचने लगे और लोक जीवन से हटकर कविता दरबारों में सजावट का साधन बन गई।

1.3.2 सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ

ऐसे राजनीतिक माहौल और विदेशी शासन के प्रभाव से धार्मिक-क्रियाकलाप मंद हो गए। धार्मिक भावनाओं को स्पष्ट अभिव्यक्ति न मिल पाने के कारण हिंदू जनमानस घुटन भरे वातावरण में जीने के लिए मजबूर हो गया। धार्मिक संप्रदाय अपनी सुरक्षा के लिए अपने आप में सिमट गए। समाज अनेक जातियों और उपजातियों में बँटने लगा। अंधविश्वासों, धार्मिक रूढ़ियों और आडंबरों ने समाज के जीवन को खोखला बना दिया। छोटे-छोटे सामंत भी मुगलों की तरह दरबार सजाने लगे और इसके लिए किसानों और श्रमिकों का शोषण करने लगे और विलासिता पूर्ण जीवन जीने लगे। फलस्वरूप उनकी रुचि आत्मप्रशंसा वाली कविता तक ही सीमित रह गई।

इस समय की कविता यद्यपि हमारे समाज की दृष्टि से बहुत हितकारी नहीं थी फिर भी उसका कुछ न कुछ महत्व अवश्य है। राजदरबारों के श्रृंगारमय वातावरण में पली इस काल की कविता कहीं-कहीं इतनी सरस और हृदय को छूने वाली है कि पाठक एक बार तो उसमें खो-सा जाता है।

1.4 रीति काव्यधाराएँ

रीति काल का काव्य हमें निम्नलिखित धाराओं में प्रवाहित होता दिखाई देता है :-

1. रीतिबद्ध काव्यधारा - प्रमुख कवि : केशवदास, चिंतामणि, मतिराम, भूषण, सेनापति, देव, पद्माकर, बिहारीलाल आदि।

2. रीतिमुक्त काव्यधारा - प्रमुख कवि : रसखान, घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर, द्विजदेव आदि।

अब हम क्रमशः उपर्युक्त धाराओं और उनसे संबंधित कवियों और काव्य की प्रवृत्तियों पर संक्षेप में विचार करेंगे।

1.4.1 रीतिबद्ध धारा

रीतिबद्ध धारा के कवियों ने काव्य रचना करते समय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का अनुसरण किया और इन्हें ध्यान में रखते हुए काव्य रचना की। रीतिबद्ध काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है। इस काल में—

- (i) लक्षण ग्रंथों की रचना हुई।
- (ii) लौकिक श्रृंगार भावना की व्यंजना हुई।
- (iii) कला पक्ष को विशेष महत्व मिला।
- (iv) मुक्तक काव्यों की रचना हुई।
- (v) प्रकृति का श्रृंगार रस के उद्दीपन के रूप में चित्रण किया गया।

रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि आचार्य केशवदास (कविप्रिया, रसिकप्रिया), चिंतामणि त्रिपाठी (काव्य प्रकाश, श्रृंगार मंजरी), मतिराम (रसरज, छंदसारपिंगल), भूषण (शिवराज भूषण, शिवाबावनी), देव (भावविलास, रसविलास) और पद्माकर (पद्माभरण, जगतविनोद) हैं। इनमें से दो कवियों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

केशवदास (1555-1617)

केशवदास को भक्ति काल और रीति काल दोनों युगों को जोड़ने वाला कवि कहा जाता है। कुछ विद्वान इन्हें रीति परंपरा का प्रवर्तक मानते हैं। ये ओरछा नरेश के भाई इंद्रजीत सिंह के सभासद थे। आचार्यत्व और कवित्व दोनों ही दृष्टियों से इनका हिंदी साहित्य में गौरवपूर्ण स्थान है। इन्होंने ब्रजभाषा में मुक्तक पदों के साथ प्रबंध काव्य की रचना की भी शुरुआत की। 'रामचंद्रिका' इनका प्रबंध काव्य है। इसके संवाद प्रशंसनीय हैं। इसमें काव्य लक्षणों के उदाहरण मिलते हैं। केशवदास का काव्य संस्कृत-काव्यशास्त्र के आचार्यों का अनुसरण है। 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया' और 'नखशिख' ने हिंदी साहित्य की दिशा बदलने का संकेत दिया। 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' में इन्होंने कृष्ण को साधारण नायक के रूप में चित्रित किया है।

पद्माकर (1753-1833)

पद्माकर का जन्म बाँदा निवासी मोहन लाल भट्ट के यहाँ हुआ था। पद्माकर का समस्त परिवार ही काव्य लेखन में रुचि रखता था इसलिए इनके वंश का नाम 'कवीश्वरवंश' पड़ गया था। ये रीतिकाल के अंतिम श्रेष्ठ कवि हैं। अपनी काव्य कुशलता के कारण ये बाद के रीतिकालीन कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में श्रृंगार के सभी अंगों का वर्णन कुशलता से किया है। इनके ऋतु वर्णन में जीवंतता और चित्रात्मकता है। इनके काव्य में अनुप्रास की छटा देखते ही बनती है। इनके काव्य में रसमाधुर्य, सौंदर्य, प्रेम और विलास का सुंदर चित्रण भी मिलता है। इन्होंने सागर

नरेश अप्पा साहब की प्रशंसा में एक छंद पढ़कर सुनाया, जिस पर मुग्ध होकर अप्पा साहब रघुनाथ राव ने इन्हें एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रूप में भेंट कीं। इनके प्रमुख ग्रंथ हैं - पद्माभरण, जगद्विनोद, हिम्मद बहादुर विरदावली और राम रसायन आदि।

बिहारीलाल (1600-1663)

बिहारीलाल हिंदी साहित्य के आकाश में चमकते हुए नक्षत्र की तरह प्रकट हुए और इन्होंने अपनी प्रतिभा की ज्योति चारों ओर विकीर्ण कर दी। बिहारी रीतिकालीन काव्यधारा के एक प्रतिभाशाली कवि थे। इन्होंने अपने पांडित्य और काव्य प्रतिभा का प्रदर्शन 'बिहारी सतसई' में किया।

कहते हैं कि बिहारी किसी आश्रयदाता की खोज में जयपुर के राजा जयसिंह के महल में पहुँचे। उस समय राजा राजकाज छोड़कर अपनी छोटी रानी के प्रेमपाश में बंधे थे। तब बिहारी ने राजा के पास एक दोहा लिखकर भिजवाया। दोहा था -

“नहिं पराग नहिं मधुर-मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बंध्यो, आगे कौन हवाल॥”

इस दोहे को पढ़कर राजा रनिवास से बाहर निकले। उन्होंने बिहारी की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें अपने दरबार में रख लिया। राजा की आज्ञा से बिहारी ने 'सतसई' लिखी जिसके प्रत्येक दोहे के लिए राजा ने उन्हें एक-एक अशर्फी भेंट की।

उनकी 'बिहारी सतसई' मुक्तक रचना है। बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया। छोटे-छोटे दोहों में बड़े से बड़े भावों को संपूर्ण घटना या क्रियाकलाप को समाहित कर देना उनकी विशेषता है। उनके दोहों में भावों की व्यंजना और ध्वन्यात्मकता सर्वत्र मिलती है। देखिए, नीचे दिए दोहे में कितने भावों और क्रियाकलापों को माला की तरह एक सूत्र में पिरो दिया गया है :-

“कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन हीं सों बात ॥”

हिंदी में बिहारी को एक बेजोड़ कवि माना जाता है। इनका ब्रजभाषा पर असाधारण अधिकार था। इन्होंने श्रृंगार के अतिरिक्त भक्ति, वैराग्य और नीति संबंधी दोहे भी लिखे हैं जिनमें उनकी काव्य प्रतिभा का दूसरा पक्ष भी उजागर होता है। वास्तव में 'बिहारी सतसई' हिंदी साहित्य का अनुपम ग्रंथ है तथा बिहारी साहित्य के गौरव हैं। 'सतसई' में रस अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि सभी का बहुत ही सटीक प्रयोग हुआ है। बिहारी के दोहों में काव्य रूढ़ियों की सहायता से वस्तु व्यंजना के लिए चमत्कार दिखाई देता है। इनके दोहों में नायक-नायिका की चेष्टाओं का वर्णन बहुत सधे ढंग से हुआ है। जैसे-

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाड़।
सौंह करें भौंहनि हँसै, दैन कहैं नटि जाड़।

1.4.2 रीतिमुक्त धारा

यह काव्यधारा रीति परंपरा के साहित्यिक बंधनों और रूढ़ियों से मुक्त है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काव्यधारा को स्वच्छंद या रीतिमुक्त काव्यधारा कहा है। स्वच्छंतावादी साहित्य में नयापन रहता है और उसकी प्रेरणा आंतरिक अनुभूतियों से होती है। रीतिमुक्त कवियों के वर्णन का विषय और वर्णन

शैली दोनों ही काव्य की निर्धारित परंपरा से मुक्त हैं। इस काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं :-

- (i) रीतिमुक्त धारा की कविता आंतरिक अनुभूतियों से पूर्ण है।
- (ii) इस काव्यधारा का काव्य व्यक्तिनिष्ठ और आत्मपरक है।
- (iii) इस धारा की कविता रुढ़ियों और बंधनों से मुक्त है।
- (iv) यह काव्य भाव प्रधान अधिक है और कला प्रधान कम है।
- (v) इस काव्यधारा की प्रमुख विशेषता स्वच्छंदता है।
- (vi) इस काव्यधारा में प्रेम का वर्णन व्यथा प्रधान है और संयोग में भी पीड़ा की अनुभूति होती है।
- (vii) रीतिमुक्त काव्य में कृष्णलीलाओं का प्राधान्य दिखाई देता है। इन कवियों ने कृष्ण के अलौकिक आलंबन के सहारे अपने उन्मुक्त प्रेम का भी वर्णन किया है।
- (viii) काव्य में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग अत्यंत स्वाभाविक रूप से हुआ है।
- (ix) इस काव्यधारा में भाषा का प्रयोग विषय और भावों के अनुसार है। इसमें ब्रजभाषा की प्रौढ़ता, माधुर्य और उसका सहज, सरल रूप मिलता है।

रीतिमुक्त काव्यधारा में घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा और द्विजदेव आदि का योगदान उल्लेखनीय है। इनमें से दो प्रमुख कवियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

घनानंद (1689-1739)

घनानंद रीतिमुक्त धारा के प्रमुख कवि हैं। ये बचपन से ही विद्याप्रेमी थे। इन्हें फारसी और संगीत का अच्छा ज्ञान था। ये रासलीला देखने और उसमें भाग लेने के शौकीन थे। घनानंद मुहम्मदशाह रंगीले के मीरमुंशी थे। इनका रंगीले के दरबार की सुजान नामक वेश्या से प्रेम हो गया, परंतु उसके कठोर व्यवहार के कारण इनके हृदय पर गहरा आघात लगा जिसके कारण इन्हें संसार से वैराग्य हो गया और ये वृंदावन चले आए। यहाँ निंबार्क संप्रदाय के एक साधु से दीक्षा लेकर श्रीकृष्ण की उपासना में मग्न हो गए। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुजान ही उनके काव्य की मूल प्रेरणा थी। इनके काव्य में प्रेम की तन्मयता और उन्मुक्त पद रचना मिलती है। इन्होंने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का चित्रण किया, परंतु संयोग के बजाय वियोग के चित्रण में इन्हें अधिक सफलता मिली। इसीलिए इन्हें प्रेम की मस्ती और वियोग श्रृंगार का कवि कहा जाता है। यहाँ तक कि इन्हें संयोग में भी वियोग की अनुभूति होती है, एक पद देखिए -

बीती औधि आवन की, लाल मन भावन की
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ।

इन्होंने प्रेम की भावना का सहज चित्रण किया। इस प्रेम की भावना में एकनिष्ठता और तन्मयता है। उनका 'सुजान' के प्रति लिखा एक सवैया देखिए -

परकारज देह को धारे फिरौ, परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधिनीर सुधा के समान करौ, सब ही विधि सुंदरता सरसौ।
घन आनंद जीवन दायक हौ, कबौ मेटियो पीर हियो परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के, आँगन में अँसुवान को लै बरसौ।

इसमें कवि का कहना है कि तुमने दूसरों के उपकार के लिए शरीर धारण किया है तो परजन्य (बादल) के रूप में दिखाई दो। तुम दूसरों के जीवनदाता हो तो तुम मेरे हृदय को स्पर्श कर कब उसकी पीड़ा दूर करोगे और कब उस विश्वासघाती 'सुजान' के आँगन में मेरे आँसुओं की वर्षा करोगे ?

घनानंद की कविता अनेक अनूठी उक्तियों से भरी पड़ी है। इनका काव्य ब्रजभाषा में है जो सहज और सरल है। लोकोक्तियों और मुहावरों ने इनकी शैली में चमत्कार उत्पन्न कर दिया है। इन्होंने लगभग 40-42 पुस्तकें लिखी हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ - 'सुजान सागर', 'घनानंद कवित्त', 'कृष्ण कौमुदी', 'विरह लीला' आदि हैं।

घनानंद की भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है। उसमें बोलचाल की ब्रजभाषा के शब्द भी मिलते हैं। घनानंद ने अपनी रचनाओं में कलापक्ष की अपेक्षा भावपक्ष पर अधिक ध्यान दिया है। रस की दृष्टि से इनकी रचनाएँ शृंगार रस प्रधान हैं। शृंगार में भी वियोग पक्ष के ये अमर कवि हैं।

आलम

ये अठारहवीं शती के कवि थे। ये औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम के आश्रय में रहते थे। 'आलम' जाति के ब्राह्मण थे। परंतु एक शेख रंगरेजिन जो कवयित्री थीं, के प्रेम में पड़कर ये मुसलमान हो गए। आलम की रचना में प्रेम की असीम तन्मयता के चित्र हैं। उसमें शृंगार रस का मनोहारी चित्रण है जो पाठक को भाव विभोर कर देता है। इनका प्रेम लौकिक प्रेम है। भले ही इसमें राधा-कृष्ण के नामों का सहारा लिया गया है। इनके काव्य में भाव (हृदय) पक्ष की प्रधानता है जिसमें शृंगार संबंधी उक्तियाँ हैं। इनकी भाषा परिमार्जित और व्यवस्थित है। इनकी रचनाओं पर भी फारसी का प्रभाव है। इनकी रचनाओं का संग्रह 'आलम कलि' के नाम से प्रसिद्ध है।

उपर्युक्त रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कवियों के अतिरिक्त भी अन्य अनेक ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने रस, अलंकार, छंद आदि काव्य के विभिन्न अंगों पर रचनाएँ लिखकर अपने कवित्व का परिचय दिया। इनमें प्रमुख हैं - भिखारी दास ठाकुर, बोधा, वृंद, रसलीन, मतिराम, सेनापति, देव, जसवंत सिंह, दूलह, गुरुगोविंद सिंह, महाराज विश्वनाथ सिंह, गिरिधर कविराज आदि।

पाठ-8 : आधुनिक काल : भारतेंदु युग और द्विवेदी युग काव्यधारा

1.0	आधुनिक काल	137
1.1	भारतेंदु युग	137
1.1.1	प्रमुख कवि	137
	—भारतेंदु हरिश्चंद्र	137
	—बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	138
	—प्रतापनारायण मिश्र	138
	—राधाकृष्ण दास	138
1.2	द्विवेदी युग	139
1.2.1	प्रमुख कवि	140
	—श्रीधर पाठक	140
	—महावीर प्रसाद द्विवेदी	140
	—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	140
	—मैथिलीशरण गुप्त	141
	—रामनरेश त्रिपाठी	141

1.0 आधुनिक काल

1.1 भारतेंदु युग

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय इतिहास में नये युग का प्रारंभ होता है। इसे भारतेंदु युग या पुनर्जागरण काल भी कहा जाता है। भारतेंदु जी बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। उन्होंने गद्य-पद्य में समान रूप से लिखा। भारतेंदु और उनके सहयोगियों ने रीतिकालीन काव्य परंपरा से हटकर आधुनिक हिंदी कविता को जिन प्रवृत्तियों की ओर मोड़ा, उनमें राष्ट्रीयता तथा देशभक्ति का स्वर सर्वप्रमुख और सर्वोच्च था। इन कवियों ने देश के उत्कर्ष के लिए जनमानस में राष्ट्रीय भावना जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। अंग्रेजों की शोषण नीति, भारत की आर्थिक दुरावस्था तथा किसान मजदूरों की दीन-हीन दशा के यथार्थ चित्रण में तत्कालीन कवियों की देशभक्ति का स्वर मुखरित हुआ है।

इस काल के कवियों ने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण की कटु आलोचना कर भारतीय समाज में स्वस्थ और प्रगतिशील परंपराओं की पुनर्स्थापना पर बल दिया। स्त्रियों की अशिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत और जाति-पातिगत भेदभाव की समस्या ने विशेष रूप से इन कवियों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया।

भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की कामना से इस युग के कवियों ने स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने पर भी बल दिया।

इस काल में पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार से हिंदी काव्य को जनमानस के निकट लाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। कविता को सामान्य पाठकों की दृष्टि से आकर्षक और उपयोगी बनाने के लिए कवियों को उसमें रोचकता का समावेश करना पड़ा। हास्य व्यंग्य इसी रोचकता का एक महत्वपूर्ण अंग बनकर काव्य में समाविष्ट हुआ। इस काल की रचनाओं में पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन, सामाजिक अंधविश्वासों पर किए गए चुभते व्यंग्य बहुत अच्छे बन पड़े हैं।

काव्य रूप की दृष्टि से भारतेंदु युगीन कवियों ने प्रधानतः मुक्तक काव्य की रचना की है। इस काल में प्रगीत लोक संगीत की शैली भी काफी लोकप्रिय रही। प्रेमघन और प्रतापनारायण मिश्र की 'कजलियाँ' तथा प्रतापनारायण मिश्र और राधाचरण गोस्वामी की 'लावनियाँ' इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

इस काल के कवियों की प्रमुख भाषा ब्रज थी। भारतेंदु युग के कुछ कवियों ने खड़ी बोली में भी काव्य रचना की, किंतु यह इस युग की प्रतिनिधि काव्य भाषा नहीं बन सकी। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमघन और प्रतापनारायण मिश्र की खड़ी बोली-कविताएँ संख्या में बहुत ही कम हैं।

1.1.1 प्रमुख कवि

इस काल के प्रमुख कवियों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, अंबिकादत्त व्यास और राधाकृष्ण दास प्रमुख हैं। प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र

कविवर हरिश्चंद्र (1850-1885) इतिहास प्रसिद्ध सेठ अमीचंद की वंश परंपरा में उत्पन्न हुए थे। उनके पिता बाबू गोपालचंद गिरिधरदास भी अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे। हरिश्चंद्र ने बाल्यावस्था से ही काव्य रचना प्रारंभ कर दी थी। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर ही तत्कालीन साहित्यकारों ने

1880 ई. में उन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि से सम्मानित किया था। कवि होने के साथ ही वे पत्रकार भी थे। 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' उनके संपादन में प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध पत्रिकाएँ थीं। उनकी काव्य कृतियों की संख्या 70 है। इनमें प्रमुख हैं—प्रेम मालिका, प्रेम माधुरी, प्रेम सरोवर, प्रेम फुलवारी, वर्षा-विनोद, वेणु गीत, विनयप्रेम पचासा।

वैसे 'भारतेंदु ग्रंथावली' के प्रथम भाग में उनकी सभी छोटी-बड़ी रचनाएँ संकलित हैं। भारतेंदु की प्रमुख विशेषता यह है कि अपनी अनेक रचनाओं में जहाँ वे प्राचीन काव्य-प्रवृत्तियों के अनुवर्ती रहे, वहीं नवीन काव्यधारा के प्रवर्तन का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। कविता के क्षेत्र में वे नवयुग के अग्रदूत थे। अपनी ओजस्विता, सरलता और भाव मर्मज्ञता में उनका काव्य प्राणवान है और उस युग के सभी कवि उनसे प्रभावित रहे। उनकी काव्य शैली का एक उदाहरण देखिए—

अंगरेज राज सुखसाज महासुख भारी
पै धन विदेश चली जात इहै अति खवारी।

बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रेमघन का जन्म उत्तर प्रदेश के एक संपन्न ब्राह्मण कुल में हुआ था। भारतेंदु की भाँति उन्होंने भी पद्य और गद्य दोनों में विपुल साहित्य रचना की। 'अब्र' नाम से उन्होंने उर्दू में कविताएँ भी लिखी हैं। 'जीर्ण जनपद', 'आनंद अरुणोदय', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'मयंक महिमा', 'अलौकिक लीला', 'वर्षा बिंदु' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं जो 'प्रेमघन सर्वस्व' के प्रथम भाग में संकलित हैं। इनकी काव्य रचना का मुख्य क्षेत्र जातीयता, समाज-दशा और देश प्रेम की अभिव्यक्ति है। उन्होंने मुख्यतः ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। छंदोबद्ध रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने लोक संगीत की कजली और लावनी शैलियों में सरस कविताएँ लिखी हैं।

प्रतापनारायण मिश्र

'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक प्रतापनारायण मिश्र का जन्म उन्नाव जिले में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा कानपुर में हुई। ज्योतिष का पैतृक व्यवसाय न अपनाकर वे साहित्य रचना की ओर प्रवृत्त हुए। कविता, निबंध और नाटक उनके मुख्य रचना क्षेत्र हैं। 'प्रेम पुष्पावली', 'मन ही लहर', 'लोकोक्ति शतक', 'तृप्यन्ताम' और 'श्रृंगार विलास' उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'प्रताप लहरी' उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संग्रह है। भारतेंदु की भाँति उन्होंने भी विभिन्न विषयों को लेकर काव्य रचना की है, किंतु भक्ति और प्रेम की तुलना में समसामयिक देश-दशा और राजनीतिक चेतना का वर्णन उन्होंने अत्यधिक मनोयोग से किया है। इस संदर्भ में उनकी ये पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देशस कलेस
जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे विदेश।

राधाकृष्ण दास

राधाकृष्ण दास बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता के अतिरिक्त उन्होंने नाटक, उपन्यास और आलोचना के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय साहित्य रचना की है। उनकी कविताओं में भक्ति, श्रृंगार और समकालीन राजनीतिक चेतना को विशेष स्थान प्राप्त हुआ है। 'भारत बारहमासा' और 'देश दशा' समसामयिक भारत के विषय में उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। कुछ कविताओं में प्रसंगवश प्रकृति के सुंदर चित्र भी देखे जा सकते हैं। राधाकृष्ण-प्रेम के निरूपण में भक्तिकाल और रीतिकाल की वर्णन परंपराओं का उन पर समान प्रभाव है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए :—

मोहन की यह मोहिनी मूरत
जीय सों भूलत नाहिं भुलाये।
छोरन चाहत नेह को नातो
कोऊ विधि छूटत नाहिं छुराये।

इस काल के अन्य कवियों में श्री अंबिका दत्त व्यास (पावस पचासा, सुकवि सतसई), जगमोहन सिंह (प्रेम संपत्ति लता, श्यामा लता, श्यामा स्वप्न, श्यामा सरोजिनी, देवयानी आदि) उल्लेखनीय हैं।

1.2 द्विवेदी युग

द्विवेदी युग को जागरण सुधार काल भी कहा जाता है। इस काल-खंड के पथ-प्रदर्शक, साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर द्विवेदी युग का नामकरण हुआ। राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना से अनुप्राणित जितना साहित्य द्विवेदी युग में लिखा गया, उतना अन्य किसी काल खंड में नहीं। रीतिकालीन श्रृंगारिकता की जो प्रवृत्ति भारतेंदुयुगीन काव्य में अवशिष्ट रह गई थी, भारतेंदु के पश्चात् उसका भी विरोध हुआ और उसके स्थान पर आदर्श एवं नैतिकता से समन्वित काव्य की रचना हुई। ब्रजभाषा तथा अभिव्यक्ति की पुरानी शैलियों का परित्याग कर खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। कवियों को इस नवीन काव्य चेतना से अनुप्राणित कर उन्हें एक निश्चित दिशा प्रदान करने में द्विवेदी जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदी साहित्य में द्विवेदी जी का महत्व इसलिए भी है कि उन्होंने तत्कालीन साहित्य में प्रचलित रूढ़ियों का संगठित और जबर्दस्त विरोध किया।

सन् 1903 में द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' का संपादन कार्य प्रारंभ किया और उसके माध्यम से खड़ी बोली हिंदी भाषा को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने में विशेष योग दिया। द्विवेदी युग साहित्यिक अनुशासन का युग बनकर आया। इस काल में व्याकरण, छंद, विषय, काव्य रूप सबकी मर्यादा निर्धारित की गई जिससे साहित्य संसार में नव जागरण की लहर आ गई। भारतेंदु युग में देशभक्ति का जो स्वर सुनाई पड़ा था, द्विवेदी युग में उसका उत्तरोत्तर विकास होता गया। इस युग के प्रायः सभी कवियों ने देशभक्तिपूर्ण कविताओं की रचना की। मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में भारत की श्रेष्ठता की घोषणा निम्नलिखित पंक्तियों में की है :-

भूलोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीलास्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।

द्विवेदी युग में आचार्य द्विवेदी जी के नेतृत्व में रीतिकालीन श्रृंगारिकता का स्पष्ट विरोध किया गया और कविता के भीतर आदर्श एवं नैतिकता की प्रतिष्ठा हुई। मात्र मनोरंजन की भावना से दूर हटकर कविता में उचित उपदेशात्मकता का समावेश करने पर बल दिया गया। कविता के माध्यम से मनुष्य के हृदय में स्वार्थ-त्याग, कर्तव्य पालन, आत्म-गौरव आदि उच्चादर्शों की स्थापना का प्रयास किया गया।

गद्य के साथ-साथ पद्य के क्षेत्र में भी खड़ी बोली की व्यापक प्रतिष्ठा द्विवेदी युगीन हिंदी कविता की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। द्विवेदी जी के प्रयत्नों से उनके समय में खड़ी बोली के परिनिष्ठित स्वरूप की स्थापना हुई और व्याकरणिक अशुद्धियों का परिहार हुआ। द्विवेदी जी ने स्वयं कविताओं में सरल भाषा का प्रयोग किया और दूसरों को भी इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की।

1.2.1 प्रमुख कवि

श्रीधर पाठक (1859-1929)

इनका जन्म आगरा जिले के जौंधरी गाँव में हुआ था। हिंदी के अतिरिक्त इन्होंने अंग्रेजी और संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में कविताओं की रचना की है। खड़ी बोली के तो ये प्रथम समर्थ कवि कहे जा सकते हैं। देश-प्रेम, समाज-सुधार तथा प्रकृति-चित्रण इनकी कविता के प्रमुख विषय हैं। परंतु इनको सर्वाधिक सफलता प्रकृति-चित्रण में प्राप्त हुई है।

पाठक जी कुशल अनुवादक भी थे। कालिदास कृत 'ऋतुसंहार' तथा गोल्डस्मिथ कृत 'हरमिट', 'डेजर्टेड विलेज' तथा 'द ट्रैवेलर' का काव्य अनुवाद इन्होंने क्रमशः 'एकांतवासी योगी', 'ऊजड़ ग्राम' और 'श्रांत पथिक' नाम से किया है। इनकी मौलिक कृतियों में 'वनाष्टक', 'कश्मीर सुषमा', 'देहरादून' और 'भारत गीत' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938)

इनका जन्म जिला रायबरेली के दौलतपुर नामक ग्राम में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा उन्नाव से प्राप्त करने के बाद ये मुंबई चले गए। मुंबई में इन्होंने संस्कृत, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। आजीविका के लिए द्विवेदी जी ने रेलवे में नौकरी की किंतु उच्चाधिकारी से कुछ कहा-सुनी होने के कारण इन्होंने नौकरी छोड़ दी और पूर्णतया हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा में जुट गए।

सन् 1903 में ये सरस्वती के संपादक बने और 1920 तक कार्य करते रहे। सरस्वती के संपादक के रूप में इन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के उत्थान के लिए जो कार्य किया, वह चिरस्मरणीय रहेगा। इनके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप कवियों और लेखकों की एक पीढ़ी का निर्माण हुआ। खड़ी बोली को परिष्कार तथा स्थिरता प्रदान करने वालों में ये अग्रगण्य हैं। ये कवि, आलोचक, निबंधकार, अनुवादक तथा संपादक थे। इनके लिखे मौलिक और अनूदित गद्य-पद्य ग्रंथों की संख्या लगभग 80 है। मौलिक काव्य रचना की ओर इनकी विशेष प्रवृत्ति नहीं थी। इनकी अनूदित काव्य कृतियाँ अधिक सरस हैं। 'काव्य मंजूषा', 'सुमन', 'कान्यकुब्ज-अबला-विलाप' (मौलिक पद्य), 'गंगा लहरी', 'ऋतु तरंगिणी', 'कुमार संभवसार' (अनूदित) आदि द्विवेदी जी की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इन्होंने अपनी कविता में तत्सम प्रधान तथा सरल दोनों प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947)

'हरिऔध' जी द्विवेदी युग के प्रख्यात कवि होने के साथ-साथ उपन्यासकार, आलोचक एवं इतिहासकार भी थे। पुरातन संस्कृति का पुनरुद्धार, देश के वर्तमान युवकों का उचित मार्ग-दर्शन तथा कविता में उपदेशात्मक वृत्ति को इन्होंने आरंभ से ही अपना ध्येय रखा। सर्वप्रथम ये निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापक हुए, उसके पश्चात् कानूनगो। इन्होंने सन् 1923 में सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण किया और शेष जीवन साहित्य-सेवा में समर्पित कर दिया। कुछ समय तक इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अवैतनिक प्राध्यापक के रूप में भी कार्य किया। इनके काव्यग्रंथों में 'प्रियप्रवास', 'पद्यप्रसून', 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे', 'बोलचाल', 'रसकलस' तथा 'वैदेही वनवास' प्रमुख हैं। 'प्रियप्रवास' खड़ी बोली में लिखा गया प्रथम महाकाव्य है। हरिऔध जी ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में ही रचना की है। दोहा, कवित्त, सवैया आदि के साथ ही संस्कृत के वर्णवृत्तों में काव्य की रचना

की है और इनको सभी में समान रूप से सफलता मिली है। 'प्रियप्रवास' पर इन्हें हिंदी का सर्वोत्तम पुरस्कार - मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया। इनकी काव्य शैली बड़ी मार्मिक और भावपूर्ण है। यशोदा का विरह कैसा सहृदय संवेद्य है—

प्रिय पति, वह मेरा प्राणप्यारा कहाँ है ?
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है ?
लख-मुख जिसका मैं आज लौ जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है ?

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964)

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव, जिला झाँसी में हुआ था। ये द्विवेदी काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किंतु इनकी प्रसिद्धि का मूलाधार 'भारत-भारती' है। 'भारत-भारती' ने हिंदी भाषियों में जाति और देश के प्रति गौरव की भावना जाग्रत की। तभी से ये 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हुए। गुप्त जी की देशभक्ति से परिपूर्ण निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए—

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की,
हे ! मातृभूमि ! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।

मैथिलीशरण गुप्त प्रसिद्ध रामभक्त कवि थे। तुलसी के 'रामचरितमानस' के पश्चात् हिंदी में रामकाव्य का दूसरा स्तंभ गुप्त जी का 'साकेत' है। इन्होंने दो महाकाव्यों और उन्नीस खंड काव्यों की रचना की है। जिनमें से प्रमुख हैं—'जयद्रथ वध', 'भारत-भारती', 'पंचवटी', 'झंकार', 'साकेत', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'विष्णु प्रिया' आदि। 'प्लासी का युद्ध', 'मेघनाथ-वध' आदि इनके अनूदित काव्य हैं।

रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962)

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म जौनपुर जिले के कोइरीपुर गाँव में हुआ। कविता के प्रति इनकी रुचि प्रारंभ से ही थी। सरस्वती पत्रिका के प्रभावस्वरूप ये खड़ी बोली की ओर उन्मुख हुए। रामनरेश त्रिपाठी के चार काव्यग्रंथ प्रकाशित हुए हैं — 'मिलन', 'पथिक', 'मानसी' और 'स्वप्न'। इनके काव्य से व्यक्तिगत सुख और स्वार्थ को त्यागकर देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा मिलती है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए—

सच्चा प्रेम वही है जिसकी,
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर॥

इस काल के अन्य कवियों में रायदेवी प्रसाद पूर्ण (मृत्युंजय, वसंतवियोग), रामचरित उपाध्याय (राष्ट्रभारती, देवदूत), गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' (कृष्णक क्रंदन, राष्ट्रीय वीणा) आदि उल्लेखनीय हैं।

पाठ-9 : छायावाद और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा

1.0	छायावाद युग	143
1.1	छायावाद के प्रतिनिधि कवि	143
1.1.1	जयशंकर 'प्रसाद'	143
1.1.2	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	144
1.1.3	सुमित्रानंदन पंत	145
1.1.4	महादेवी वर्मा	147
1.2	राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा	148
1.3	राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि	150
1.3.1	माखनलाल चतुर्वेदी	150
1.3.2	रामधारी सिंह 'दिनकर'	151
1.3.3	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	152
1.3.4	सोहनलाल द्विवेदी	153

1.0 छायावाद युग

छायावाद युग का आरंभ द्विवेदी युग के बाद (संवत् 1975) से माना जाता है। यह युग एक प्रकार से द्विवेदी युग की बौद्धिकता और उपदेशात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया। इस युग की काव्यधारा में कल्पना और संवेदना की प्रधानता है।

डॉ. नगेंद्र के अनुसार, “छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।” आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार, “छायावादी काव्य प्राकृतिक सौंदर्य और सामयिक जीवन परिस्थितियों से ही मुख्यतः अनुप्राणित है।”

छायावादी कवियों की दूसरी विशेषता यह है कि इन्होंने स्थूल के बजाय सूक्ष्म चित्रण को, मूर्त के स्थान पर अमूर्त चित्रण को महत्व प्रदान किया। विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह मानव-हृदय को स्पर्श करे। किसी बात का केवल वर्णन कर देना कवि का कर्तव्य नहीं है। उसे भावात्मक रूप से प्रस्तुत करने में ही उसकी सफलता है। यही कारण है कि कविता में लाक्षणिक और प्रतीकात्मक चित्रण की ओर ध्यान गया और अभिधात्मक चित्रण को हेय समझा जाने लगा। इस प्रकार शब्दों की व्यंजना और ध्वनि को विशेष महत्व मिला।

छायावाद की एक अन्य विशेषता प्रकृति-प्रेम है। छायावादी कवि प्रकृति में चेतनता का अनुभव करता है। वह प्रकृति को यथार्थ रूप से (तटस्थ भाव से) और प्रतीकात्मक रूप से चित्रित करता है।

सामाजिक अनुभूतियों को गीतात्मक ढंग से व्यक्त करना भी छायावाद की विशेषता है। गीतों में वैयक्तिकता की सफल अभिव्यक्ति हो सकती है परंतु छायावादी युग में सामाजिक भावनाएँ भी इसी शैली में अभिव्यक्त हुईं।

भाषा का परिष्कार छायावादी कवियों की महत्वपूर्ण देन है। छायावाद ने खड़ी बोली की कर्कशता को समाप्त किया। इन कवियों ने कोमल पदावली द्वारा साहित्य को जो गीत दिए वे इस कथन के उदाहरण हैं।

छायावादी युग के प्रतिनिधि कवियों में जयशंकर ‘प्रसाद’, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ और महादेवी वर्मा मुख्य हैं।

1.1 छायावाद के प्रतिनिधि कवि

1.1.1 जयशंकर ‘प्रसाद’ (1890-1937)

जयशंकर ‘प्रसाद’ का जन्म काशी में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्होंने वेद, उपनिषद, पुराण, इतिहास आदि के साथ उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी का भी अध्ययन किया। प्रसाद सरल, उदार, मृदुभाषी, स्पष्ट वक्ता और हंसमुख व्यक्ति थे। इनके विचार धार्मिक थे और ये शिवभक्त थे।

इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं—‘कानन कुसुम’, ‘करुणालय’, ‘प्रेम पथिक’, ‘झरना’, ‘आँसू’, ‘लहर’ और ‘कामायनी’

‘प्रसाद’ की काव्य रचना का आरंभ द्विवेदी युग में ‘कानन कुसुम’ और ‘प्रेम पथिक’ से हो गया था। जहाँ तक छायावाद का संबंध है, इन्हें छायावाद का प्रवर्तक माना जाता है। इनके छायावादी जीवन का आरंभ ‘झरना’ से हुआ। इसमें इन्होंने स्वच्छंद काव्य शैली का प्रयोग किया। ‘आँसू’ में इनके छायावादी रूप का विकास हुआ और वह अपने उत्कर्ष पर पहुँची। इनकी अंतिम और सर्वोत्कृष्ट रचना

‘कामायनी’ है। ‘कामायनी’ महाकाव्य छायावाद-रहस्यवाद युग की अभूतपूर्व रचना है। इस महाकाल में प्रसाद ने इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय पर तथा बुद्धि और हृदय के संतुलन पर बल दिया। ये छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक थे। इनके काव्य में अनुभूति की तीव्रता है।

‘प्रसाद’ मूल रूप से कल्पना और भावना के कवि थे। इनमें अत्यधिक भावकुता थी जिसकी झलक इनकी निम्नलिखित कविता में देखी जा सकती है—

“इस करुणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में, वेदना असीम गरजती।”

‘प्रसाद’ प्रकृति प्रेमी कवि थे। इन्होंने प्रकृति के सुकुमार, मधुर और भयानक रूपों का चित्रण किया है। ‘प्रसाद’ की प्रकृति चित्रण की शैली एकदम अलग है। इन्होंने प्रकृति में अपने भावों की छाया देखी है। ‘लहर’ में सूर्योदय का मनोरम चित्र देखिए—

“अंतरिक्ष में अभी सो रही है उषा मधुबाला।
अरे, खुली भी नहीं अभी तक प्राची की मधुशाला।।”

नीचे लिखी पंक्ति में समाज के दलित शोषित वर्ग की दशा और उसके प्रति छायावादी युग के कवियों की सहानुभूति का भाव दिखाई देता है—

“अरे भिखारी, तू चल पड़ता लेकर फूटा प्याला।”

‘प्रसाद’ ने मनोवैज्ञानिक पद्धति से मन के विभिन्न भावों का संकलन किया है। ‘कामायनी’ के सभी सर्गों के नाम किसी न किसी मनोभाव पर हैं। इन्होंने अपने काव्य में नारी भावना को विशिष्ट स्थान दिया है। इसकी अभिव्यक्ति ‘कामायनी’ महाकाव्य में हुई है। ‘कामायनी’ में ‘श्रद्धा’ नारी का प्रतीक है। नारी अपना सब कुछ खोकर पुरुष के जीवन को सार्थक करती है। इसी भावना की अभिव्यक्ति करते हुए ‘प्रसाद’ ने कहा—

“नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।”

‘कामायनी’ महाकाव्य में ‘प्रसाद’ ने भारतीय इतिहास के मनुकाल का पुनर्निर्माण किया और अपनी कल्पना और खोज द्वारा उस युग का चित्रण प्रस्तुत किया।

1.1.2 सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ (1899-1961)

महाकवि ‘निराला’ का जन्म वसंत पंचमी के दिन बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनकी आरंभिक शिक्षा बंगला माध्यम से हुई। इन्होंने स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और अपने प्रयास से संस्कृत, अंग्रेजी तथा बंगला साहित्य और दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया। आरंभ से द्विवेदी जी की प्रेरणा से इन्होंने कुछ पत्रिकाओं का संपादन भी किया। हिंदी साहित्य के महारथी ‘निराला’ बहुत अक्खड़ स्वभाव के व्यक्ति थे। परंतु वे बहुत भावुक प्रकृति के थे। एक बार ठंड से सिकुड़ते एक भिखारी को देख इनको उस पर दया आई और ये उस पर अपना कंबल डाल आए। जीवन के अंतिम दिनों में इनका स्वास्थ्य और मानसिक दशा बिगड़ गई थी।

‘निराला’ जी युग प्रवर्तक कलाकार थे। इन्होंने काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, जीवनी आदि विभिन्न क्षेत्रों में लेखन कार्य किया। इसके अतिरिक्त इनकी बहुत-सी बंगला से अनूदित रचनाएँ

भी हैं। 'निराला' मूलतः कवि थे। ये अपने काव्य के कारण ही जाने जाते हैं। इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं—'अनामिका', 'परिमल', 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता', 'आराधना' आदि। इनकी रचनाओं में परंपरा के प्रति विद्रोह की भावना सबसे तीव्र दिखाई देती है। इनकी भाव शैली और विषयों में नवीनता है। इनकी रचनाओं में नई-नई उपमाओं का प्रयोग हुआ है। निराला जी प्रगतिवाद के पुरोधा तो हैं ही, नारी एवं दलित विमर्श की बानगी भी इनकी रचनाओं में मिलती है।

'निराला' जी के काव्य पर प्रगतिवाद का भी प्रभाव दिखाई देता है जो आने वाले युग की सूचना देता है। 'कुकुरमुत्ता' में उन्होंने गुलाब और कुकुरमुत्ता को क्रमशः शोषक और शोषित वर्ग का प्रतीक बनाने का प्रयास किया है। कविता की पंक्तियाँ देखिए—

“अबे, सुन बे गुलाब,
भूल मत गर पाई खुशबू, रंगो-आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट।”

'निराला' के काव्य की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है जिसमें सामान्य रूप से संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग है। उन्होंने परंपरा से चले आ रहे छंदों के बंधनों को तोड़कर मुक्त छंद की घोषणा की। इस दृष्टि से उनकी भाषा के दो रूप हो गए। कहीं वह एकदम सरल है तो कहीं क्लिष्ट। 'भिक्षुक' कविता सरल भाषा और मुक्त छंद का अच्छा उदाहरण है—

“दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।”

संस्कृतनिष्ठ कठिन भाषा का भी एक उदाहरण देखिए—

“रावण प्रहार-दुर्वार विकल वानर दल-बल।
मूर्छित सुग्रीवांगद भीषण गवाक्ष गय-नल॥”

'निराला' जी ने पाश्चात्य शैली का अधिक सहारा लिया और रविबाबू की तरह वैष्णव कविता की सहायता ली है।

छायावादी कवियों में 'निराला' का महत्वपूर्ण स्थान है। वे एक दार्शनिक, मानवतावादी, प्रगतिशील कवि हैं। हिंदी में 'निराला' से बढ़कर कोई स्वच्छंदतावादी कवि नहीं हैं। इन्होंने अपनी प्रतिभा से भाषा, भाव, छंद, शैली आदि सबमें परिवर्तन कर हिंदी साहित्य को समुन्नत किया। इन्होंने हिंदी साहित्य को प्राचीन रूढ़ियों से मुक्ति दिलाकर उसे नई दिशा प्रदान की।

1.1.3 सुमित्रानंदन पंत (1900-1977)

सुमित्रानंदन पंत का जन्म अलमोड़ा के कौसानी गाँव में हुआ था। जन्म के कुछ ही घंटे बाद इनकी माता की मृत्यु हो गई। इनके पिता कौसानी राजा के कोषाध्यक्ष और जमींदार थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। ये नवीं पास करने के बाद काशी चले गए। कॉलेज में एक वर्ष पढ़ने के बाद इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वयं अंग्रेजी और बंगला का अभ्यास किया।

इन्हें संगीत का शौक था। इन पर रविबाबू और पाश्चात्य साहित्य के शेली, वुड्सवर्थ, कीट्स आदि कवियों का प्रभाव था। ये संस्कृत साहित्य में कालिदास से और दर्शन में अरविंद और गांधी के विचारों से प्रभावित थे। कुछ समय तक पंत जी आकाशवाणी के उच्च अधिकारी भी रहे।

'पंत' जी ने पद्य और गद्य दोनों में साहित्य सृजन किया। इन्होंने कविता के अतिरिक्त कहानी,

निबंध आदि भी लिखे। ऐसा प्रतीत होता है कि पंत जी के हृदय में कविता का अंकुर किसी के वियोग के कारण प्रस्फुटित हुआ होगा।

“वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।

निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान॥”

इनकी पहली रचना ‘उच्छ्वास’ है। इस नाम से ही हमारे कथन की पुष्टि होती है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—‘वीणा’, ‘ग्रंथि’, ‘पल्लव’, ‘गुंजन’, ‘युगांत’, ‘युगवाणी’, ‘ग्राम्या’, ‘उत्तरा’, ‘लोकायतन’ और ‘चिदंबरा’ आदि।

स्वच्छंदतावादी कवियों में प्रकृति के प्रति सबसे अधिक प्रेम ‘पंत’ जी की कविताओं में दिखाई देता है। संभवतः इसका कारण यह था कि ‘पंत’ जी का बचपन अलमोड़ा के प्राकृतिक वातावरण में बीता था। इनकी ‘वीणा’ से ‘पल्लव’ तक की कविताओं में प्राकृतिक सुषमा का अच्छा चित्रण हुआ है। इनकी कविता में सुकुमार भाव, मधुर भाषा और कोमल कल्पना है। इनका हृदय प्रकृति में पूर्ण रूप से रमा हुआ था। ‘पंत’ जी जहाँ एक ओर अरविंद की विचारधारा से प्रभावित हुए वहीं दूसरी ओर विवेकानंद और स्वामी रामतीर्थ के विचारों ने भी इन्हें प्रभावित किया। प्रकृति प्रेम के कारण इनके मन में प्रकृति में प्रतिबिंबित होती हुई अज्ञात शक्ति के बारे में इच्छा पैदा हुई। इसीलिए इनके काव्य में रहस्यात्मक संकेत मिलते हैं।

‘युगांत’ से इनका रुझान छायावाद से मानववाद की ओर हुआ। इसे ‘पंत’ ने कुछ नीचे दी हुई पंक्तियों में प्रकट किया—

“सुंदर है विहग, सुमन सुंदर।

मानव तुम सबसे सुंदरतम॥”

इसके बाद कवि ‘पंत’ ने मार्क्सवाद के प्रभाव से भाव और कल्पना के चित्रों के स्थान पर जीवन का सजीव मूर्तचित्र प्रस्तुत करना शुरू किया। इसी संदर्भ में ताजमहल के बारे में क्षोभ भरे स्वर में वे कहते हैं—

“शव को हम दें रूप, रंग, आदर मानव का।

मानव को हम चित्र बना दें कुत्सित शव का॥”

अपने काव्य में इन्होंने गांधीवाद और मार्क्स के साम्यवाद को मान्यता दी। इसे निम्नलिखित पंक्तियों में देखिए—

“मनुष्यत्व का तत्व सिखाता निश्चय हमको गांधीवाद।

सामूहिक जीवन विकास की साम्य योजना है अविवाद॥”

‘पंत’ जी के काव्य में प्रकृति की सुषमा का चित्रण बेजोड़ है। इन्होंने विभिन्न प्रकार से प्रकृति का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया। इसी कारण इन्हें ‘प्रकृति का सुकुमार कवि’ कहा जाता है। चित्रात्मक शैली में प्रकृति का वर्णन देखिए—

“बाँसों का झुरमुट, संध्या का झुटपुट।

चिड़िया चहक रही, टी-वी-टी टुट-टुट॥”

‘पंत’ जी की कविताओं में रहस्यवाद की भी झलक मिलती है। ‘मौन निमंत्रण’ कविता में ‘पंत’ जी ने रहस्यवादी कवि के रूप में परमात्मा से आत्मीय संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है।

‘पंत’ जी के काव्य का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि ये छायावादी युग के सर्वश्रेष्ठ मानवतावादी और प्रकृति प्रेमी कवि हैं। डॉ. नगेंद्र के अनुसार—“पंत जी प्रधान रूप से कलाकार हैं। इनके काव्य में सबसे प्रथम कला का उसके उपरांत विचारों का और अंत में भावों का स्थान है।” पंत जी को ‘चिदंबरा’ पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

1.1.4 महादेवी वर्मा (1907-1987)

महादेवी जी का जन्म सन् 1907 में फर्रुखाबाद के एक सुशिक्षित परिवार में हुआ था। माता जी के आदर्श चरित्र और आस्तिक विचारों तथा नाना के कविता प्रेम ने इन्हें साहित्य की ओर प्रवृत्त किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। इन्होंने संस्कृत में एम.ए. किया। बचपन से ही इनकी रुचि कविता के साथ संगीत और चित्रकला की ओर थी।

महादेवी जी की रुचि पत्रिकाओं के संपादन में भी रही है। इन्होंने लंबे समय तक ‘चाँद’ का संपादन किया और बाद में ‘साहित्यकार’ का भी संपादन किया। ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य थीं। अपने साहित्य प्रेम के कारण इन्होंने ‘साहित्य संसद’ नामक संस्था भी स्थापित की।

महादेवी जी की साहित्यिक कृतियाँ हिंदी साहित्य में आदर के साथ देखी जाती हैं। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं—‘नीहार’, ‘रश्मि’, ‘नीरजा’, ‘सांध्यगीत’, ‘दीपशिखा’, ‘यामा’ आदि।

छायावादी कवियों में महादेवी जी का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अपनी कविताओं का लेखन ब्रजभाषा से शुरू किया। परंतु बाद में इन्होंने काव्य लेखन के लिए खड़ी बोली का प्रयोग किया। इनकी आरंभिक रचनाएँ ‘चाँद’ में प्रकाशित हुईं।

छायावाद में प्रकृति पर चेतन सत्ता का आरोप किया जाता है और चित्रात्मक भाषा में उसका मानवीकरण किया जाता है। महादेवी जी की कविताओं में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। यहाँ महादेवी जी और अन्य कवियों में कुछ अंतर दिखाई देता है। अंतर यह है कि जहाँ अन्य कवियों ने प्रकृति में आनंद और उल्लास का अनुभव किया वहाँ महादेवी जी ने उसमें वेदना का अनुभव किया।

महादेवी जी ने प्रकृति को नाना रूपों में देखा और उन्हें चित्रित किया। कहीं इन्होंने प्रकृति को अलंकार के रूप में, कहीं छायावादी मूर्तविधान के रूप में, कहीं रहस्यात्मक रूप में तो कहीं उपदेशात्मक रूप में चित्रित किया। नीचे उनके द्वारा प्रकृति का आलंबन के रूप में वर्णन देखिए—

रजनी ओढ़े जाती थी, झिलमिल तारों की जाली।

उसके बिखरे वैभव पर, जब रोती थी उजियाली।

महादेवी जी के काव्य की मूलभावना ‘वेदना’ है। यह वेदना कहीं व्यक्तिगत है तो कहीं सामाजिक। सामाजिक वेदना का एक उदाहरण देखिए जहाँ वे भारत माता से प्रश्न करती हैं—

कह दे माँ क्या अब देखूँ।

देखूँ खिलती कलियाँ या प्यासे-भूखे अधरों को।

तेरी चिर यौवन सुषमा या जर्जर जीवन देखूँ।

काव्य में इनकी वेदना ने लौकिक होते हुए भी आध्यात्मिक रूप धारण कर लिया। यहाँ उनकी वेदना छायावाद और रहस्यवाद दोनों रूपों में व्यक्त हुई।

महादेवी जी रहस्यवादी कवयित्री हैं। इन्होंने रहस्यवाद के चित्रण में प्रकृति से प्राप्त अनुभूतियों

के साथ अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों को स्थान दिया है। महादेवी जी बौद्ध दर्शन से प्रभावित हैं। इनकी कविताओं की करुणा निजी है—

“मैं नीर भरी दुख की बदली - उमड़ी कल थी मिट आज चली।”

महादेवी जी के काव्य में रहस्यवाद की विभिन्न अवस्थाओं का सुंदर और स्वाभाविक चित्रण हुआ है। इनका रहस्यवाद मीरा, कबीर आदि के समान साधनात्मक रहस्यवाद न होकर भावनात्मक रहस्यवाद है। “मिलन का मत नाम लो मैं विरह में चिर हूँ।” महादेवी जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।

इनका काव्य गीतिकाव्य है। इसमें अनुभूति की प्रधानता है। इसलिए इनके काव्य में माधुर्य और कोमलता है। इन्होंने अपने काव्य में वियोग, शृंगार, शांत तथा करुण रसों का प्रयोग किया है तथा उसमें अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक आदि अलंकारों का अच्छा प्रयोग मिलता है।

1.2 राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा

भारतीय जनजीवन में गांधीवाद का आगमन हिंदी काव्य में छायावाद के आगमन के साथ हुआ। गांधीवाद के बहुत से अंतर्मुखी तत्व छायावादी काव्य में दिखाई देते हैं। मैथिलीशरण गुप्त में जहाँ गांधीवाद की नैतिकता और आदर्श दिखाई देता है, वहीं माखनलाल चतुर्वेदी में गांधीवाद, राष्ट्रीय चेतना के जीवंत तत्व के रूप में अभिव्यक्त हुआ, जिससे इन कवियों का काव्य अधिक प्राणवान और सशक्त हो गया है। इसे ही राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा कहा गया है।

गांधीवादी दर्शन का आधार सत्य, अहिंसा, धर्म और समानता है। ये गांधीवाद के प्राणतत्व हैं। भारतीय संस्कृति के चिरंतन मूल्यों को अभिव्यक्त करना और मानवता को जगाना ही गांधीवाद है। यह प्राचीन भारतीय परंपरा का अंग है। गांधी ने स्वयं कहा है कि उन्होंने कोई नई विचारधारा या नया जीवन दर्शन नहीं दिया है अपितु प्राचीन सिद्धांत की ही फिर से स्थापना की है। उनके अनुसार सत्याग्रह का सिद्धांत मूल रूप से बहुत प्राचीन है। इसे गांधी ने व्यापक और सार्वभौमिक रूप प्रदान किया। गांधी जहाँ एक ओर अहिंसावादी थे, वहीं दूसरी ओर वे समन्वयवादी भी थे।

हिंदी के प्रायः सभी राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं अन्य कवियों ने गांधीवादी विचारधारा को किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति दी, जब कि इनमें से कुछ कवियों का काव्य गांधीवाद और राष्ट्रीय काव्यधारा के अंतर्गत रखा जा सकता है। स्वाधीनता से पूर्व और बाद के कुछ ऐसे कवि हैं जिनके काव्य पर गांधीदर्शन का अत्यधिक प्रभाव दृष्टिगत होता है। ये कवि हैं—मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानंदन पंत, सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह ‘दिनकर’, शिवमंगल सिंह ‘सुमन’, भवानी प्रसाद मिश्र, बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ आदि। गुप्त जी की आरंभिक रचनाओं में राष्ट्रीयता और गांधीवाद के स्वर मुखर हुए। उनके ‘स्वदेशी संगीत’ संग्रह में सत्याग्रह, स्वराज्य और गांधी से संबंधित रचनाएँ हैं। वे हरिजनों के उत्थान और सांप्रदायिक समस्याओं के समाधान में गांधी जी के प्रयत्नों के समर्थक थे। ‘स्वदेशी संगीत’ संग्रह की एक कविता का अंश देखिए—

अस्थिर किया टाप वालों को गांधी टोपी वालों ने।

शस्त्र बिना संग्राम किया है इन माई के लालों ने॥

गुप्त की अधिकांश रचनाएँ गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएँ ओज गुण से पूर्ण थीं। वे स्वयं एक सक्रिय क्रांतिकारी थे और

राजनीति से सीधे जुड़े हुए थे। बाद में गांधी के प्रभाव से उनके चिंतन में परिवर्तन हुआ। आजादी से पूर्व और पश्चात् की इनकी सभी रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना से पूर्ण हैं। 'कैदी और कोकिला' इनकी अमर कृति हैं।

सुमित्रानंदन पंत की स्वाधीनता से पूर्व की समस्त रचनाओं पर गांधी और उनके विचारों का प्रभाव है। इनकी 1937 की 'बापू' शीर्षक कविता में गांधी के जीवन दर्शन और व्यक्तित्व की झलक देखिए—

नव संस्कृत के दूत देवताओं का करने कार्य
मानव आत्मा को उबारने आए तुम अनिवार्य।

कविता में पंत सत्य और अहिंसा का जयगान करते हुए कहते हैं—
सत्य अहिंसा बन अंतरराष्ट्रीय जागरण।
मानवीय स्पर्शों से भरते धरती के व्रण॥

दिनकर की कुछ रचनाओं तथा ओजपूर्ण अभिव्यक्ति के कारण कुछ आलोचक इन्हें प्रगतिवाद के साथ भी जोड़ते हैं। परंतु यहाँ एक भ्रम है। वे यह भूल जाते हैं कि दिनकर ने शोषितों को वाणी दी, किंतु यह सर्वहारा की भाषा नहीं थी। वे मार्क्स के समर्थक नहीं थे। दिनकर ने अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई थी जिसकी प्रेरणा उन्हें भारतीय संस्कृति से मिली थी। इसके प्रमाण हैं इनकी 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'हुंकार' और 'उर्वशी' आदि रचनाएँ। ये अन्याय के विरुद्ध तो थे लेकिन मार्क्सवाद की रक्तक्रांति के समर्थक नहीं थे।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का व्यक्तित्व भी गांधीवाद और राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण था। 'नवीन' कांग्रेस के भी सदस्य थे और स्वाधीनता संग्राम में गांधी के अनुयायी भी थे। ये यद्यपि उग्रवाद के समर्थक थे परंतु कभी गांधी के विरोधी नहीं रहे। नवीन की कविता का उदाहरण देखिए—

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए॥

सोहनलाल द्विवेदी भी राष्ट्रीयता का जयघोष करने वाले कवि थे। हिंदी काव्य जगत में उनके जैसा सरल और सादगी भरा व्यक्तित्व मिलना मुश्किल है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय आंदोलनों को प्रोत्साहित करने और गांधीवाद को प्रतिष्ठित करने वाले भावों की प्रचुरता थी। अपने जीवन में गांधीवादी विचारधारा को साकार करने वाले वे निराले कवि थे। वे विशेषतः युवकों के प्रिय कवि थे।

इस युग में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य में दो बातों पर विशेष, बल दिया गया। एक ओर तो कवियों ने देश में व्याप्त विसंगतियों और विषमताओं को हटाने के लिए जनमानस को उद्बोधित किया, दूसरी ओर विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए जनता को स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा भी दी। इस काल के कवियों ने काव्य के द्वारा ही जन जागरण का बिगुल नहीं बजाया अपितु स्वयं उसमें सक्रिय रूप से भाग भी लिया। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कैदी और कोकिला' में इसी भावना को स्वर दिया है। देखिए—

क्या देख न सकती जंजीरों का गहना,
हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज का गहना।
कोल्हू के चरक चूँ जीवन की तान,
मिट्टी पर लिखे अंगुलियों ने गाए गान॥

जनता में आत्मविश्वास पैदा करने का उपाय अतीत की गरिमा का चित्रण था। इस कविता में भारतीय परंपरा में उन जीवन मूल्यों की खोज का प्रयास था जो किसी भी काल के जीवन के लिए सार्थक और उपयोगी हों। इसके लिए राष्ट्रीय कवियों ने राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम, हरिश्चंद्र आदि युग पुरुषों से प्रेरणा लेने के लिए उद्बोधित किया। इस प्रकार इन कवियों ने वर्तमान को अतीत से जोड़कर वर्तमान में नवीन उत्साह का संचार करने का प्रयास किया। बीच-बीच में वहीं क्रांति और ध्वंस के स्वर भी सुनाई दे जाते हैं।

इस काव्य धारा के कवि राष्ट्रीय चेतना के गायक हैं। इनके काव्य में चाहे छायावादी कवियों की तरह सूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति न हुई हो परंतु भावुकता का उच्छल प्रवाह वहाँ भी हिलोरें ले रहा था। इस धारा के कवि माखनलाल चतुर्वेदी का मानना था कि कवि अपनी सहृदयता और संवेदना के द्वारा लोक जीवन के अभावों को दूर करने के लिए तत्पर रहता है। इसके लिए उसे अपने भीतरी चक्षुओं से विश्व का साक्षात्कार करना होता है जिसे उन्होंने निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया है—

तम में खलबली मचाता रे गायक ! क्या तू कवि है।

दावों में तू योद्धा है, भावों में वीर सुकवि है॥

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कुछ अन्य कवियों में प्रमुख हैं—रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त, उदय शंकर भट्ट, जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद। इसके अतिरिक्त निराला, पंत, मैथिलीशरण गुप्त, गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही', केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', महेशचंद्र प्रसाद आदि ने भी अपनी रचनाओं से राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा को पुष्ट किया है।

1.3 राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि

1.31 माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968)

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई गाँव में हुआ था। इनके पिता गाँव के विद्यालय में अध्यापक थे। इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। बाद (1904) में ये गाँव की पाठशाला में अध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती और बंगला का अध्ययन किया। ये एक सजग, संवेदनशील और उत्साही व्यक्ति थे। इनकी बचपन से ही साहित्य में रुचि थी। इनकी पहली कविता रसिक मित्र में प्रकाशित हुई। धीरे-धीरे ये साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त हुए। इन्होंने 'प्रभा', 'प्रताप' और 'कर्मवीर' नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। आरंभ में ये क्रांति दर्शन से प्रभावित हुए, किंतु बाद में इनकी आस्था गांधीवाद की ओर हो गई। इन्हें राजनीति में भाग लेने के कारण कई बार जेल जाना पड़ा। जेल में रहते हुए इन्होंने अनेक कविताएँ लिखीं। ये कुशल लेखक होने के साथ ही अच्छे वक्ता भी थे।

चतुर्वेदी जी ने कहानी, नाटक, निबंध और कविताओं की रचना कर हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की। इनका नाटक 'कृष्णार्जुन युद्ध' है और 'साहित्य देवता' निबंध संग्रह है। इनकी कहानियों के संग्रह का नाम 'कला संग्रह' है। इनके प्रमुख कविता संग्रह हैं—'हिम किरीटिनी', 'हिम तरंगिनी', 'माता', 'समर्पण', 'युगचरण', 'वेणु लो गूँजे धारा' आदि। 'हिम किरीटिनी' देश प्रेम संबंधी कविताओं का सुंदर संग्रह है। माखनलाल चतुर्वेदी ऐसे कवि थे जिन्होंने स्वयं सक्रिय राजनीति का चयन किया।

चतुर्वेदी की रचनाओं में राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी है। उनमें निःस्वार्थ चेतना और आत्मत्याग का भाव दिखाई देता है। उन्होंने राष्ट्र को ही अपना देवता माना।

स्वतंत्रता देवी को अपनी आराध्य देवी स्वीकार किया। 'पुष्प की अभिलाषा' कविता कवि की स्वाधीनता में अलख जगाने वाली कविताओं में प्रमुख है—

“चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ॥”

“मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक॥”

माखनलाल चतुर्वेदी स्वयं आजादी की लड़ाई के सिपाही थे। इसलिए उनकी देश प्रेम की कविताओं में अनुभूति की सच्चाई और आवेश दिखाई देता है। ये अपनी देश प्रेम प्रधान रचनाओं के लिए हिंदी जगत में प्रसिद्ध हैं। चतुर्वेदी जी ने अपनी रचनाएँ साहित्यिक खड़ी बोली में लिखी हैं। उनकी आरंभिक कविताओं में ब्रजभाषा का प्रयोग भी मिलता है। परंतु बाद की रचनाएँ खड़ी बोली में ही हैं। राष्ट्रीय धारा के कवियों में इनका विशिष्ट स्थान है।

1.3.2 रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974)

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितंबर सन् 1908 में मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्होंने सन् 1932 में पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में बी.ए. (ऑनर्स) पास किया। शिक्षा समाप्त करने के बाद 'दिनकर' हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक हो गए। फिर सन् 1934 से 1947 तक ये बिहार सरकार में सब-रजिस्ट्रार और फिर बिहार में ही दृश्य प्रचार विभाग में उपनिदेशक रहे। अंत में दिनकर मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष हो गए। सन् 1952 में इन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और इन्हें संसद सदस्य बनाया गया। इसके बाद ये कुछ समय भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति और भारत सरकार के हिंदी सलाहकार जैसे उच्च पदों पर रहे। सन् 1959 में इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इन्हें 'उर्वशी' महाकाव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

कवि दिनकर की 'हुंकार' पहली रचना है। यह कवि की राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत रचना है। इसमें विप्लव और विद्रोह की आग है। इसे पढ़कर रामवृक्ष बेनीपुरी ने इन्हें क्रांतिकारी कवि घोषित कर दिया था। कवि का यह ओजस्वी स्वर 'रसवंती', 'द्वंद्वगीत', 'रेणुका', 'सामधेनी', 'इतिहास के आँसू', 'धूप और धुआँ' आदि काव्य संग्रहों में भी सुनाई देता है। इनके वर्णानात्मक काव्यों में 'बारदोली विजय', 'धूप-छाँह', 'बापू', 'इतिहास के आँसू' प्रसिद्ध हैं। मुक्तक काव्यों में 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'सामधेनी', 'नीम के पत्ते', 'नील कुसुम', 'सीपी' और 'शंख' प्रमुख हैं।

'हिमालय' शीर्षक कविता से उनकी उस क्रांति भावना का आभास मिलता है जो शोषक-शोषित समाज का उन्मूलन कर वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहती है। उनकी इसी भावना का विकसित रूप 'हुंकार' और 'कुरुक्षेत्र' में दिखाई देता है।

दिनकर ने अपनी राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति 'अतीत' और 'वर्तमान' के संदर्भ में की है। 'हिमालय' की इन पंक्तियों में उन्होंने अतीत के प्रति अपना प्रेम और वर्तमान के प्रति अपना क्षोभ व्यक्त किया है—

“तू पूछ अवध में राम कहाँ ?
 वृंदा बोलो घनश्याम कहाँ ?
 ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक,
 वह चंद्रगुप्त बलधाम कहाँ ?”

कहीं-कहीं दिनकर ने प्रगतिवादी कवियों की तरह दीन-हीन मजदूर तथा विवश मानव की दीनता के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है।

दिनकर की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।

दिनकर की काव्य शैली के मुख्यतः दो रूप हैं—प्रबंध शैली और मुक्तक शैली। पहली के अंतर्गत महाकाव्य, खंडकाव्य और वर्णनात्मक काव्य हैं। ‘कुरुक्षेत्र’ इनका उत्तम काव्य है, जिसमें तुकांत एवं अतुकांत सभी प्रकार के नूतन और प्राचीन छंदों का प्रयोग हुआ है।

दिनकर ने अपनी रचनाओं में वीर, रौद्र और करुण रसों का सफलतापूर्वक चित्रण किया है। ‘उर्वशी’ में शृंगार रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास का सुंदर प्रयोग मिलता है।

राष्ट्रीय चेतना वाले प्रगतिवादी मननशील कवियों में दिनकर का अग्रणी स्थान है।

1.3.3 बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ (1897-1960)

बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ का जन्म ग्वालियर के भवाना गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा ग्यारह वर्ष की आयु में आरंभ हुई। सन् 1917 में हाईस्कूल पास करने के बाद ये कानपुर आ गए, जहाँ गणेश शंकर विद्यार्थी ने इन्हें कॉलेज में प्रविष्ट करवा दिया। सन् 1920 में ये गांधी जी के आह्वान पर कॉलेज छोड़कर सक्रिय राजनीति में आ गए। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में इन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् ये पहले लोकसभा के और फिर राज्यसभा के सदस्य रहे। कुछ समय बाद इन्होंने ‘प्रभा’ और ‘प्रताप’ पत्रिकाओं का संपादन किया। सन् 1918 से ही इनकी रचनाएँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। साहित्यिक गतिविधियों में भी इन्हें गणेश शंकर ‘विद्यार्थी’ का सहयोग मिला।

‘कुंकुम’ इनका पहला कविता संग्रह था जिसमें इनकी राष्ट्रीय भावनाओं की तथा प्रेमपरक कविताएँ संग्रहित हैं। 1934 में इन्होंने ‘उर्मिला’ काव्य लिखा, जिसका प्रकाशन 1957 में हुआ। इस काव्य में उर्मिला के चरित्र के माध्यम से इन्होंने भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल रूप को चित्रित किया। इनकी कहानी को उसी समय के वातावरण अर्थात् भारतीय संस्कृति और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के संघर्ष से जोड़ने के लिए ‘नवीन’ जी ने कुछ प्रसंगों को अत्यधिक कौशल से संयोजित किया। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—‘अपलक’, ‘रश्मिरेखा’, ‘क्वासि’, ‘हम विषपायी जनम के’ और ‘विनोबा स्तवन’।

भावों की तीखी अभिव्यक्ति जो पाठक को तिलमिलाकर रख दे, यथार्थवादी कवियों की विशेषता है। ‘जूठे पत्ते’ नवीन जी की यथार्थ के स्तर पर एक जोरदार रचना है जो भावों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से प्रगतिवाद के निकट जा पहुँचती है—

लपक चाटते जूठे पत्ते, जिस दिन मैंने देखा नर को,
 उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनियाभर को॥

भाषा और भावों पर इनका अच्छा अधिकार था। ये क्रांति के अग्रदूत की तरह रौद्र तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के भावों को अभिव्यक्ति देते हैं। देखिए—

प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे।
अनाचार के अंबारों से अपना ज्वलित पत्नीता धर दे।।

स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय होने के कारण उनके काव्य पर राष्ट्रीयता का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। विशेषतः स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व की सभी रचनाएँ राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में लिखी गई हैं। नवीन जी के काव्य में राजनीतिक आंदोलनों के अतिरिक्त अन्य सामाजिक और आर्थिक आंदोलनों को भी स्थान मिला। रामचंद्र शुक्ल ने नवीन की गणना उन कवियों में की है जिनकी कविताओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के आंदोलन प्रतिध्वनित हुए।

काव्य प्रयोजन पर विचार करते हुए नवीन ने मानव जीवन के आदर्शों की अभिव्यक्ति की चर्चा की। इन्होंने कविता को व्यवस्था-परिवर्तन का साधन मानते हुए राष्ट्रीय आंदोलनों के तूफानी दिनों में विप्लव गान किया था—

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए।
बरसे आग, जलधि जल जाए, भस्मसात भूधर हो जाए।।

नवीन जी की भाषा शुद्ध प्रांजल साहित्यिक खड़ी बोली है। इसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ देशज और अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग मिलता है। यथास्थान मुहावरों का सटीक प्रयोग है।

इनका अधिकांश काव्य मुक्तक काव्य है और इसमें ओज गुण की प्रधानता है। इनकी कविता वीर रस प्रधान है। अलंकारों में अनुप्रास, उपमा और रूपक का प्रयोग अधिक हुआ है।

1.3.4 सोहनलाल द्विवेदी (1906-1988)

सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के सर्वप्रमुख गांधीवादी कवि हैं। इन्होंने गांधीवादी विचारधारा के संबंध में जितना साहित्य सृजन किया उतना किसी अन्य कवि ने नहीं किया। इनके काव्य में गांधीवादी स्वर तीव्र है।

सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1905 में बिंदकी जिला फतेहपुर में हुआ था। इनकी शिक्षा मालवीय जी की छत्रछाया में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई। इन्होंने एम.ए., एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की। साथ ही इन्हें संस्कृत भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। इन्होंने अपना लेखन कार्य सन् 1921 में आरंभ कर दिया था। इन्होंने सन् 1928 से 1942 तक दैनिक राष्ट्रीय पत्र 'अधिकार' का संपादन किया। 1941 में आपकी प्रथम रचना 'भैरवी' प्रकाशित हुई।

इन्होंने बड़ी संख्या में बाल साहित्य का भी सृजन किया जिनमें 'बालभारती', 'शिशुभारती', 'हँसो-हँसाओ', 'नेहरू चाचा', 'दूर्वा' एवं 'मोहक' प्रमुख हैं।

'चेतना' के प्रकाशन से पूर्व 1944 में इनका काव्य संग्रह 'युगाधार' प्रकाशित हुआ जिसमें गांधी जी से संबंधित अनेक रचनाएँ हैं। गांधीवादी विचारधारा के संदर्भ में 'चेतना' और 'युगाधार' संकलनों का

बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इनके अनेक कविता संग्रह और खंडकाव्य गांधी जी की विचारधारा के संबंध में प्रकाशित हुए हैं—‘कुणाल’, ‘चित्रा’, ‘युगाधार’, ‘वासवदत्ता’, ‘किसान’ आदि।

‘बापू’, ‘गांधी’, ‘सेवाग्राम की आत्मकथा’, ‘सेवाग्राम’, ‘गीत’, भ्रमण, ‘उगता राष्ट्र’, ‘मजदूर’, ‘सत्याग्रही’, ‘जागरण’, ‘कणिका’, ‘बेतवा का सत्याग्रह’ ‘अनुरोध’, ‘राजबंदी’, ‘राष्ट्रकवि’ आदि सभी रचनाओं में गांधीवाद छाया हुआ है। इनमें किसी न किसी रूप से गांधी और उसके सिद्धांतों की स्थापना की गई है।

इनकी रचनाओं की भाषा सरल, सरस, मधुर प्रवाहमयी सुसंस्कृत खड़ी बोली है। इनके अधिकांश काव्य संग्रह मुक्तकों और गीतों के रूप में हैं। इनके अतिरिक्त ‘कुणाल’ जैसे प्रबंध काव्य भी हैं। इन्होंने अनुप्रास, उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति अलंकारों का अच्छा प्रयोग किया है। वस्तुतः इनका ध्यान छंदों, अलंकारों के बजाय गांधी और गांधीवाद के चित्रण की ओर अधिक रहा। इनके काव्य में मुख्य रूप से वीर रस और ओज गुण की प्रधानता है।

पाठ-10 : छायावादोत्तर युग

1.0	छायावादोत्तर युग	156
1.1	प्रगतिवाद	156
1.2	प्रयोगवाद	157
1.3	नई कविता	158
1.4	प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ	158
1.4.1	अज्ञेय	158
1.4.2	नागार्जुन	160
1.4.3	गजानन माधव मुक्तिबोध	161
1.4.4	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	162
1.4.5	रघुवीर सहाय	164
1.4.6	केदारनाथ सिंह	164
1.4.7	त्रिलोचन	165
1.4.8	भवानी प्रसाद मिश्र	166
1.4.9	केदारनाथ अग्रवाल	167

1.0 छायावादोत्तर युग

द्विवेदी युग की बौद्धिकता और उपदेशात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में छायावाद का उदय हुआ जिसका साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा। फलतः कवियों का ध्यान स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाने लगा। छायावादी कवियों ने काव्य में सांस्कृतिक सौंदर्य, विश्व मानवता, युग चेतना, वैयक्तिकता, प्रकृति चित्रण, स्वाभाविकता और साहित्यिकता का समर्थन किया। अनेक छायावादी कवियों का झुकाव प्रगतिवाद की ओर हुआ। 'पंत' छायावादी होने के बावजूद प्रगतिवाद की ओर झुके और उन्होंने 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' की रचना की। 'पंत' का प्रगतिवादी आंदोलन में सक्रिय रूप से प्रवेश करना महत्वपूर्ण घटना थी।

छायावादी, रहस्यवादी विचारधारा के प्रभाव से साहित्य जीवन से दूर होता गया। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में जिस साहित्य धारा का उद्भव हुआ, उसे 'प्रगतिवाद' कहा गया जो छायावाद की समाप्ति पर सन् 1936 के आसपास सामाजिक चेतना को लेकर निर्मित होना आरंभ हुआ। द्विवेदी युग के स्थूल की प्रतिक्रिया यदि छायावाद था तो छायावाद के सूक्ष्म की प्रतिक्रिया ने प्रगतिवाद को जन्म दिया। वास्तव में प्रगतिवादी काव्य शोषण का विरोध करता है और शोषित को ताकत देता है। वह मेहनतकशों में सौंदर्य देखता है।

1.1 प्रगतिवाद (1936-1943)

प्रगतिवाद का आधार सामाजिक और राजनीतिक जागृति था। हिंदी कविता में सामाजिक चेतना के दो रूप दिखाई देते हैं। एक में मध्यमवर्गीय दुखों से भरे मानव और प्रकृति का चित्रण है तो दूसरे में केवल उत्साह और उद्बोधन है।

प्रगतिवादी साहित्य समाज के मौलिक रूप के लिए विकासशील, विषमता विरोधी, भावनाओं को व्यक्त करता है। यह मानव मात्र को समान रूप से देखता है। प्रगतिवादी साहित्य का प्रमुख उद्देश्य साहित्य को जीवन के निकट लाना है। प्रगतिवाद का जीवन दर्शन मार्क्स की आर्थिक व्यवस्था पर आधारित है इसलिए यह राजनीति से अलग नहीं है। प्रगतिवादी कविता के विषय शोषित, मजदूर और किसान आदि हैं। प्रगतिवादी काव्य शोषण का विरोध करता है। वास्तव में प्रगतिवादी कवि शोषित में संगठन शक्ति देखता है—

मैंने उसको जब-जब देखा - लोहा देखा

लोहा जैसा तपते देखा, गलते देखा, ढलते देखा

मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा।

- केदारनाथ अग्रवाल

प्रगतिवाद का मूल उद्देश्य जनकल्याण की कामना है। भाषा और शैली की दृष्टि से प्रगतिवाद ने नवीन आदर्श स्थापित किया। वह कला को जनहित की दृष्टि से देखता है। निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में यह बात देखी जा सकती है—

“वह तोड़ती पत्थर

देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर।”

प्रगतिवादी कवियों में शिवमंगल सिंह 'सुमन', नरेंद्र शर्मा, भवानी प्रसाद मिश्र, रांगेय राघव आदि ने सामयिक घटनाओं को स्थान देकर अपनी जागरूकता का परिचय दिया है। प्रगतिवाद वास्तव में मार्क्सवाद या साम्यवाद का साहित्यिक संस्करण है। इस धारा के प्रमुख कवि हैं—निराला, पंत,

रामविलास शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, शिवमंगल सिंह 'सुमन', गजानन माधव मुक्तिबोध आदि।

1.2 प्रयोगवाद (1943-1953)

छायावाद और प्रगतिवाद—दोनों के विरोध में प्रयोगवाद अस्तित्व में आया या खड़ा हुआ। प्रयोग का विरोध छायावादी रूमनियत से था और प्रगतिवाद की कला संबंधी उपेक्षा से था। प्रयोगवाद ने कविता में बौद्धिकता और रूप संबंधी नये प्रयोगों पर बल दिया।

प्रयोग तो सभी युगों में होते रहे हैं, परंतु 'प्रयोगवाद' नाम उन कवियों के लिए रूढ़ हो गया जो नए बोधों, संवेदनाओं और उन्हें संप्रेषित करने वाले शिल्प में पाए जाने वाले चमत्कारों को लेकर शुरु में 'तार सप्तक' के माध्यम से सन् 1943 में साहित्य में दिखाई दिए। अज्ञेय जी ने दूसरा सप्तक की भूमिका में कवि-कर्म की व्याख्या करते हुए 'प्रयोग' शब्द को स्पष्ट किया। उनकी दृष्टि में 'प्रयोग' साध्य नहीं, साधन है और दोहरा साधन है। एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे वह उसे प्रेषण करने की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का साधन है। 'अज्ञेय' जी प्रयोगवाद के प्रवर्तक हैं। इसी 'सप्तक' के संपादकीय वक्तव्य में प्रथम बार 'प्रयोग' और 'प्रयोगशीलता' शब्दों का व्यवहार हुआ। इन्हीं शब्दों के कारण कवियों ने इन कविताओं को 'प्रयोगवादी' कविता कहा। तार सप्तक में सात कवि थे—गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नेमिचंद जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर 'माचवे', गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

दूसरा 'सप्तक' का प्रकाशन सन् 1951 में हुआ जिसमें प्रयोग शब्द को पर्याप्त महत्व दिया गया। तभी 'प्रयोगवाद' को साहित्य की एक धारा के रूप में स्वीकार किया गया। दूसरा सप्तक में भी सात कवि थे—भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंत माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय और धर्मवीर 'भारती'। इस प्रयोग को नई कविता भी कहा गया।

प्रयोगवादी कवियों ने अपने मन की कुंठा और अपनी हीन भावना का कथन विविध प्रतीकों का सहारा लेकर किया है।

प्रयोगवादी कवि की दृष्टि वस्तुपरक है। वह यथार्थ के प्रति सजग है। इसलिए वह किसी निकृष्ट और निम्नकोटि की वस्तु को भी अपनी कविता में जगह देता है। वह नवीन उपमानों की खोज में रहता है।

प्रयोगवादी कविता का प्रभाव बहुत व्यापक स्तर पर पड़ा है। कवि अपने भावों को व्यक्त करने के लिए अपने ढंग से विराम चिह्नों का प्रयोग करते हैं। इन्होंने बहुत से अतुकांत छंदों की रचना की। इनमें भावों को स्पष्ट करने के लिए शब्दों को तोड़कर प्रयोग करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

हिंदी काव्य के विकास में प्रयोगवाद का भी अपना एक स्थान है। प्रयोगवादी कवियों की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। 'अज्ञेय' में नए प्रतीक, गिरिजा कुमार माथुर में ध्वनिसाम्य, गजानन माधव मुक्तिबोध में वैयक्तिक भावभूमि, प्रभाकर 'माचवे' का केंद्रीय विलास और नेमिचंद जैन तथा शमशेर बहादुर सिंह का साम्यवादी रूप निजी विशेषताएँ हैं। इन कवियों को तार सप्तक के संपादक 'अज्ञेय' ने 'राहों के अन्वेषी' कहा है।

1.3 नई कविता

प्रयोगवाद की कोख से छठे दशक में नई कविता का जन्म हुआ। नई कविता ने जीवन के प्रत्येक क्षण को सत्य माना और प्रत्येक क्षण को जीने की अभिलाषा के कारण नई कविता जीवन-सत्यों को गहराई से पकड़ती है। इस क्षणवाद में सामान्य लगने वाले प्रसंग भी नई कविता में विशेष अर्थों के साथ उद्घाटित होते हैं। पश्चिम के जीवन दर्शन का, विशेष रूप से अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव भी इस कविता को अपनी पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से अलग करता है। परंपरागत मूल्यों को चुनौती देती नई कविता नये मूल्यों की खोज करती है।

‘नई कविता’ नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गई उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है, जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी अपने में विशिष्ट है। कथ्य की व्यापकता, जीवन के प्रति आस्था और सृजन की उन्मुक्तता नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है।

नई कविता के रचयिताओं में से अधिकांश कवि प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के खेमे में रह चुके हैं। वे अपनी सीमाओं से उन्मुक्त होना चाहते थे। नई कविता ने उन्हें वह उन्मुक्तता प्रदान की।

नई कविता में क्षणों की अनुभूतियों को लेकर बहुत ही मर्मस्पर्शी और विचार-प्रेरक कविताएँ लिखी गई हैं। नई कविता में शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन दोनों को लेकर लिखने वाले कवि हैं। अज्ञेय का परिवेश व्यापक है, उन्होंने दोनों परिवेशों पर समान रूप से लिखा है। नई कविता के प्रमुख कवि हैं—शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, रघुवीर सहाय, भवानी प्रसाद मिश्र, केदारनाथ सिंह, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि।

1.4 प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

1.4.1 अज्ञेय (1911-1987)

इनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ है। ‘अज्ञेय’ का जन्म 7 मार्च, 1911 में देवरिया जिले के कसया गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा बी-एस-सी. तक हुई। बाद में इन्होंने एम.ए. अंग्रेजी में दाखिला लिया और एक साल बाद पढ़ाई छोड़ दी। हिंदी साहित्य का अध्ययन घर पर ही किया। इसके अतिरिक्त संस्कृत का भी अध्ययन किया। क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़कर ये जेल भी गए। 1943 से 1946 तक इन्होंने सेना में भी नौकरी की। अज्ञेय जी लंबे समय तक ‘दिनमान’ के संपादक रहे। इन्होंने सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, नया प्रतीक, रूपांबरा और नवभारत टाइम्स का संपादन किया। इसके अतिरिक्त इनका उल्लेखनीय कार्य है सप्तकों का संपादन। ये कई बार सांस्कृतिक प्रयोजनों से अमरीका गए। ये कुछ दिन तक जोधपुर विश्वविद्यालय में भी कार्यरत रहे। अज्ञेय प्रसिद्ध लेखक, समीक्षक, चिंतक एवं विचारक थे।

प्रयोगवाद और नई कविता के संदर्भ में ‘अज्ञेय’ की सक्रिय भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। ‘अज्ञेय’ की कविताओं में अधिकांश स्थलों पर भावात्मक पक्ष की अपेक्षा विचारात्मक पक्ष अधिक प्रबल रहा है। इसलिए जहाँ भी उनकी कविताओं के बारे में चर्चा होती है वहाँ उनके बुद्धिवाद की चर्चा भी अवश्य होती है।

‘सप्तकों’ के कवियों में सर्वाधिक कविता-संग्रह ‘अज्ञेय’ के ही प्रकाशित हुए हैं। ‘तार सप्तक’ (1943) के बाद ‘इत्यलम’ (1946), ‘हरी घास पर क्षण भर’ (1949), ‘दूसरा सप्तक’ (1952), ‘तीसरा सप्तक’ (1959), ‘बावरा अहेरी’ (1959), ‘इंद्रधनु रौंदे हुए ये’ (1956), ‘अरी ओ करुणा प्रभामय’ (1959), ‘आँगन के पार द्वार’ (1961), ‘कितनी नावों में कितनी बार’ (1967), ‘सागर मुद्रा’, ‘क्योंकि मैं उसे जानता हूँ’, ‘पूर्वा’ तथा ‘पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ’ (1974) आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हुए।

अज्ञेय जी का व्यंग्य बहुत ही तीखा और पैना है—

साँप
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी
तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे ?)
तब कैसे सीखा डसना
विष कहाँ से पाया ?

अज्ञेय की कविता में अकेलेपन का वैभव है। अज्ञेय मूलतः प्रेम और प्रकृति के कवि हैं। उन्होंने शब्दों को सटीक अर्थ देने का प्रयास किया है। उनकी कविता ‘नदी के द्वीप’ की छटा देखिए—

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत-कूल
सब गोलाइयाँ, उसकी गढ़ी हैं।
माँ है वह ! है, इसी से हम बने हैं।
किंतु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।

‘हरी घास पर क्षण भर’ अज्ञेय के काव्य में आई परिपक्वता का व्यंजक है। जीवन की यथार्थता की अभिव्यक्ति इसी संग्रह से हुई है। यद्यपि कुछ रचनाएँ हल्की-फुल्की भी हैं किंतु अधिकांश शिल्प की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं, जैसे—

“दुख सबको माँजता है
और—
चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने किंतु—
जिनको माँजता है
उन्हें वह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें।।”

अज्ञेय की मान्यता है कि काव्यभाषा बोलचाल की भाषा के निकट होनी चाहिए। अपनी कविताओं में अज्ञेय ने तत्सम, ब्रजभाषा, अंग्रेजी, उर्दू आदि के शब्दों का नए अर्थों में भी प्रयोग किया है—

“देह-वल्ली
एक पिंजरा है ! पर मन इसी में से उपजा
जिसकी उन्नत शक्ति आत्मा है।”

अज्ञेय का काव्य बिंब योजना की दृष्टि से काफी समृद्ध है। इसमें अनेक प्रकार के बिंबों का सफल प्रयोग दिखाई देता है, जैसे—

“हम निहारते रूप
काँच के पीछे हाँफ रही है मछली
रूप तृषा की
(और काँच के पीछे) है जिजीविषा।”

‘कितनी नावों में कितनी बार’ काव्य संग्रह पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1.4.2 नागार्जुन (1910-1998)

नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। इनका जन्म दरभंगा जिले के तरौनी गाँव में हुआ था। इन्हें बचपन में नियमित शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। बाद में अपने प्रयास से हिंदी और संस्कृत का अध्ययन किया। ये मैथिली और हिंदी के यशस्वी कवि हैं और 1930 से बराबर साहित्य रचना में संलग्न रहे। पहले ये ‘यात्री’ नाम से मैथिली और हिंदी में कविताएँ लिखते थे। नागार्जुन सन् 1936 में श्रीलंका गए और उन्होंने वहाँ पर बौद्ध धर्म में दीक्षा ले ली। उसके बाद इन्होंने अपना नाम नागार्जुन रख लिया। इन्होंने श्रीलंका, तिब्बत, म्याँमार (तत्कालीन बर्मा) की दो बार यात्राएँ कीं। ये घुमंतू प्रकृति के व्यक्ति थे। इनका विवाह सन् 1941 में हुआ और ये सफल गृहस्थ होने के साथ-साथ साहित्य सृजन में भी लगे रहे। इनके जीवन को दो व्यक्तियों ने प्रभावित किया। राजनीतिक जीवन को महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने और साहित्यिक जीवन को कविवर ‘निराला’ ने।

नागार्जुन आधुनिक युग की नवीन चेतना के कवि हैं। इन्होंने एक ओर तो वर्ग संघर्ष से पीड़ित वर्ग के प्रति गहन संवेदना व्यक्त की तथा अभावग्रस्त निम्नवर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाई और दूसरी ओर उच्च वर्ग द्वारा किए जा रहे शोषण का जमकर विरोध किया और सर्वहारा वर्ग को अपना समर्थन दिया।

राहुल जी के प्रभाव के कारण राजनीतिक दृष्टि से ये पूर्णतया साम्यवादी थे और साहित्यिक दृष्टि से ये काव्य की उस जनवादी विचारधारा को मानते थे, जिसमें यथार्थ के धरातल पर मानव जीवन को चित्रित किया गया है। इनके काव्य में भी ‘निराला’ के समान आक्रोश, क्षोभ, अकखड़पन, विद्रोह भावना और तीखा व्यंग्य दिखाई देता है। नागार्जुन ने दलित-पीड़ित जनता के कष्टों को अपनी कविता में स्वर प्रदान किया। नागार्जुन साहित्य और राजनीति में समान रूप से रुचि रखने वाले साहित्यकार थे।

इनकी कविताओं के संकलन—‘युगधारा’, ‘प्यासी पथराई आँखें’, ‘सतरंगी पंखों वाली’, ‘तुमने कहा था’, ‘तालाब की मछलियाँ’, ‘हजार-हजार बाहों वाली’, ‘पुरानी जूतियों का कोरस’, ‘आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने’, ‘रत्नगर्भा’, ‘ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या’, ‘भस्मांकुर’ (महाकाव्य) आदि हैं।

नागार्जुन जटिल से जटिल भाव को भी सहज रूप से अपनी कविता द्वारा प्रस्तुत करते हैं। किसान जीवन की पीड़ा को नागार्जुन ने अपनी कविताओं का कथ्य बनाया। मूलतः वह धरती, जनता और श्रम के रचनाकार हैं। सामाजिक बोध उनकी कविता का प्रधान स्वर है—

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

नागार्जुन ने जनजीवन के सभी पक्षों पर दृष्टि डालकर उनका उपयुक्त ढंग से चित्रण किया है। अपनी कविताओं में इन्होंने देश में फैले अन्याय, भ्रष्टाचार, शोषण आदि का पर्दाफाश करके भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियों की अच्छी खबर ली और शोषित एवं दलित वर्ग को क्रांति के लिए तैयार किया। इस दृष्टि से कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों ही उच्च कोटि की हैं।

1.4.3 गजानन माधव मुक्तिबोध (1917-1964)

मुक्तिबोध का जन्म ग्वालियर संभाग के श्योपुर कस्बे में हुआ था, जहाँ एक शताब्दी पूर्व उनके पूर्वज आ बसे थे। इनके पिता पुलिस में सब-इंस्पेक्टर थे। उनके बार-बार स्थानांतरण के कारण इनकी शिक्षा ढंग से नहीं हो सकी। 1938 में बी.ए.पास करने के बाद ये माधव कॉलेज, उज्जैन में शिक्षक हो गए। बाद में इन्होंने बनारस में 'हंस', जबलपुर में 'दैनिक जयहिंद' और द्वैमासिक पत्रिका 'समता' का संपादन किया। कुछ समय ये नागपुर में आकाशवाणी के समाचार विभाग में संपादक भी रहे। नागपुर में इन्होंने 'नया खून' साप्ताहिक का संपादन भी किया। 1954 में एम.ए. करने के बाद ये राजनांद गाँव के दिग्विजय महाविद्यालय में प्राध्यापक हो गए। 1964 में लंबी बीमारी के बाद इनका निधन हो गया।

यद्यपि मुक्तिबोध ने 'कामायनी : एक पुनर्विचार', 'एक साहित्यिक की डायरी', 'नए साहित्य का सौंदर्य शास्त्र' आदि से गद्य साहित्य के भंडार को समृद्ध किया तथापि उनका कविरूप उनके गद्यकार की अपेक्षा कहीं अधिक जीवंत और सशक्त रूप से प्रस्फुटित हुआ। इस बीच राजनांद गाँव में उन्होंने 'ब्रह्मराक्षस', 'ओरांग-ऊटांग' तथा 'अंधेरे में' जैसी सशक्त रचनाएँ लिखीं।

यह सच है कि प्रगतिवाद ने मुक्तिबोध को यथार्थवादी दृष्टि दी लेकिन इसके साथ ही समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, पूंजीवादी व्यापार विनिमय में फैला आर्थिक अपराधों का सिलसिला, जो सभी वर्गों के मनुष्यों में व्यापक है, मुक्तिबोध की दृष्टि से बच नहीं सका। जीवन के इस यथार्थ का अनुभव कर वे कटु सत्य को प्रकट करने को बाध्य हो जाते हैं। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कविता में उन्होंने लिखा—

“कोलतारी सड़क के बीचोंबीच खड़ी हुई
गांधी की मूर्ति पर
बैठे हुए घुग्घू ने
गाना शुरू किया,
हिचकी ताल पर
साँसों ने तब
मर जाना
शुरू किया,
टेलीफोन-खंबों पर थमे हुए तारों ने

सट्टे के ट्रंकॉल सुरों में
थराना और झनझनाना शुरू किया।”

(यहाँ सट्टा शब्द पूंजीवाद की ही देन है।)

वास्तव में मुक्तिबोध को कविरूप में ख्याति ‘तार सप्तक’ से मिली।

‘तार सप्तक’ में मुक्तिबोध की सत्रह कविताएँ संकलित हैं जिनके विषय में कवि कहता है—“मैं कलाकार की स्थानांतरण प्रवृत्ति (माइग्रेशन इंस्टिंकट) पर बहुत जोर देता हूँ। आज यदि वैविध्यमय, उलझन भरे, रंग-बिरंगे जीवन को देखना है तो अपने वैयक्तिक क्षेत्र से एक बार बाहर आना ही होगा।”

मुक्तिबोध की तार सप्तक में संकलित कविताओं में ‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’ अपेक्षाकृत लंबी कविता है। दुर्भाग्यवश इस संकलन का प्रकाशन उनकी मृत्यु के बाद श्रीकांत वर्मा ने किया। इसमें अट्ठाइस कविताएँ हैं। इनमें कवि ने लंबे रूपकों के सहारे अपनी बात कहने का प्रयास किया है। अतः, इसे ‘रूपक प्रधान कथात्मक काव्य’ कह सकते हैं।

मुक्तिबोध की कविताओं पर दुरुहता का आरोप लगाया जाता है। जो कुछ हद तक सही भी है। यों फैंटेसी भी उनके काव्य को जटिल बनाती है। फैंटेसी को उन्होंने ‘अनुभव की कन्या’ कहा है।

मुक्तिबोध के काव्य की विशेषता अंतर्द्वंद्व है। इसी द्वंद्व में बेचैन वे अपनी अस्मिता की तलाश भी करते रहे हैं। इसका उदाहरण निम्नलिखित पंक्तियों में देखिए—

“जितना ही तीव्र द्वंद्व क्रियाओं, घटनाओं का
बाहरी दुनिया में,
उतनी ही तेजी से भीतरी दुनिया में,
चलता है द्वंद्व कि
फिक्र से फिक्र लगी हुई है।
आज उस पागल ने मेरी चैन भुला दी,
मेरी नींद गँवा दी।”

यह सच है कि मुक्तिबोध ने अपनी फैंटेसी में चाहे वह ‘ब्रह्म राक्षस’ हो, ‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’ हो या ‘अंधेरे में’ हो, अनेक भद्दे और बदरंग प्रतीक दिए हैं। एक बिंब में ब्रह्म राक्षस कुएँ में पड़ा है, तो कहीं रीढ़ की हड्डी मरे हुए साँप तक की-सी लुचलुची है। उनकी कविता की अंतर्वस्तु है—यंत्रणा, संत्रास, आक्रोश, विद्रोह, भूख, पीड़ा, मृत्यु, दरिद्रता आदि।

अन्य प्रयोगवादी कवियों के समान मुक्तिबोध ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए शब्दों के चयन में अनूठी क्षमता प्रदर्शित करते हुए तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, मराठी आदि सभी प्रकार के शब्दों का खुलकर प्रयोग किया। इनकी भाषा कहीं संस्कृतनिष्ठ है, तो कहीं अरबी-फारसी-उर्दू से भरपूर है।

1.4.4 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (1927-1983)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ था। इनका बचपन कस्बे जैसे छोटे से शहर के आस-पास के खेतों, खलिहानों और गाँवों के बीच बीता। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बस्ती के स्कूल में और उच्च शिक्षा बनारस (वाराणसी) और इलाहाबाद में हुई। इन्होंने 1949 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। इसके पश्चात् ये कुछ समय स्कूल में अध्यापक रहे, फिर पाँच साल क्लर्की की। ये

दिल्ली के आकाशवाणी केंद्र के समाचार विभाग में रहे और फिर आकाशवाणी के कुछ केंद्रों में सहायक प्रोड्यूसर के रूप में भी काम किया। बाद में ये साप्ताहिक 'दिनमान' और 'पराग' के भी संपादक हो गए।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्व में व्यंग्य विनोद की प्रधानता रही है। उदाहरणार्थ—वे कहते हैं कि “मेरा साहित्य की ओर झुकाव शायद कुसंग के कारण अधिक है।”

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने कविताओं के साथ कहानियाँ और उपन्यास भी लिखे। इनके प्रमुख कविता संग्रह हैं—‘काठ की घंटियाँ’, ‘बाँस का पुल’, ‘एक सूनी नाव’ और ‘गर्म हवाएँ’। इन्हें ‘खूंटियों पर टंगे हुए लोग’ पर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। ‘कुआनो नदी’, ‘जंगल का दर्द’ आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त तृतीय सप्तक में ‘सूखे पीले पत्तों ने कहा’, ‘चुपाई मारो दुलहिन’ आदि अनेक कविताएँ प्रकाशित हुईं।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने जीवन भर विकराल रूप धारण कर परेशान करते रहे दुखों और विडंबनाओं का सामना साहसपूर्वक किया। इनकी रचनाओं में अन्याय-अत्याचार और सामाजिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया गया है। जैसे—

“जब सब बोलते थे
वह चुप रहता था
जब सब चलते थे
वह पीछे हो जाता था
जब सब खाने पर टूटते थे
वह अलग बैठा हूँगता रहता था
जब सब निढाल हो सोते थे
वह शून्य में टकटकी लगाए रहता था
लेकिन जब गोली चली
तब सबसे पहले
वही मारा गया।” (पिछड़ा आदमी)

सर्वेश्वर तृतीय सप्तक के कवि हैं। उनके काव्य लेखन का काल प्रयोगवादी न होकर ‘नई कविता’ की वकालत का काल था। वस्तुतः प्रयोगवाद और नई कविता दो भिन्न काव्य-आंदोलन न होकर छायावादोत्तर काव्य के प्रारंभिक और परवर्ती रूप हैं। इसलिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को दोनों काव्य धाराओं का कवि कहा जा सकता है। अपने समकालीन कवियों के समान सर्वेश्वर की रुचि भी नए प्रयोगों की ओर रही। इन्होंने शब्द, प्रतीक, बिंब और उपमान योजना के सभी क्षेत्रों में नए प्रयोग किए।

सर्वेश्वर ने काव्य भाषा को जनभाषा के निकट लाने का कार्य किया जिसकी वकालत ‘अज्ञेय’, ‘माथुर’ आदि कवि भी करते रहे। कवि ने छंदों के बंधन को यहाँ तक अस्वीकार किया कि कहीं-कहीं इनकी कविता गद्य-सी लगती है। सर्वेश्वर ने प्रकृति चित्रण में बिंबों, प्रतीकों और उपमानों का प्रयोग किया जैसे—

“आकाश का साफा बाँधकर
सूरज की चिलम खींचता
बैठा है पहाड़
घुटनों पर पड़ी है नदी चादर-सी।”

छायावाद के बाद नई कविता की पहचान कराने वाले कवियों में उनका विशेष योगदान है। अपने चुभते हुए सटीक व्यंग्यों के लिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को सदैव याद किया जाएगा।

1.4.5 रघुवीर सहाय (1929-1990)

रघुवीर सहाय का जन्म लखनऊ में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. करके उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। कुछ दिनों तक वे 'प्रतीक' मासिक के सहायक संपादक रहे। उसके बाद उन्होंने आकाशवाणी के हिंदी समाचार विभाग में कार्य किया। लगभग एक वर्ष तक हैदराबाद से प्रकाशित 'कल्पना' के संपादक भी रहे। तदनंतर दिनमान का संपादन करते रहे। इसके बाद वे स्वतंत्र लेखन करते रहे।

रघुवीर सहाय 'अज्ञेय' द्वारा संपादित दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि हैं। अपनी कविताओं में वे रोजमर्रा के प्रसंगों को उठाकर अपनी विशिष्ट काव्य शैली में उन्हें प्रभावशाली एवं प्रासंगिक बनाते हैं।

रघुवीर सहाय की पहली समर्थ कृति 'सीढ़ियों पर धूप में' हैं। अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—'आत्महत्या के विरुद्ध', 'हँसो हँसो जल्दी हँसो', और 'लोग भूल गए हैं'।

'लोग भूल गए हैं' कृति पर उन्हें 1984 ई. का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

रघुवीर सहाय रोजमर्रा के प्रसंगों को उठाकर अपनी विशिष्ट काव्य शैली में उन्हें प्रभावशाली एवं प्रासंगिक बनाते हैं। अपनी सरल, सीधी और सपाट भाषा के लिए रघुवीर सहाय जाने जाते हैं।

चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता, यह दिया गया था, उसकी हत्या होगी।

* * *

निकल गली से तब हत्यारा
आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फव्वारा
कहा नहीं था उसने आखिर उसकी हत्या होगी ?

1.4.6 केदारनाथ सिंह (जन्म 1934)

केदारनाथ सिंह का जन्म बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. करने के बाद उन्होंने वहीं से आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। बाद में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा केंद्र में हिंदी के प्रोफेसर रहे।

केदारनाथ सिंह मूलतः मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने बिंब-विधान पर अधिक बल दिया है। तीसरा सप्तक में भी उनकी कविताएँ संकलित हैं। केदारनाथ सिंह की कविताओं में शोर-शराबा न होकर, विद्रोह का शांत और संयत स्वर सशक्त रूप में उभरता है। 'जमीन पक रही

हैं' संकलन में 'जमीन', 'रोटी', 'बैल' आदि उनकी इसी प्रकार की कविताएँ हैं। संवेदना और विचारबोध उनकी कविताओं में साथ-साथ चलते हैं। 'अकाल में सारस' कविता संग्रह पर उनको 1989 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अब तक प्रकाशित केदारनाथ सिंह के काव्य संग्रह इस प्रकार हैं—बिल्कुल अभी (1960), जमीन पक रही है (1980), यहाँ से देखो (1983), अकाल में सारस (1989), उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ (1995) और बाघ (1996) आदि।

केदारनाथ सिंह मूलतः लोक के कवि हैं। उनका मानना है कि जीवन के बिना प्रकृति और वस्तुएँ कुछ भी नहीं हैं। उन्होंने जीवन मूल्यों को नये मुहावरों में बाँधने की कोशिश की है—

मेरे बेटे
बिजली की तरह कभी मत गिरना
और कभी गिर भी पड़ो
तो दूब की तरह उठ पड़ने के लिए
हमेशा तैयार रहना
कभी अँधेरे में
अगर भूल जाना रास्ता।
तो ध्रुव तारे पर नहीं सिर्फ दूर से आने वाली
कुत्तों के भूकने की आवाज पर
भरोसा करना।

उनकी भाषा में सहजता, सरलता और लोकतत्त्व की प्रधानता है।

1.4.7 त्रिलोचन (1917-2007)

त्रिलोचन शास्त्री का वास्तविक नाम वासुदेव सिंह है। उनका जन्म सुल्तानपुर (उ.प्र.) जिले के चिरानी पट्टी गाँव में हुआ था। शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने अंग्रेजी विषय में एम.ए. पूर्वार्ध की परीक्षा पास की। त्रिलोचन ने स्वाध्याय द्वारा उर्दू, फारसी, अरबी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की जानकारी प्राप्त की। उनके कविता संग्रह 'ताप के ताए हुए दिन' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिल चुका है।

त्रिलोचन रचनात्मक लेखन के साथ ही कोश-संपादन एवं पत्रकारिता से जुड़े रहे। 'हंस' और 'कहानी' पत्रिकाओं के साथ ही वे 'आज', 'जनवार्ता', 'समाज', 'प्रदीप' और 'चित्रलेखा' आदि पत्रिकाओं के सहसंपादक रहे। कुछ वर्षों तक दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा निर्माणाधीन उर्दू-हिंदी कोश का संपादन भी किया। आप सागर विश्वविद्यालय में मुक्तिबोध पीठ के अतिथि प्रोफेसर के रूप में काम करते रहे।

त्रिलोचन की कविताओं में माटी की महक है। उन्होंने जनजीवन एवं मानवीय संबंधों का बहुत ही मार्मिक चित्रण अपनी कविताओं में किया है। उनकी कविता ठोस जमीन और ठेठ भाषा से जुड़ी हुई है। वस्तुतः त्रिलोचन एक प्रगतिशील कवि हैं, किंतु उनकी प्रगतिशीलता सतही स्तर पर दिखाई नहीं देती। उनकी कविता में अनेक शिल्पगत विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं।

त्रिलोचन की मुख्य रचनाएँ हैं—धरती, दिगंत, शब्द, ताप के ताए हुए दिन, उस जनपद का कवि हूँ, अरधान, तुम्हें सौंपता हूँ आदि।

त्रिलोचन ने ग्रामीण जनजीवन को आधार बनाकर अनेक महत्वपूर्ण कविताएँ लिखी हैं। ऐसी ही एक कविता है 'चंपा काले अक्षर नहीं चीहन्ती'—

चंपा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा
हाय राम, तुम पढ़-लिखकर कितने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को संग साथ रखूँगी
कलकत्ता में कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।

1.4.8 भवानी प्रसाद मिश्र (1913-1989)

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म इगरिया (सिवनी मालवा) जिला होशंगाबाद में हुआ था। इनकी शिक्षा होशंगाबाद और जबलपुर में हुई। कुछ समय तक ये बैतूल, मध्यप्रदेश में एक हाई स्कूल में प्रधानाध्यापक रहे। वहीं से भारत छोड़ो आंदोलन के एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार किए गए और नागपुर सेंट्रल जेल में बंद कर दिए गए। जेल में उस समय के बड़े नेताओं के संपर्क में आए। जेल से रिहा होने के बाद ये गांधी जी के सेवाग्राम आश्रम में महिला शिक्षा के प्रभारी रहे। वहीं से ये हैदराबाद से निकलने वाली 'कल्पना' के संपादक बनकर चले गए। इसी बीच इन्होंने चेन्नई और मुंबई में फिल्मों के लिए संवाद-लेखन का कार्य किया। इन पर ये आरोप भी लगा कि ये गीत बेच रहे हैं। इस पर इन्होंने ये व्यंग्यात्मक कविता लिखी—

जी हाँ हुजूर मैं गीत बेचता हूँ।
जी माल देखिए, दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं हैं, काम बताऊँगा,
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने
यह गीत, सख्त सिर-दर्द भुलाएगा
यह गीत पिया को पास बुलाएगा।

भवानी प्रसाद मिश्र हैदराबाद के बाद कुछ समय तक मुंबई में रहे और उसके बाद आजीवन दिल्ली में रहकर विभिन्न पदों को संभाला और 'गांधी मार्ग' का संपादन करते रहे। भवानी प्रसाद मिश्र की सर्वाधिक प्रसिद्ध कविता 'सतपुड़ा के घने जंगल' मानी जाती है। इसमें जंगल का संपूर्ण दृश्य रूपायित हुआ है—

झाड़ ऊँचे और नीचे
चुप खड़े हैं, आँख मीचे
घास चुप है, काँस चुप है
मूक शाल पलाश चुप है
बन सके तो धँसो इनमें
धँस न पाती हवा जिनमें,
सतपुड़ा के घने जंगल

नींद में डूबे हुए-से
ऊँघते अनमने जंगल।

‘बुनी हुई रस्सी’ पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनकी भाषा में सादगी है। वह सहज अर्थबोधक और प्रसाद गुण युक्त भी है। कवि भवानी भाई अपनी कविता को जब प्रस्तुत करते हैं तब ऐसा लगता है जैसे बातचीत कर रहे हों। यह उनके लोकजीवन से जुड़े रहने का सबसे बड़ा प्रमाण है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—अँधेरी कविताएँ, गांधी पंचशती, त्रिकाल संध्या, कालजयी (खंड काव्य) आदि।

1.4.9 केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000)

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म बांदा जिले की बबेरू तहसील के कमासिन गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। उसके बाद रायबरेली, इलाहाबाद और कानपुर में। इलाहाबाद के दिनों में ये निराला, बच्चन, शमशेर आदि के संपर्क में आए। पेशे से ये वकील थे और बाद में इन्हें सरकारी वकील बना दिया गया था। बांदा में केन नदी के किनारे घूमना, एकांत में बैठकर उसे बहते देखना, इन्हें बहुत अच्छा लगता था। इसलिए इन्हें केन का कवि भी कहा जाता है। इनकी पत्नी ही इनकी प्रेरणास्रोत हैं। प्रगतिशील कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है।

भारतीय किसान की गरीबी को इन्होंने अपनी कविता के केंद्र में रखा—

जब बाप मरा तब पाया
भूखे किसान के बेटे ने
घर का मलबा, टूटी खटिया
कुछ हाथ भूमि—वह भी परती
बनिया के रुपयों का कर्जा
जो नहीं चुकाने पर चुकता
दीमक, गोबर, मच्छर, माटा
ऐसे हजार सब सहवासी
बस यही नहीं जो भूख मिली
सौगुनी बाप से अधिक मिली।

केदारनाथ अग्रवाल श्रम में शक्ति देखने के कायल थे—

जब-जब मैंने उसको देखा, लोहा देखा
लोहा जैसे ढलते देखा, गोली जैसे चलते देखा।

केदारनाथ अग्रवाल की प्रमुख रचनाएँ हैं—‘फूल नहीं रंग बोलते हैं’, ‘नींद के बादल’, ‘युग की गंगा’, ‘पंख और पतवार’, ‘कहें केदार खरी-खरी’ आदि। अपनी पत्नी की याद में रचे गए इनके दो काव्य संग्रह, ‘हे मेरी तुम’, ‘जमुन जल तुम’ उल्लेखनीय हैं। ‘फूल नहीं रंग बोलते हैं’ पर इन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अन्य महत्वपूर्ण रचनाकार

आधुनिक हिंदी काव्य धारा के अन्य महत्वपूर्ण कवियों में शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, लक्ष्मीकांत वर्मा, धर्मवीर भारती, जगदीश गुप्त, श्रीकांत वर्मा, धूमिल, दुष्यंत कुमार, अशोक वाजपेयी,

चंद्रकांत देवताले, कुँवर नारायण, लीलाधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अरुण कमल, अष्टभुजा शुक्ल, एकांत श्रीवास्तव, अनामिका, कात्यायनी, सुनीता जैन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

विगत दो दशकों से हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श आदि के साहित्य पर हिंदी जगत में गंभीर चिंतन हो रहा है। कई दलित लेखकों ने अपने जीवन के भोगे हुए यथार्थ को अपनी आत्मकथाओं द्वारा अभिव्यक्त किया है। साथ ही इन्हीं दलित लेखकों ने कविताओं के माध्यम से भी अपने भोगे हुए यथार्थ को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। दलित साहित्य मानवीय संवेदना के धरातल पर एक नए रूप में उभरा है। ऐसे रचनाकारों में ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, श्योराज सिंह बेचैन, मोहनदास नैमिशराय, कालीचरण स्नेही, जयप्रकाश कर्दम, अनिता भारती, जयप्रकाश लीलवान, सुशीला टाकभोरे, दिलीप कठेरिया, सुदेश तनवर, रजतरानी मीनू आदि महत्वपूर्ण हैं।

पाठ-11 : काव्य सौंदर्य के तत्व

1.0	काव्य सौंदर्य के तत्व	170
1.1	अलंकार	170
	- अनुप्रास अलंकार	170
	- यमक अलंकार	171
	- उपमा अलंकार	171
	- रूपक अलंकार	172
	- उत्प्रेक्षा अलंकार	173
1.2	रस	173
	- रस के अवयव	174
	- शृंगार रस	175
	- वीर रस	176
	- हास्य रस	176
1.3	छंद	176
	- दोहा	176
	- सोरठा	177
	- चौपाई	177
1.4	शब्द शक्ति	178
	- अभिधा	179
	- लक्षणा	179
	- व्यंजना	179

1.0 काव्य सौंदर्य के तत्व

कविता को पढ़कर या सुनकर हमें सौंदर्य की अनुभूति होती है। इस अनुभूति से हमें आनंद मिलता है। पुराने आचार्यों ने सौंदर्य के इस अनुभव को आस्वाद कहा है। यह सौंदर्यानुभूति या आस्वाद ही काव्य साहित्य का सार है। इसमें भाव सौंदर्य, नाद सौंदर्य और विचार सौंदर्य सम्मिलित हैं। काव्य के सौंदर्य को बढ़ाने में रस, छंद, अलंकार, शब्द शक्तियाँ आदि तत्व अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत पाठ में हम काव्य-सौंदर्य के इन्हीं तत्वों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

1.1 अलंकार

जिस प्रकार किसी युवती को वस्त्रों और आभूषणों से सजा दिया जाए तो वह अधिक सुंदर लगने लगती है उसी प्रकार यदि भाषा को सुंदर शब्दों और अलंकारों से युक्त कर दिया जाए तो वह अधिक आकर्षक प्रतीत होती है। कहने का अभिप्राय यह है कि अलंकारों से काव्य की शोभा बढ़ जाती है। इस प्रकार काव्य को रुचिकर, सुंदर और प्रभावशाली बनाने के लिए शब्द या अर्थ के स्तर पर जो योजना की जाती है, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं :- (क) शब्दालंकार और (ख) अर्थालंकार।

जहाँ वर्ण और शब्द के कारण कथन में रमणीयता आए उसे शब्दालंकार और जहाँ अर्थ के कारण कविता में रमणीयता और पूर्णता आए उसे अर्थालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार के चार प्रमुख भेद हैं :-

1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष 4. वक्रोक्ति।

अर्थालंकारों की संख्या सौ से अधिक है, लेकिन प्रस्तुत पाठ में हम उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा इन तीन अलंकारों पर ही विचार करेंगे।

अनुप्रास अलंकार

इस अलंकार में समान व्यंजनों की आवृत्ति होती है। इससे कविता में सुंदरता और लय आ जाती है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के प्रकृति वर्णन की निम्नलिखित पंक्तियों को देखिए :-

‘तरनि तनूजा तट तमाल, तरुवर बहु छाए।’

उपर्युक्त पंक्ति में ‘त’ वर्ण की पाँच बार आवृत्ति हुई है, इसलिए यह अनुप्रास अलंकार का अच्छा उदाहरण है।

इसी प्रकार सुमित्रानंदन पंत की इन दो पंक्तियों को देखिए :-

मृदु मंद मंद मंथर, लघु तरणि हंसिनी-सी सुंदर,
तिर रही खोल पालों के पर।

इस कविता की पहली पंक्ति में मंद की आवृत्ति हुई है। वर्णों की आवृत्ति से कविता में माधुर्य, सुंदरता और लयात्मकता आ जाती है जो सुनने वालों को अच्छी लगती है।

अनुप्रास अलंकार के दो और उदाहरण देखिए—

(1) झाँक न झंका के झाँके में, झुककर खुले झरोखे से - (पंचवटी-मैथिलीशरण गुप्त)

(2) सास ससुर गुर सजन सुहाई, सुत सुंदर सीतल सुखदाई। - (रामचरितमानस-तुलसीदास)
यहाँ पहले उदाहरण में 'झ' और 'क' की और दूसरे उदाहरण में 'स' वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हुई है, अतएव यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

यमक अलंकार

यमक में एक ही शब्द की दो या अधिक बार आवृत्ति होती है और इन दोहराए जाने वाले शब्दों के अर्थ भी भिन्न-भिन्न होते हैं। यमक के प्रयोग से कविता में लयात्मकता, चमत्कार और सुंदरता आ जाती है। इसका उदाहरण देखिए :-

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या पाए बौराए जग, वा खाए बौराए॥

इस दोहे में 'कनक' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है और दोनों 'कनक' के अर्थ अलग-अलग हैं। पहले 'कनक' का अर्थ धतूरा है और दूसरे 'कनक' का अर्थ 'सोना' (धातु) है। धतूरा खाने से नशा होता है और सोने को पा लेने मात्र से मनुष्य में घमंड (अंकार) आ जाता है। यहाँ कवि ने सोने और धतूरे में तुलना के लिए एक ही शब्द का प्रयोग किया है, इसलिए यहाँ 'यमक' अलंकार है।

दूसरा उदाहरण देखिए :-

सारंग ले सारंग चली, सारंग पुग्यो आय
सारंग ले सारंग धर्यो सारंग सारंग माय।

इसमें सारंग शब्द के अर्थ हैं 1 घटा, 2 सुंदरी 3 वर्षा (मेघ) 4 वस्त्र 5 घड़ा, 6 सुंदरी, 7 सरोवर।
एक अन्य उदाहरण देखिए :-

तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।

यहाँ पहले 'बेर' का अर्थ बार (तीन बार) से है जब कि दूसरे का अर्थ बेर (फल) है।

ऐसे ही नीचे लिखे उदाहरण में :-

खग-कुल कुल कुल-सा बोल रहा। किसलय का अंचल डोल रहा।

पहले 'कुल' का अर्थ समूह है और दूसरे कुल कुल का अर्थ खगों (पक्षियों) के चहचहाने का स्वर है। अतएव यहाँ यमक अलंकार है।

उपमा अलंकार

जैसा कि पहले भी हम बता चुके हैं कि उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा ये अर्थालंकार हैं और ये सादृश्यमूलक हैं। सादृश्यमूलक अलंकारों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

1. सादृश्यमूलक अलंकारों में दो वस्तुओं में समानता बताई जाती है।
2. सादृश्यमूलक अलंकारों में चार तत्व होते हैं। ये तत्व हैं :-
(क) उपमेय : वह वस्तु या व्यक्ति जिसकी किसी दूसरी वस्तु अथवा व्यक्ति से तुलना की जाए।
(ख) उपमान : जिस वस्तु या व्यक्ति से तुलना की जाए।

- (ग) सामान्य धर्म : वह गुण जिसके कारण उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाए।
 (घ) वाचक शब्द : वह पद या शब्द जिसके द्वारा उपमेय और उपमान की समता प्रकट की जाए।

जिस पंक्ति में दो भिन्न पदार्थों अथवा व्यक्तियों में समान गुण के कारण समानता दिखाई जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है, जैसे—

पीपर पात सरिस मन डोला

अर्थात् पीपल के पत्ते के समान मन काँप रहा था। यहाँ 'मन' उपमेय, 'पीपर पात' उपमान 'डोला' सामान्य धर्म और 'सरिस' (के समान) वाचक शब्द है, अतएव यह उपमा अलंकार है।

निम्नलिखित पंक्तियों में उपमा का उदाहरण देखिए :—

राम लखन सीता सहित सोहत पर्ण निकेत
 जिमि बस वासव अमरपुर, शचि जयंत समेत।

राम, सीता, लक्ष्मण—उपमेय सहित—साधारण धर्म, इंद्र शचि जयंत—उपमान जिमि—उपमा वाचक शब्द है।

एक अन्य उदाहरण देखिए :—

लघु तरणि हँसिनी-सी सुंदर, तिर रही खोल पालों के पर।

यहाँ लघु तरणि (छोटी नौका) उपमेय की हँसिनी उपमान से तुलना की गई है। 'सी' वाचक शब्द है और सुंदर समान धर्म है।

रूपक अलंकार

'रूपक' अलंकार वहाँ होता है जहाँ उपमेय पर उपमान का आरोप करते हुए दोनों में अभेद बताया जाए। 'उपमा' की तरह 'रूपक' में उपमेय तथा उपमान दोनों का अलग-अलग उल्लेख होता है, परंतु कवि दोनों को अलग-अलग कहकर भी उनमें अभेद या एकता बताता है, जैसे—

चरण-कमल बंदौ हरि राई।

यहाँ श्रीकृष्ण के चरण उपमेय (प्रस्तुत) और कमल उपमान (अप्रस्तुत) हैं। प्रस्तुत में अप्रस्तुत अथवा चरण में कमल का आरोप है, अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

प्रसाद की इन पंक्तियों में भी रूपक का अच्छा उदाहरण देखा जा सकता है—

बाइव ज्वाला सोती थी, इस प्रणय सिंधु के तल में।
 प्यासी मछली-सी आँखें भी विकल रूप के जल में॥

इसमें आँखों में मछली का आरोप रूप में जल के आरोप का कारण है।

इसी प्रकार निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए :—

बीती विभावरी जाग री।
 अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा नागरी।

यहाँ अंबर, तारा और उषा उपमेय पर क्रमशः पनघट और नागरी उपमान का आरोपण हो रहा है।

उत्प्रेक्षा अलंकार

‘उत्प्रेक्षा’ का अर्थ कल्पना या संभावना होता है। उपमेय में उपमान की कल्पना या संभावना दिखाई जाए तो उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा अलंकार में कवि ‘मानो’, ‘मानहुँ’, ‘जानहुँ’, ‘गोया’, ‘ऐसा लगता है’, ‘सचमुच ही’ आदि शब्दों के द्वारा ‘कल्पना’ या संभावना को व्यक्त करते हैं। अतः इन शब्दों के द्वारा उत्प्रेक्षा अलंकार की पहचान की जा सकती है। इस संबंध में एक पुराने कवि ने इसके लक्षण इस प्रकार बताए हैं । ‘उपमेय भिन्न, उपमान भिन्न, फिर भी समझो एकमुख मानो है चंद्रमा, यह उत्प्रेक्षा टेक।’

उदाहरण :-

चमचमात चंचल नयन, बिच घूँघट-पट झीन।
मानहुँ सुर सरिता विमल जल उछरत जुग मीन॥

बिहारी के इस दोहे में घूँघट के झीने (पतले) पट में चमचमाते चंचल नयनों (आँखों) के लिए कहा गया है कि मानो वे गंगा के स्वच्छ जल में उछलती हुई दो मछलियाँ हैं। इस संभावना या कल्पना के कारण यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है। नायिका के नयन यहाँ उपमेय और मछली उपमान है।

दूसरा उदाहरण देखिए :-

रहिमन पुतरी स्याम, मनहु जलज मधुकर लसै।

यहाँ श्याम पुतली (उपमेय – आँख की काली पुतली) में जलज मधुकर (कमल पर बैठा भौरा-उपमान) की संभावना की गई है ‘मनहु’ वाचक शब्द है, अतएव यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

रामचरितमानस की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए :-

अति कटु वचन कहति कैकेयी मानहु लोन जरे पै देई।

यहाँ ‘कटु वचन’ उपमेय में ‘लोन’ उपमान की संभावना किए जाने से उत्प्रेक्षा अलंकार है। इसी प्रकार बिहारी की निम्नलिखित पंक्तियाँ उत्प्रेक्षा अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं :-

सोहत ओढ़े पीत पट श्याम सलोने गात।

मनो नीलमणि सैल पर आतप परयो प्रभात।

यहाँ ‘श्याम’ उपमेय में ‘सैल’ उपमान की संभावना की जा रही है।

1.2 रस

यहाँ यह जान लेना उचित होगा कि साहित्य में रस क्या होता है ? सभी साहित्य पढ़ने वाले यह बात मानते हैं कि साहित्य पढ़ने से पाठक को आनंद का अनुभव होता है। परंतु यह आनंद वैसा नहीं होता जैसा संसार की दूसरी भौतिक वस्तुओं से मिलता है। साहित्य पढ़ने या सुनने, नाटक या सिनेमा देखने से जो आनंद मिलता है उसे साहित्य शास्त्र में ‘रस’ कहते हैं। यह आनंद व्यक्तिगत राग-द्वेष से रहित होता है। सांसारिक प्रेम में प्रेमी जब प्रेम करता है तो वह दुखी होता है या क्रोध करता है क्योंकि इस प्रेम, दुख या क्रोध में प्रेमी का किसी से कोई न कोई व्यक्तिगत संबंध होता है। परंतु काव्य को पढ़कर या सुनकर या नाटक में अभिनय को देखकर यदि हमें प्रेम, दुख और क्रोध की अनुभूति होती है तो उसमें हमारा या प्रेमी का अपना स्वार्थ, राग या द्वेष नहीं होता। इस प्रकार साहित्य के इस

अनुभव में हमारी संकीर्णता समाप्त हो जाती है और तब हम उस साहित्य का आनंद ले सकते हैं जो सबके लिए है। प्राचीन आचार्यों ने इसकी तुलना योगियों की समाधि के अनुभव या ब्रह्मानंद से की है।

रस के अवयव

रस के चार अवयव हैं। ये हैं :-

1. स्थायीभाव, 2 विभाव, 3. अनुभाव, 4. संचारीभाव।

(1) स्थायीभाव

स्थायीभाव उन संस्कारों या भावों को कहते हैं जो मनुष्य में जन्म से ही सहज रूप में रहते हैं, जैसे मनुष्य के चित्त में प्रेम, करुणा, दुख, क्रोध, आश्चर्य, उत्साह के भाव हमेशा रहते हैं। इसी तरह साहित्य में भी ये भाव हमें दिखाई देते हैं। इन्हें स्थायीभाव कहा जाता है।

स्थायीभाव दस हैं - रति (स्त्री-पुरुष का प्रेम), हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, घृणा, विस्मय (आश्चर्य), निर्वेद (वैराग्य या शांति) और स्नेह (बाल प्रेम) (अपने से छोटी से प्रेम)।

इन स्थायीभावों के आधार पर ही काव्य में दस रस माने जाते हैं - शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत और वात्सल्य।

(2) विभाव

स्थायीभाव को उत्पन्न करने में जो कारण होते हैं उन्हें विभाव कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं :-

(i) आलंबन विभाव (ii) उद्दीपन विभाव

(i) आलंबन विभाव : आलंबन विभाव वह व्यक्ति या पात्र होता है जिसके सहारे स्थायीभाव उत्पन्न होता है।

(ii) उद्दीपन विभाव : पाठक या दर्शक के मन में उठने वाले 'स्थायीभाव' को जो तत्व बढ़ाते या उकसाते हैं उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं। ये दो प्रकार के हैं। जैसे—शृंगार रस के उदाहरण में एक तो जिससे नायक प्रेम करता है उसकी शारीरिक चेष्टाएँ या हावभाव नायक के मन में रतिभाव को बढ़ाते हैं और दूसरा आसपास का सुंदर वातावरण, चाँदनी रात आदि नायक के रतिभाव को तीव्र करने में सहायक होते हैं।

(3) अनुभाव : स्थायीभाव के उत्पन्न होने के बाद जो भाव उत्पन्न होते हैं उन्हें अनुभाव कहा जाता है। ये अनुभाव उस व्यक्ति (नायक, प्रेमी) में उत्पन्न होते हैं जो स्थायीभाव का आश्रय है। आश्रय की बाहरी चेष्टाओं को अनुभाव कह सकते हैं। जैसे—किसी को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाना, कँपकँपी छूटना, पसीना आना आदि।

(4) संचारीभाव : स्थायीभाव के साथ आते-जाते रहने वाले भावों को संचारीभाव कहते हैं। संचारीभाव तीस हैं, जैसे—चिंता, आलस्य, शंका, लज्जा, चपलता, हर्ष-विषाद, गर्व, उत्सुकता आदि।

रस, स्थायीभाव और संचारीभाव के संबंधों को इस प्रकार दिखाया जा सकता है :-

रस	स्थायीभाव	संचारीभाव
शृंगार	रति	स्मृति, चिंता, हर्ष, मोह आदि
हास्य	हास	हर्ष, चपलता आदि
करुण	शोक	ग्लानि, शंका, चिंता, दीनता आदि
वीभत्स	जुगुप्सा	दीनता, निर्वेद, ग्लानि आदि
भयानक	भय	त्रास, ग्लानि, शंका, चिंता आदि।
रौद्र	क्रोध	उग्रता, शंका, स्मृति आदि
वीर	उत्साह	आवेश, हर्ष, गर्व आदि
अद्भुत	विस्मय	हर्ष, स्मृति, शंका आदि
शांत	निर्वेद (वैराग्य)	धृति, स्मृति आदि
वत्सल	वात्सल्य	धृति, स्मृति आदि।

यहाँ हम तीन प्रमुख रसों के बारे में जानेंगे :-

शृंगार रस

नायक-नायिका (स्त्री-पुरुष) के पारस्परिक प्रेम (मिलन या विरह) के वर्णन से हृदय में उत्पन्न होने वाले आनंद को शृंगार रस कहते हैं। इसका स्थायीभाव रति है। शृंगार रस के संयोग और वियोग दो भेद होते हैं। उदाहरण देखें—

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करे, भौहनि हँसे, दैन कहै नट जाय॥

इस उदाहरण में संयोग शृंगार है। इसमें प्रेमी आश्रय है, प्रेमिका विषय (आलंबन)। प्रेमिका की सुंदरता उद्दीपन है। मोह आदि संचारीभाव हैं। इनसे यहाँ रति (प्रेम) स्थायीभाव प्रकट होता है जिससे संयोग शृंगार रस उत्पन्न होता है।

मधुवन तुम क्यों रहत हरे,
विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे ?

यहाँ श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर ब्रज के लोगों में उनके विरह के कारण वियोग शृंगार रस उत्पन्न हो रहा है। यहाँ आलंबन (श्रीकृष्ण), गोपियाँ (आश्रय) हैं। दुर्बल होना, आँसू बहाना, अनुभाव तथा दैन्य स्मृति विषाद, चिंता आदि संचारीभाव हैं।

शृंगार रस के कुछ अन्य उदाहरण देखिए—

हे खगमृग, हे मुधकर श्रेणी,
तुम देखी सीता मृगनयनी।

निसदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस ऋतु हम पै, जब तैं स्याम सिधारे।

वीर रस

दीनों की दुर्दशा देखकर उनका उद्धार करने तथा शत्रु के उत्कर्ष को मिटाने आदि में जो उत्साह, कर्म-क्षेत्र में प्रवृत्त करता है, वह वीर रस कहलाता है। इसका स्थायीभाव उत्साह है।

मैं सत्य कहता हूँ सखे। सुकुमार मत जानो मुझे

यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे।

यह अभिमन्यु का सारथी के प्रति कथन है। यहाँ पर कौरव आलंबन, अभिमन्यु आश्रय, चक्रव्यूह उद्दीपन, अभिमन्यु के वाक्य अनुभाव और गर्व, हर्ष आदि संचारीभाव हैं।

वीर रस का उदाहरण देखिए—

जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं॥

काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी॥

तप प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाक पुराना॥

हास्य रस

किसी व्यक्ति या वस्तु की बिगड़ी हुई, भद्दी या कुरूप आकृति, विचित्र वेशभूषा, बातचीत का ढंग या चेष्टाएँ, आभूषण आदि को देखकर मन में जो विनोद का भाव पैदा होता है उस भाव को 'हास्य रस' कहते हैं।

उदाहरण—

दौड़-धूप में क्या रक्खा आराम करो आराम करो।

आराम जिंदगी की कुंजी इससे न तपेदिक होती है।

आराम सुधा की एक बूँद, तन का दुबलापन खोती है।

आराम शब्द में राम छिपा, जो सब बंधन को खोता है।

आराम शब्द का ज्ञाता तो बिरला ही योगी होता है।

इसलिए तुम्हें समझाता हूँ मेरे अनुभव से काम करो।

आराम करो आराम करो॥

—गोपाल प्रसाद 'व्यास'

यह कविता एक आलसी आदमी द्वारा कही गई है। इससे हास्य रस की सृष्टि होती है।

1.3 छंद

सामान्यतः पद्य की रचना यति, गति और लय के कारण छंद में होती है। छंद के कारण ही रचना का पाठ करते समय हम लय या प्रवाह का अनुभव करते हैं।

छंद दो प्रकार के होते हैं—मात्रिक और वर्णिक। जो छंद नियत मात्राओं से बनते हैं, वे मात्रिक और जो छंद वर्णों की नियत संख्या से बनते हैं, वे वर्णिक छंद होते हैं।

यति : यति का अर्थ रुकना है। कविता पढ़ते समय कुछ निर्धारित स्थलों पर रुकना आवश्यक होता है। यह छंद के प्रवाह या लय को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है।

गति : गति यति का विलोम होती है। जहाँ यति नहीं होती वहाँ बिना रुके छंद का पाठ करना होता है।

लय : गति और यति के समन्वय से छंद में जो गुण आता है, उसे लय कहते हैं। लय के कारण ही कविता का पाठ या गायन आकर्षक हो जाता है।

चरण : प्रत्येक छंद में चार भाग होते हैं जिन्हें चरण या पाद कहते हैं।

मात्रा : किसी भी वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय मात्रा है। ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है वह एक मात्रा और दीर्घ वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय दो मात्रा का होता है। जैसे 'क' में एक मात्रा है और 'का' में दो मात्राएँ।

छंद के बारे में वर्णों को ह्रस्व और दीर्घ न कहकर लघु और गुरु कहते हैं। लघु के लिए चिह्न खड़ी पाई (l) का तथा गुरु के लिए अवग्रह जो अंग्रेजी के 'S' के समान होता है, चिह्न का प्रयोग होता है।

दोहा

'दोहा' छंद में चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दोहे के दूसरे और चौथे चरण में तुक होती है, जब कि पहले और तीसरे में तुक नहीं होती। जैसे :-

पहला और तीसरा चरण - 13 मात्राएँ

l l l l S l l l l S

रहिमन वे नर मर चुके,

l l S l l S S l S

उनतें पहले वे मुए,

दूसरा और चौथा चरण - 11 मात्राएँ

S l l S l l S l

जे कहूँ माँगन जाहिं = 13+11 मात्राएँ

l l l l l l l S l

जिन मुख निकसत नाहिं = 13+11 मात्राएँ

दोहा छंद के अन्य उदाहरण देखिए :-

माला फेरत जुग गया, गया न मनका फेर।

करका मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥

रहिमन चुप हवै बैठिए, देखि दिनन को फेर।

जब नीके दिन आई हैं, बनत न लगि है देर॥

मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक।

पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥

सोरठा

यह भी मात्रिक छंद है। इसे दोहे का उलटा कहा जा सकता है। इसके दूसरे और चौथे चरण में 13-13 और पहले और तीसरे में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दोहे के विपरीत सोरठे के पहले और तीसरे चरण में तुक होती है, दूसरे और चौथे चरण में तुक रहना आवश्यक नहीं। जैसे :-

SS II II SI IS SI II SI II

बंदौ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि =11+13 मात्राएँ

IS SI II SI SI III IIII IIII

महा मोह तम पुंज, जासु बचन रविकर निकर। =11-13 मात्राएँ

अन्य उदाहरण देखिए :-

जोहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवर बदन।
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

लिखकर लोहित लेख, डूब गया दिनमणि अहा।
व्योम सिंधु सखि देख, तारक बुदबुद दे रहा॥

चौपाई

चौपाई भी मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। चौपाई के दो चरणों को अर्धाली कहा जाता है। इसमें तुक का निर्वाह किया जाता है। जैसे :-

S II III SI II SS

देखन नगरु भूप सुत आए। = 16 मात्राएँ

ISSI IISII SS

समाचार पुरबासिन्ह पाए। =16 मात्राएँ

SS SI SI II SS

धाए धाम काम सब त्यागी। = 16 मात्राएँ

III SI II SII SS

मनहुँ रंक निधि लूटन लागी। = 16 मात्राएँ

अन्य उदाहरण देखिए :-

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।
बंदहुँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
अमिय मूरिमय चूरन चारु। समन सकल भवरुज परिवारु॥

1.4 शब्द शक्ति

किसी उक्ति में शब्द और अर्थ दोनों का महत्व होता है। साहित्य में अर्थ से रहित शब्द की कल्पना नहीं की जा सकती। शब्द और अर्थ दोनों एक-दूसरे से मिले रहते हैं। हम शब्द शक्ति को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं—“शब्द की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा शब्द के किसी अर्थ का ज्ञान होता है उसे शब्द शक्ति कहते हैं।”

आचार्यों ने अर्थ के तीन भेद माने हैं, ये हैं – वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य। इस आधार पर शब्द भी तीन प्रकार के होते हैं—वाचक, लक्षक और व्यंजक। ये तीन प्रकार के अर्थ जिसे व्यक्त करते हैं, ये हैं—वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ। इस प्रकार का अर्थ बोध कराने वाली निम्नलिखित तीन शब्द शक्तियाँ हैं।

(1) अभिधा

जिस शब्द की शक्ति के कारण किसी शब्द का सामान्य प्रचलित मुख्य अर्थ समझ में आता है, उसे अभिधा शक्ति कहते हैं। अर्थात् कोश में दिए शब्द का अर्थ अभिधा कहलाता है। जैसे,

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे
इलाहाबाद के पथ पर।

यह अभिधा का उदाहरण है। यहाँ कवि ने कविता में सीधा-सादा अर्थ व्यक्त किया है।

एक और उदाहरण देखिए—

चलो चलो इस अमलतास के फूल न तोड़ो।
ठीक नहीं यह, इस रसाल की ममता छोड़ो॥

— मृण्मयी (सियारामशरण गुप्त)

यहाँ सभी शब्दों के अर्थ कोशीय अर्थ के द्वारा स्पष्ट हो जाते हैं।

(2) लक्षणा

वाक्य में किसी शब्द का मुख्य अर्थ न लेकर उसके लक्षणों से संबंधित अर्थ को लक्षणा कहते हैं। इस अर्थ को अपनाने का कारण कोई रूढ़ि या प्रयोजन हो सकता है। जैसे वह व्यक्ति 'राजा हरिश्चंद्र' नहीं है। 'लक्षणा' से इसका अर्थ सत्यवादी होता है। यही वाक्य का सही अर्थ होगा।

(3) व्यंजना

कभी-कभी अभिधा या लक्षणा से वाक्य का अपेक्षित अर्थ स्पष्ट नहीं होता। ऐसे में जिस शक्ति से अपेक्षित अर्थ तक पहुँचा जाता है, उसे व्यंजना कहते हैं। अर्थात् जिस शक्ति से व्यंग्यार्थ पता चलता है उसे व्यंजना कहते हैं।

जैसे—

चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।

यहाँ 'चलती चक्की' को देखकर कबीर नहीं रोते, बल्कि इससे यह अर्थ निकलता है कि संसार चक्की के समान है, जिसके जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटों के बीच आदमी पिसता रहता है। यही देखकर कबीर दुखी होते हैं। एक अन्य उदाहरण देखिए—

नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन।
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन॥

— कामायनी (प्रसाद)

यहाँ 'प्रधानता' शब्द पर व्यंग्यार्थ आश्रित है, जो वहाँ पंचतत्त्वों, जल, पवन, अग्नि (उल्का), पृथ्वी और आकाश के विद्यमान होने पर भी सब ओर जल ही जल की व्यंजना दर्शाता है। वहाँ सर्वत्र जल-तत्त्व का ही प्रलयकारी बाहुल्य प्रकट हो रहा है।